प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा
काशी

मुद्रक
गोपाल प्रेस
काशी

विषय-सूची

श्रृंगारलहरी

आवै इठलात नंद-महर-लड़ैतौ लखि,
पग-पग भाइ-भीर अटकति आवै है।
रूप-रस-माती चारु चपल चितौनि कुल,
गैल गहिवे कौं हठि हटकति आवै है॥
अवनि-अकास-मध्य पूरि दिग-छोरनि लौं,
छहरि छबीली छटा छटकति आवै है।
मटकत आवै मंजु मोर कौ मुकुट माथैं,
बदन सलोनी लट लटकति आवै है॥ १॥

आए अवधेस के कुमार सुकुमार चारु,
मंजु मिथिला की दिव्य देखन निकाई हैं।
सुनि रमनी-गन रसीली चहुँ ओरनि तैं,
झौरनि की झौर दौरि दौरि उमगाई हैं॥
तिनके अनोखे-अनिमेप-दृग पाँतिनि पै,
उपमा तिहूँ पुर की ललकि लुभाई हैं।
उन्नत अटारिनि पै खिरकी-दुवारिनि पै,
मानौ कंज-पुंजनि की तोरन तनाई हैं॥ २॥

अब न हमारौ मन मानत मनाएँ नैकु,
टेक करि बापुरौ बिबेक नखि लेन देहु।
कहै रतनाकर सुधाकर-सुधा कौं धाइ,
तृषित चकोरनि अघाइ चखि लेन देहु॥
संक गुरु लोगनि के बंक तकिबे की तजि,
अंक भरि सिगरौ कलंक सखि लेन देहु।
लाज कुल-कानि के समाज पर गाज गेरि,
आज ब्रजराज की लुनाई लखि लेन देहु॥ ३॥

सो तौ करै कलित प्रकास कला सोरस लौं,
यामैं बास ललित कलानि चौगुनी कौ है।
कहै रतनाकर सुधाकर कहावै वह,
याहि लखैं लगत सुधा कौ स्वाद फीकौ है॥
रसना सुधारि औ बिरसता बिचारि नीकैं,
ताहि उर धारि जो बिसद ब्रज-टीकौ है।
नाक चाँदनी कौ नीकौ नायक निहारि कहौ,
चाँदनी कौ नीकौ कै हमारौ चाँद नीकौ है॥ ४॥

गोरी नै चितौनि चहुँ ओरनि निहोरनि सौं,
आई बन बाल ज्यौं तरंग छबि-बारी की।
कहै रतनाकर छिकानि पर पैठत ही,
बिरद बनाई कुंज मालती निवारी की॥
सौं हैं लखि अधर दबाए मुसुकानि मंद,
सोरनि मदन-मन-मोहिनी बिहारी की।
लोचन लचाइ रही सोचनि लजौ सी चकि,
मृगनि सुरति करि पञ्चन हारी की॥ ५॥

चंचल चारु सलोनी तिया इक, राधिका कैं ढिग आइ अजानी।
दै कर कागद एक कह्यौ वस, रीझिवौ मोल है याकौ सयानी॥
चित्र तैं दीठि चितेरिनि ओर, चितेरिनि तैं पुनि चित्र पै आनी।
चित्र समेत चितेरिनि मोल लै, आपु चितेरिनि-हाथ विकानी॥६॥

आजु हौं गई ती नंदलाल वृषभानु-भौन,
सुधि ना तहाँ की बुधि नैकुँ चहरति है।
कहै रतनाकर विलोकि राधिका कौ रूप,
सुखमा रती की ना रतीकु ठहरति है॥
मंद मुसुकानि के अमंद दुति-दामनि की,
छिति लौं अटा सौं छटा छूटि छहरति है।
पवन-प्रसंग अंग-रंग की तरंगनि सौं,
आवी चीर चटकि गुलावी लहरति है॥७॥

आँगन मैं अंगना अन्हाइ अनगाति लट,
लटपट लौटै पट पटल खवा परे।
सौंहैं लखि औचक हँसौंहैं नंदनंदन कौं,
झझकि सकुचो मुरि मंजु मुखा परे॥
कूलनि पै अमल अमोल कनमूलनि के,
लोल कनफूलनि के झहरि झवा परे।
कंधनि पै ढहरि सहरि पुनि पीठि केस,
लहरि लचीली लंक छहरि छवा परे॥८॥

आवत निहारे हौं गुपाल एक वाल जाकी,
लाग्यौ उपमा मैं कवि कोविद समाज है।
तरुन दिनेस दिव्य अरुन अमोल पाय,
छीन कटि केहरि औ गति गजराज है

संभु कुच मुख पदमाकर दिमाक देव,
तापै घनआनँद घनेरौ कच-साज है।
छबि की तरंग रतनाकर है अंग मुस-
कानि रस-खानि बानि आलम निवाज है॥ ९॥

फूलनि की सेज तैं सुगंध सुखमा सी उठी,
प्रात अँगिरात गात आरस-गहर है।
कहै रतनाकर बिभावरी बिलासनि की,
सुधि सौं सलोने अंग-अंग थरहर है॥
सुघर मराटे परे पट पचतोरिया पै,
उमगति फूटि छबि-छाव की फहर है॥
रतनि सुरंग संग मोतिनि की स्रेनी खुली,
बेनी पर तरल त्रिबेनी की लहर है॥ १०॥

छीर-फेन कैसी फबी अमल अटारी पर,
आई सुकुमारी प्रान-प्यारी नँद-नंद की।
मानौं रतनाकर-तरंग-तुंग-शृंग पर,
सुखमा सुहाई लसै कमला सुछंद की॥
जैसैं दीप-दीपनि पै दीप मनि-दीपति है,
दीपमनि पै ज्यौं दुति दामिनि अमंद की।
निखिल नछत्रनि पै चंद की प्रभा है जिमि,
चंद की प्रभा पै त्यौं प्रभा है मुख-चंद की॥ ११॥

सोभा-सुख-पुंज या निकुंज उमह्यौ सौ आज
ग्वाल गयौ कोउ झूमि कहत कहानी सी।
सो सुनि ललकि जाइ ज्यौं उन बिलोकी एक,
बाल मनमथ-मन-मथन-मथानी सी॥

ख्याल परी ग्वाल की सुढाल मृदु मूरति सो,
रस - रतनाकर - तरंग उमगानी सी।
विहँसि विलोकि लाल लोल ललचाने घुरि,
मुरि मुसकाइ सो सकोच-सरसानी सी ॥ १२ ॥

जगर मगर ज्योति जागति जवाहिर की,
पाइ प्रतिबिंब-ओप आनन-उजारी की ।
छबि रतनाकर की तरल तरंगनि पै,
मानौ जगाजोति होति स्वच्छ सुधाधारी की ॥
संग मैं सखी-गन के जोवन - उमंग-भरी,
निरखति सोभा हाट बाट की तयारी की।
जित जित जाति वृखभानु की दुलारी फबी,
तित तित जाति दबी दीपति दिवारी की ॥१३॥

जरद चमेली चारु चंपक पै ओप देति,
डोलति नवेली हुती सदन-बगीची मैँ।
कहै रतनाकर सुदुति सुखमा की जाकी,
दमकि रही है दिव्य पूरब प्रतीची मैँ ॥
भुज भरि लीनी रसदानि आनि औचक हीँ,
लरजि लरजि परी बाम खींचा खीची मैँ।
हिरकि रही है स्याम अंक मैँ ससंक मनौ,
थिरकि रही है बिज्जु बादर-दरीची मैँ ॥१४॥

आज उहिँ बाग कौ न भाग है सराह्यौ जात,
हौसलौ हिरात द्वै हजार - जीह - धारी कौ।
ह्याँ तौ गई औचक ही भौचक बिलोकि भई,
बानक अनूप रंग रूप रुचिकारी कौ

संग ना सहेली जासौं बूझैं कछु जान्यौ जाइ,
भाग भर्‌यौ भारी नाम गाम सुकुमारी कौ।
जाकौ वृषभानु-सुता प्रगट प्रभाव पेखि,
मंद करै चंदहिं अमंद मुख प्यारी कौ ॥१५॥

सोई सुख-सोई केलि-मंदिर-अटारी बाल,
छवि की छटारी छिति छूटि छहरति है।
मोदनि प्रसंग सौं उमंगि अंग आनन पै,
रूप - रतनाकर - तरंग लहरति है॥
भाप के लगे तैं सियराइ रंग औरै पाइ,
चारु मुख-चंद यौं बुलाक फहरति है।
पिय-परिरंभ पाइ रोहिनि रसीली मनौ,
पुलकि पसीजि रस भीजि थहरति है॥१६॥

मानिक-मंदिर मोतिनि की चिकैं, ठाढ़ी तहाँ गुन रूप की खानी।
लाज की लाल उठाइ उरोज तैं, ह्वै सकुचावन मैं अकुलानी॥
[illegible] सोहति जाति जवान पै, आवति यौं उपमा उमगानी।
× × × उतारन संभु पै आरति बानी॥१७॥

[illegible] तरवा - तरनी - किरनावली, सोभा-सुधाकर मैं छबि छावै।
[illegible] रतनाकर [illegible] [illegible], लुनाई सबै सुठि स्वाद मैं [illegible]॥
[illegible] [illegible] गुन की सुखमा नहीं, माधुरी मैं अधरानि [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], रूप त्रिलोक की पानिप पावै॥१८॥

[illegible] [illegible] रूपानिप - तरंगनि मैं,
जगमग जोति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।
[illegible] रतनाकर [illegible] [illegible] अंग माहिं,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

रसिक-सिरोमनि सुजान मनमोहन की,
लाख-अभिलाख-भौंर-भरि हुलसति है।
अभिनव जोवन - प्रभाकर - प्रभा सौं बाल,
अरुन उदै की कंज कली सी लसति है ॥१९॥

सरसन लाग्यौ रस रंग अंग-अंगनि मैं,
पानिप तरंगनि मैं बाल बिलसति है।
कहै रतनाकर अनंग कौ प्रसंग पौन,
पाइ कंपि जाइ काँति दूनी दरसति है॥
रति-रस लंपट मलिंद मन भावन कैं,
उर अभिलाप लाख भाँति की वसति है।
परम पुनीत वैस-संधि कौ प्रभात पाइ,
अरुन उदै की कंज कली सी लसति है ॥२०॥

धरे पाइ अन्हाइवे कौं जल मैं, अँग अंग फुरैरिनि सौं थहरैं।
रतनाकर धूर-कपूर निचोल पै, लोल छटा तन की फहरैं॥
कच मेचक नीठि सँभारत हूँ, छुटि पीठि पैं यौं छवि सौं छहरैं।
मनु गंग की मंद तरंगनि पै, लहरैं जमुना-जल की लहरैं ॥ २१ ॥

अंजन बिनाहूँ मन-रंजन निहारि इन्हैं,
गंजन ह्वै खंजन-गुमान लटे जात हैं।
कहै रतनाकर बिलोकि इनकी त्यौं नोक,
पंचबान बाननि के पानी घटे जात हैं॥
स्वच्छ सुखमा की समता की हम तासौं खिले,
विविध सरोजनि सौं हौज पटे जात हैं।
रंग है री रंग तेरे नैननि सुरंग देखि,
भूलि भूलि चौकड़ी कुरंग कटे जात हैं॥२२॥

बैठे भंग छानत अनंग-अरि रंग रमे,
अंग-अंग आनँद-तरंग छवि छावै है।
कहै रतनाकर कछूक रंग ढंग औरै,
एकाएक मत्त ह्वै भुजंग दरसावै है॥
तूँबा तोरि साफी छोरि मुख विजया सौं मोरि,
जैसैं कंज-गंध पै मलिंद मंजु धावै है।
बैल पै बिराजि संग सैल-तनया लै बेगि,
कहत चले यौं कान्ह बाँसुरी बजावै है॥२३॥

जाके सुर-सबल-प्रवाह कौ झकोर-जोर,
सुर-मुनि-बृंद-धीर-कुधर ढहावै है।
कहै रतनाकर पतिब्रत-परायन की,
लाज कुल-कानि कौ करार बिनसावै है॥
कर गहि चिबुक कपोल कल चूमि चाहि,
मृदु मुसकाइ जो मयंकहिं लजावै है।
ग्वालिनि गुपाल सौं कहति इठलाइ कान्ह,
ऐसी भला कोऊ कहूँ बाँसुरी-बजावै है॥२४॥

निरखत नैंकु ह्वै अनैक मन-मोहन कौ,
करषन-मंत्र मैंड्यौ बाँसुरी-बदन तैं।
कहै रतनाकर रसीलि सुर-ग्रामनि तैं,
रागिनी रसीली राचि आँगुरी रदन तैं॥
गेहनि तैं गोपिका मरीचि-सी सुनि बैननि तैं,
देहनि तैं भागीं नाग-कन्यका सदन तैं।
अंबर तैं किन्नरी सुरंगी कल गाननि तैं,
निकसीं पदमी निकाई कै सदन तैं॥२५॥

कानि की सौति गुमान की बैरिनि, स्वैरिनि लौं गलगाजि रही है।
जीवन दै जड़ कौं रतनाकर, जीवित कौं जड़ साजि रही है॥
जोगिनि कौ हिय-नादहूँ बाद कै, आपनौ बाद हीं छाजि रही है।
लाज समाज पै गाज गिरै ब्रज-राज की बाँसुरी बाजि रही है॥२६॥

काहू मिस आजु नंद-मंदिर गुबिंद आगैं,
लेतहि तिहारौ नाम धाम रस-पूर कौ।
सुनि सकुचाइ लगे जदपि सराहन से,
देखि कला करत कपोल अति दूर कौ॥
मृगमद-बिंदु तऊ चटक दुचंद भयौ,
मंद भयौ खौर हरिचंदन कपूर कौ।
थहरन लागे कल कुंडल कपोलनि पै,
छहरन लाग्यौ सीस मुकुट मयूर कौ॥२७॥

जासौं तप्यौ जीवन जुड़ात सियरात नैन,
चैन परे जैसैं चारु चंदन चहल मैं।
कहै रतनाकर गुपाल हौं बिलोकी हाल,
ऐसी बाल होत सुख जाकी है टहल मैं॥
करत कहा हौ बैठि बट के बितान बीच,
बेगि चलौ धाइ तौ दिखाऊँ हौं सहल मैं।
ग्रीषम की भीति मनौ सीतलता आनि दुरी,
धरि कै सरीर वा उसीर के महल मैं॥२८॥

गूजरी गँवारी बसि गोकुल गुमान करै,
कान करै क्यौं न बानि मेरी चित लाइ कै।
कहै रतनाकर न रंचक रहैगौ यह,
बेगही बहैगौ बतरैबौ सतराइ कै॥

चाह भरे चाहन की चरचा चलावै कौन,
　　सेसहू न पावै कहि एतौ मुख पाइ कै।
गरब रितैहै जब चेटक-निधान कान्ह,
　　तो तन चितैहै नैकुं मुरि मुसकाइ कै ॥२९॥

बाल बन-केलि लाल देखन चलौ जू दौरि,
　　औरै और ना तौ सुख-लाँक लुनै लेत हैं।
कहै रतनाकर रुचिर-रस-रंग देखि,
　　भृंग भाँवरे दै भूरि भाग गुने लेत हैं ॥
भूलि भूलि कलित कुलंग जुरि दंग भए,
　　बानी-बीन बिसद कुरंग सुने लेन हैं।
स्रम-जल-बिंद मुख-चंद कौ अमंद पेखि,
　　लेखि सुधा-सीकर चकोर चुने लेत हैं ॥३०॥

प्रान पूरि गहब गलीचा-बनी मूरति हूँ,
　　पाइ कौ परस पाइ छरकन लागै है।
कहै रतनाकर चकोर चित्रहू कौ चाहि,
　　आनन-अमंद-चंद फरकन लागै है ॥
तन की सुबास फरिया के फबै फूलनि सौं,
　　पदुम-सुगंध-रासि ढरकन लागै है।
अधर सुधा सौं सनी बात कौ प्रसंग पाइ,
　　बेसरि-मयूर-मंजु थरकन लागै है ॥३१॥

जस-रस मधुर लुनाई रतनाकर कौ,
　　काननि मैं बरसि घटा लौं ननदी चली।
बहि तृन पात लौं सकल कुलकानि गई,
　　गुरु गिरि रोक-टोक ह्वै जिमि रदी चली ॥

लाख अभिलाष-भौंर भ्रमन गँभीर लगीं,
उमगि उमंग-बाढ़ करति बढ़ी चली।
धीरज-करार फोरि लज्जा-द्रुम तोरि बोरि,
नोकदार नैननि तैं निकसि नदी चली ॥३२॥

औचक अकेले मिले कुंज रस पुंज दोऊ,
भौचक भए औ सुधि बुधि सब ख्वै गईं।
कहै रतनाकर त्यौं बानक विचित्र बन्यौ,
चित्र की सी पलकैं सुभौंहनि मैं प्वै गईं॥
नैननि मैं नैननि के बिंब प्रतिबिंबनि सौं,
दोऊ और नैननि की पाँति बँधि द्वै गईं।
दोउनि कौं दोउनि के रूप लखिबे कौं मनौ,
चार आँख होत हीं हजार आँख ह्वै गईं ॥३३॥

लाख अभिलापनि कौ होत ही कुलाहल है,
मोकलौ न पावैं मग नैंकु निबुकाइ दै।
कहै रतनाकर झरोखनि के मोखे करि,
कूदि कढ़िबे कौ तिन्हैं बानक बनाइ दै॥
निडर निसंक बंक भौंहनि कमान तानि,
नैननि के बान द्वैक औरहूँ चलाइ दै।
तलफत त्यागि जात जुलम न ऐसौ करि,
हा हा हँसि हेरि घूमि घायनि अघाइ दै ॥३४॥

न चली कछू लालची लोचन सौँ, हठ-मोचन के चहनोई पर्‌यौ।
रतनाकर बंक-बिलोकन-बान, सहाए बिना सहनोई पर्‌यौ॥
उततैं वह गात छुवाइ चले, तब तौ प्रन कौं ढहनोई पर्‌यौ।
भरि आह कराह 'सुनौ जू सुनौ,' नँदलाल सौँ यौँ कहनोई पर्‌यौ॥३५॥

जोबन उमंग सौं चलायौ चख जो बन मैं,
सो बनि अनंग कौ निषंग सालि सालि उठै।
कहै रतनाकर सघन बरुनी की पाँति,
भाँति भाँति साँति की सनाह चालि चालि उठै॥
हँसि-भरे हुलसि निहारत निहारि उन्हैं,
घूँघट कियौ सो घट घूमि घालि घालि उठै।
बंक लखि लौटनि मैं लंक की अनोखी अति,
एरी वह लचक हिये मैं हालि हालि उठै ॥२६॥

उन्नत ललाट नैन लोलनि कपोलनि पै,
अधर अमोलनि पै ललकि लुभान्यौ जात।
ग्रीवा कल कंध भुजा उरज उतंगनि पै,
रोमराजी रंगनि पै लखि ललचान्यौ जात॥
त्रिवली तरंगनि के परत झकोरं माहिँ,
भौंर माहिँ नाभी के निरंतर भुलान्यौ जात।
कटि तट जाइ पै न पाइ कछु दाइ तहाँ,
हेरत ही हेरत सु मो मन हिरान्यौ जात ॥२७॥

संग मैं सहेलिनि के जोबन-उमंग-रली,
बाल अलबेली चली जमुना अन्हाइ कै।
कहै रतनाकर चलाई कान्ह काँकर त्यौं,
ठठकि सुजान सखियानि सौं पछाइ कै॥
दाएँ कर गागरि सँभारि झुकि बाईं ओर,
बाएँ कर-कंज नैकुँ घूँघट उठाइ कै।
दै गई हिय मैं हाय दुसह उदेग दाग,
लै गई लडैती मन मुरि मुसुकाइ कै ॥२८॥

गरी नवेली अरविंद - मुखी चोप-चढ़ी,
कढ़ी जमुना सौं जल बाहिर अन्हाइ कै।
झीनौ नीर भीनौ चीर लपट्यो सरीर माहिँ,
परत न पेखि तन-पानिप समाइ कै॥
लाल ललचौँ हैं तहाँ सौं हैं आनि ठाढ़े भए,
हेरत हँसौं हैं अंग अंगनि लुभाइ कै।
कर उर ऊरुनि दै झुकि सकुचाइ फेरि,
धार जमुना मैं धँसी मुरि मुसुकाइ कै॥३९॥

चाँदनी विलोकन कौं चौहरे अटा पै चढ़ी,
चद करेजैं भयौ कठिन कराकौ है।
कहै रतनाकर हँसौं हैं व्रजचंद हेरि,
फेरि मुख कीन्यौ बाल बीच अचरा कौ है।
संग की सहेली कह्यौ हेली! मन टोहि कछू,
जोहि कुम्हिलात रूप रुचिर हरा कौ है।
अधर-सुधाधर कौं देखति कहा हौ उतै,
देखौ यह सुधर सुधाधर धरा कौ है॥४०॥

होरी खेलिबे कौं कढ़ी केसरि कमोरी घोरि,
उमगति आनँद की तरल तरंग मैं।
कहै रतनाकर महर कौ लड़ैतौ छैल,
रोकी गैल आनि हुरिहारनि के संग मैं॥
मो तन निहारि धारि पिचकी-अधार अंक,
मारी मुसुकाइ धाइ उरज उतंग मैं।
सोई पिचकारी रँगी सारी लाल रंग माहिँ,
सोई रँगौं अँखियाँ हमारी स्याम-रंग मैं॥४१॥

देखि स्याम सुंदर कौं देखत लगाए दीठि,
पीठि फेरि प्रथम कछूक अनखाति है।
कहै रतनाकर वहुरि मुरि चाहि वंक,
संकित मृगी लौं चकि छरकि छपाति है॥
बूझति न रंच पंचसर के प्रपंच बाल,
लाल की ललक लखिबे कौं लुरियाति है।
इत उत दाव देखिबे कौं हिरकीयै रहै,
आनि खिरकी लौं फिरकी लौं फिरि जाति है॥४२॥

सूनौ निहारि बिलोकि इतै उत, रोकि लियौ मग कुंजगली कौ।
आँगुरी चूमि चितै चटकाइ, बलाइ लै भाइ बिहाइ छली कौ॥
ठोडी ठगी ठसकीली दिए कर-कंज किए अनुहार कली कौ।
चूमि कपोल बिकाइ बिलोकत, आनन श्रीवृषभानु-लली कौ॥४३॥

मंजुल मोर पखा छहरैं छवि, सौं जब ग्रीव कछू मटकावत।
नूपुर की झनकारनि पै झुकि, ग्वारनि गोधन-गीति गवावत॥
आनँद - चंद - मरीचिनि सौं, रतनाकर आनँद कौ उमगावत।
देखि सखी वह मैन लजावत, साँवरौ बेनु बजावत आवत॥४४॥

ऐंडत औ इठलात फिरौ करि, फेर कछू मग बेर लगावत।
चारिहूँ ओर चितै रतनाकर, बेनु बजावत सैन बुझावत॥
मोहिनी यौं मनमोहन सौं, इठलाइ कहै लखि नैन नवावत।
बान कछू हमहूँ तौ सुनैं इत कौं, नित कौन कौं देखन आवत॥४५॥

मान ठानि बैठ्यौ इत परम सुजान कान्ह,
भौंहैं तानि बानक बनाइ गरबीली कौ।
कहै रतनाकर बिसद उत बाँकौ बन्यौ,
बिपिन - बिहारी - बेष बानक लड़ीली कौ॥

लखि सखि आज की अनूप सुखमा कौ रूप,
रोपै रस रुचिर मिठास लौन-सीली कौ।
ललकि लचैवो लोल लोचन लला कौ इत,
मचलि मचैवौ उत राधिका रसीली कौ ॥४६॥

बीति जाति बातनि मैं सुखद सँजोग-राति
अंतर थिरात नाहिँ साँझ औ सवेरे मैँ।
कहै रतनाकर कुलिस-हिय-धारी भारी,
करत अकाज आप नास हू है हेरे मैँ॥
मिलि घनस्याम सौं तमकि जो वियोग महिँ,
चमकि चमक उपजाई उर मेरे मैँ।
ताके बदले कौ दुख दुसह विचारि आज,
गरक गई है मनौ बीजुरी अँधेरे मैँ ॥४७॥

आज बड़े भागनि मिलैंगे ब्रजराज आइ,
साज सुख-संपति के सिगरे सजाइ दै।
कहै रतनाकर हमारे अभिलाष लाख,
रजनी रँचक ताहि सजनी बढ़ाइ दै॥
ढूढ़ि कै अगस्त कौं बिनै करि बुलाइ वेगि,
कैसैँ हूँ बुझाइ ऐसौ बानक बनाइ दै।
बिंध्याचल अचल पर्यौ है चलि जातैं जाइ,
ओटि उदयाचल कौं मचल मचाइ दै ॥४८॥

मान कियौ मोहन मनीसी मन मौज मानि,
पानि जोरि हारीँ जब सखियाँ मन्यौ नहीँ।
तब बरजोरी करि नवल किसोरी भेस,
ल्याईँ केलि-भौन नैकु टेकहिँ गन्यौ नहीँ॥

प्यारी बनि प्रीतम भुजनि भरि लीन्यौ उन,
कल छल कीन्यौ बहु जात सु भन्यौ नहीँ।
प्रथम समागम सौ सबही बन्यौ पै एक,
अंक तैँ छटकि छूटि भाजत बन्यौ नहीँ ॥४९॥

दीप-मनि-दिव्य-दीप-दाम-दुति-दीपति सौँ,
दीसत न दावँ देह दीठि सौँ दुरनि की।
कहै रतनाकर अनंग-रंग मंदिर कौ,
रंग लखि दंग होतिँ अंगना सुरनि की॥
केलि-सुख-संपति कौँ दंपति सकेलि रहे,
आपै अंग आतुरी उमंग की घुरनि की।
लाजनि लजनि लाड़िली के लोल लोचन की,
वाजनि वजनिये अनूप नूपुरनि की ॥५०॥

करत कलोल केलि-मंदिर अखंड दोऊ,
सुखमा सकेलि ब्रहमंड के पुरनि की।
कहै रतनाकर मसूसै मैनका कौँ मैन,
सुनि धुनि धीमी घूँघुरुनि के घुरनि की॥
सोर सिसिकीनि की सुनत सकुचाइ जाइ,
सुरति सिराइ मंजुघोषा कौँ सुरनि की।
गंजति गुमान किन्नरी की किन्नरी कौ अरी,
बाजनि वजनि ये अनूप नूपुरनि की ॥५१॥

दीठि तुम्हैँ छ्वै छली पलट्यौ रँग, दीसत साँवरो साज सबै है।
कहै रतनाकर रावरे अंगनि, चेटक पेखि प्रतच्छ परै है॥
देति हैँ गोरस ठाढ़े रहौ उत, रार करौँ कछु हाथ न ऐहै।
साँवरे छैल छुवौगे जो मोहिँतो, गातनि मेरे गुराई न रैहै ॥५२॥

आवन भयौ है पिय प्यारे मन-भावन कौ,
सुख-सरसावन कौ जेठ की जहल मैं।
कहै रतनाकर पुताइ राख्यौ प्यारी गेह,
घोरि घनसार घनौ चंदन-चहल मैं॥
बिरह-बिथानि की कथानि के बखानन कौ,
ध्यान हूँ भुलाइ हिय-हाँस की हहल मैं।
मेटत मनोज-पीर भैंटत अधीर दोऊ,
नीर-सिंचे सुखद उसीर के महल मैं॥५३॥

ननद जिठानी सास सखिनि सयानी मध्य,
बैठी हुती बाल अलबेली जहाँ आइ कै।
कहै रतनाकर सुजान मनमोहन हूँ,
आए ललचाइ तहाँ कछु मिस ठाइ कै॥
चहत बनै न भरि लोचन दुहूँ सौं अरु,
रहत बनै न नार नैंसुक नवाइ कै।
दुरि दुरि औरनि सौं जुरि जुरि तौरनि सौं,
घुरि घुरि जात नैंन मुरि मुसुकाइ कै॥५४॥

गूँथन गुपाल बैठे बेनी बनिता की आप,
हरित लतानि कुंज माहिँ सुख पाइ कै।
कहै रतनाकर सँवारि निरवारि बार,
बार-बार बिबस बिलोकत बिकाइ कै॥
लाइ उर लेत कबौं फेरि गहि छोर लखैं,
ऐसे रही ख्याललनि मैं लालन लुभाइ कै।
कान्ह-गति जानि कै सुजान मन मोद मानि,
'करत कहा हौ?' कह्यौ मुरि मुसुकाइ कै॥५५॥

मुख चंद की चारु मरीचिनि सौं, दृग दोउनि के सियराने रहैं।
रतनाकर त्यौं मुसुकानि लजानि के, हाथनि दोऊ बिकाने रहैं॥
इनकैं रँग वै उनकैं रँग ये, रुचि सौं दिन-रैनि रँगाने रहैं।
पुलकाने रहैं मुलकाने रहैं, सुख साने रहैं हरियाने रहैं॥५६॥

बैठी बनि स्याम बाम मंजुल निकुंज-धाम,
काम हू पै तैसी.......................।
कहै रतनाकर कै लाल कौं अनूप बाल
जाकौ बिधि हूँ पै रूप ढारत बनै नहीं॥
ल्याईं तहाँ सुघर सहेली चहुँ फेर घेरि,
बिकस्यौ बिनोद सो उचारत बनै नहीं।
उत तौ बनै न अंक भरत निसंक चाहि,
बाहिं इत ढीली हू निवारत बनै नहीं॥५७॥

नाक कैं चढ़ावत पिनाक भौंह ढीली परैं,
चढ़त पिनाक भौंह नाक मुसुकाइ दै।
कहै रतनाकर त्यौं ग्रीवहूँ नवाइ लिएँ,
मुख तैं टरैं न नैन गौरव गवाइ दै॥
अनख बढ़ावत अनंग की तरंग बढ़ै,
धीरज-धरा तैं प्रन-पायहिं उठाइ दै।
रहति हियैं ही हाँस हिय की हमारे हाय,
पैयाँ परौं नैंक मान करिबौ सिखाइ दै॥५८॥

जानि इकंत भरी भुज कंत भयौ, तबहीं तहाँ आइबौ तेरौ।
नाउन लागे रिसाने से हैं कछु, देखत भौंह चढ़ाइबौ तेरौ॥
छाँड़ि दई 'सब जानतीं जान द्यौ', यौं सुनि कै सतराइबौ तेरौ।
मारिबौ पी कौ न सालत है अब, सालत सौति छुड़ाइबौ तेरौ॥५९॥

सोई फूल सूल से भए हैं सुख-मूल अबै,
ताप-भद्र चंदन अनंद-कंदही भयौ।
कहै रतनाकर जो फनि-फुतकार हुतौ,
सब-सुखसार मलयानिल वही भयौ॥
फरकि हमारे बाम अंग की फरक ही सौं,
बाम सौं सुदच्छिन प्रभाव सबही भयौ।
काल्हि ही भयौ हो बीर बिषम बिपाकर कौ,
आज सो सुधाकर सुधाकर सही भयौ॥६०॥

मान ठानि बैठी जितै सुंदरी तितै ह्वै कढ़ी,
बाम एक स्यामल सघन बन खोरी कौं।
कहै रतनाकर दिखाई दै दुरति चलि,
मुरति ठगोरी देति ठठकि किसोरी कौं॥
सो लखि अनख नखि बिलखि दबाए पाइ,
आई केलि-कुंज गहिबे कौं कान्ह चोरी कौं।
इत उत जौ लौं वह हेरन ससंक लगी,
तौ लौं अंक साँवरी निसंक भरी गोरी कौं॥६१॥

रति बिपरीति रची प्यारी मनमोहन सौं,
करि कै कलोल केलि कसक मिटाए लेति।
हिय हलकोरनि सौं झमकि झकोरनि सौं,
किंकिनी के सोरनि सौं उर उमगाए लेति॥
उच्च कुच-कोरनि सौं जुग-जंघ-जोरनि सौं,
मैन के मरोरनि सौं दुमुचि दबाए लेति।
अंग-अंग अमित अनंग की तरंग भरी,
प्रथम समागम कौ बदलौ चुकाए लेति॥६२॥

प्यारे परवीन कौं बनायौ नवला नवीन,
नायक प्रवीन बनि आप उर लाए लेति।
छल कै छबीलौ ज्यौँ ज्यौँ भरन न देत अंक,
त्यौंहीं त्यौँ निसंक भुज भरि लपटाए लेति॥
झूमि झूमि लेति सुख, चूमि चूमि लेति मुख,
दूमि दूमि ऊरुनि तैं उर तैं दबाए लेति।
पूरन प्रभाव विपरीति कौ प्रकासि प्यारी,
प्रथम समागम कौ बदलौ चुकाए लेति॥६३॥

मान ठानि सुवर सुजान सखियानि बीच,
बैठी जहाँ भीचि भाइ आनँद उमंग के।
कहै रतनाकर पधारे घनस्याम तहाँ,
सुखमा-समूह धारे कोटिक अनंग के॥
चलि चलि जात नित रोकत रुकै न नैन,
तब छै छबी छल राखन कौं रंग के।
दै दियौ हँसौंहैं हेरि घेर पट घूँघट कौ,
कै दियौ कुरंग कैद मुख मैं तुरंग के॥६४॥

चोप - चाक चढ़ि चख - नोकनि खरादे गए,
बिरह - विषाद - स्वाद - खचित लखात हैं।
लाख - अभिलाष - अनुराग - राग - रंजित हैं,
कहै रतनाकर सनेह सरसात हैं॥
कान्ह ही से पीर-हीन पीर कै परे हैं पानि,
चलि चकडोर लौं अधीर अकुलात हैं।
आस-गुन-ऐंचनि सौं विवस बिचारे प्रान,
आनि अधरानि फेरि फिरि फिरि जात हैं॥६५॥

मारै मन मारै पै न सैन मृगनैनिनि पै,
घूँटैं विप घूँटैं ना सुधाऽधर पियाली मैं।
चोप ना चढ़ावै भौंहँ-बाढ़ पै उतारि देहि,
घाट के असी पै बरु नारहिँ उताली मैं॥
विपधर काली की फनाली मैं परैं तौ परैं,
भूलि हूँ परै न कहूँ भूलि अलकाली मैं।
देहि मुख-चंदैं अनुराग मैं न मन देहि,
सादर मयंकैं बरु आदर गुलाली मैं॥६६॥

जोबन की माँगति जगाति इठलाति जाति,
अलख जगावति अनंग-प्रभुताई की।
कहै रतनाकर गुसाइनि निराली एक,
आली धरे अंगनि विभूति सुघराई की॥
भोर ही तैं हेरि फेरि पौरि पै रही है रमि,
टेरि टेरि याही धुनि आसिप सुहाई की।
चारु मुख-चंद की अमंद छवि गाढ़ी रहै,
बाढ़ी रहै अंग अंग लहर लुनाई की॥६७॥

बैठी रहौ कीने कुलकानि की कहानी कान,
कोऊ अभिमानी मान गौरव वृथा ही कौ।
कोऊ पुरजन कैं कलंक ओट कोऊ करि,
गुरुजन-संकहिँ निसंक चिलता ही कौ॥
कोऊ वेद-विहित विधाननि बनाइ आन,
कोऊ मिस आन ठानि बानक सिला ही कौ॥
जादूगर छैल की अचूक चितवनि-सेल,
झेलिबे कौं चाहियै करेजौ राधिका ही कौ॥६८॥

हारीँ हाथ जोरि, मानि मन्नत करोर हारीँ,
तोरि हारीँ तृन कै कछू तौ दया भीजियै।
जासौँ मन-भावन कौँ सुख-सरसावन कौँ,
जीवन - जुड़ावन कौँ अंक भरि लीजियै॥
आपने अठान की रह्यौ है राखि रूई कान,
करत न कानि कछू याही दुख छीजियै।
विधना सुनत काहू विधि ना हमारी हाय,
विधि ना बनति कोऊ, राम ! कहा कीजियै ॥६९॥

जब तैँ विलोक्यौ बाल लाल बन-कुंजनि मैँ,
तब तैँ अनंग की तरंग उमगति है।
कहै रतनाकर न जागति न सोवति है,
जागत औ सोवत मैँ सोवति-जगति है॥
डूबी दिन रैन रहै कान्ह-ध्यान-वारिधि मैँ,
तौहूँ विरहागिनि की दाह सौँ दगति है।
धूरि परौ एरी इहिँ नेह दईमारे पर,
जाकी लाग पाइ आग पानी मैँ लगति है॥७०॥

टेरैं हूँ न टेरै, दृग फेरैँ हूँ न फेरै दृग,
बैकल सी वा गुन उधेरति बुनति है।
कहै रतनाकर मगन मन हीँ मन मैँ,
जानै कहा आनि मन गौर कै गुनति है।
होति थिर कबहूँ छनेक फिरि एकाएक,
भाँतिनि अनेक सीस कबहूँ धुनति है।
घालि गयौ जब तैँ कन्हैया नेह कानननि मैँ,
तब तैं न नैकुं कछू काहू की सुनति है॥७१॥

हारीं करि जतन अनेक संगवारी सबै,
छन छन अंग सोई रंग गहरत है।
कहै रतनाकर न ताती बात हूँ कैं घात,
छाई चिकनाई कौ प्रभाव प्रहरत है॥
आँस-मिस नैननि तैं रस-मिस बैननि तैं,
अंगनि तैं स्वेद-कन ह्वै कै ढहरत है।
भीन्यौ पट जब तैं सनेह नटनागर कौ,
तब तैं न वीर धीर-नीर ठहरत है॥७२॥

मोहन-रूप लुनाई की खानि मैं, हौं नख तैं सिखलौं इमि सानी।
ह्वै रही लौनमई रतनाकर, सो न मिटै अब कोटि कहानी॥
सील की बात चलाइ चलाइ, कहा किए डारति हौ हमैं पानी।
जानि परै मम जीवन सौं हठि, हाथ ही धोइबे की अब ठानी॥७३॥

पीर सौं धीर धरात न बीर, कटाच्छ हूँ कुंतल सेल नहीं है।
ज्वाल न याकी मिटै रतनाकर, नेह कछू तिल-तेल नहीं है॥
जानत अंग जो झेलत है यह, रंग गुलाल की झेल नहीं है।
थाम्हैं थमैं न बहैं अँसुवा यह, रोइबौ है हँसी-खेल नहीं है॥७४॥

चातक चहत ज्यौं रहत स्वातिबुंद ही कौं,
मानसर हू कौ मन मान ना धरत है।
कहै रतनाकर मलिंद मकरंद त्यागि,
कंद-रस हू सौं न अनंद उधरत है॥
भीषम पितामह की अमित अनोखी प्यास,
जैसैं बीर पारथ कौ तीर ही हरत है।
जाहि परयौ चसकौ कटाच्छ-असि-पानिप कौ,
त्यौं हीं सो सुधाहू कौ सवाद निदरत है॥७५॥

जमुना सनान कै सुजान रस-खानि चली,
अंग-रंग बसन सुरंग चालि चालि उठै ॥
कहै रतनाकर उठाइ पट घूँघट कौ,
चितई चपल सो चितौनि सालि सालि उठै ॥
साँप लै खिलौने कौ खिलंदरी सहेली एक,
औचक दिखायौ फन जाकौ फालि फालि उठै ।
उझकि झपाक झुकि झझकि हटी सो बाल,
एरी वह लचक हिये मैं हालि हालि उठै ॥७६॥

सबही बिधि रावरौ होइ चुक्यौ, तऊ चूर न कीजै परेखन हीं ।
रतनाकर रावरे ही हित की, कहैं स्वारथ कौ चित लेस नहीं ॥
लिए दर्पन ज्यौं कर माहिँ रहै, कोऊ आप रहै पुनि दर्पन हीं ।
निज रूप लुभाने सदा तुम यौं, मन लै हू रहौ पै बसौ मन हीं ॥७७॥

धन धारत चोरी कौ चोर चुराई कै, त्रासनि राखत पास नहीं ।
रतनाकर पै यह रीति महा, बिपरीत ढिठाई की भाजन हीं ॥
कहौ कौन के आगैं पुकार करैं, जब न्यावहूँ रावरैं आनन हीं ।
यह चोरी नहीं बरजोरी हहा, मन लै हू रहौ पै बसौ मन हीं ॥७८॥

ज्वालनि के जाल है बगारत चहूँघाँ हठि,
जारत जो जीव हाय बिरह-दुखारी कौ ।
कहै रतनाकर न धीर उर आन्यौ जात,
भेद न बखान्यौ जात बेदन हमारी कौ ॥
ऐसौ कछु बानक बनाइ बिनती कै जाइ,
जासौं सियराइ आप दाप ताप-कारी कौ ।
मग्न अनंद छाइ सब दुख-दंद हरै,
मंद करै चंदहिं अमंद मुख प्यारी कौ ॥७९॥

खेलौ हँसौ जाइ कै सहेली तुम कुंजनि मैं,
हाँसी खेल छोड़ि मौन कौन अभिलाष्यौ है।
कहै रतनाकर रुचै सो कहो जाइ उतै,
प्रेम कौ पियालौ माप राख करि चाष्यौ है॥
जानति नहीं हौ डर आनति नहीं हौ पीर,
मानति नहीं हौ बीर लाख बार भाष्यौ है।
बात-बल सौं ना जाइ ध्यान-पट टूटि हाय,
सोर ना करौ री चित-चोर मूँदि राख्यौ है॥८०॥

दीन बिरहीनि की दुसह दुखदाई दसा,
दीसति अनोखी अति जाति न कछू भनी।
कहै रतनाकर न रंचक हूँ चैन परै,
मैन परै पैंडैं लिए पंचबान की अनी॥
राति हूँ न चंद-बती-मन-मुरझानि जाति,
दिन हूँ दिखाति ठिठुरानि हिय मैं ठनी।
घाम सुधा-धाम कुमुदिनि पै बगारत औ,
मानो रवि कंजनि पै डारत है चाँदनी॥८१॥

आइ अठखेलिनि सौं अमित उमंग भरैं,
जिनके प्रसंग सौं तरुनि अंग थहरैं।
जीवन जुड़ावैं रस-धाम रतनाकर कौ,
मानस मैं जिनसौं तरंग मंजु ढहरैं॥
अंग लागि मेरैं बिन बाधक सुखेन सोई,
ऐसी कब भाग-पुंज होहिँ कुंज डहरैं।
दंद हरैं हीतल कौ, कौन नँद-नँद ? नाहिँ,
सीतल सुगंध मंद मारुत की लहरैं॥८२॥

तपि बिरहा मैं रसिक रसीली रही,
कहत बनै न दसा हेरि हेरि हहरैं।
सीरी साँस प्यारे तव नाम सौं रही जो बसि,
सिथिलित आइ कै हिये मैं जब सहरैं॥
तब कछु जीवन जुड़ाइ हरि जाइ ताप,
ढंग होत औरै बलि अंग अंग थहरैं।
जैसैं भानु-तापित मही-तल कौ दंद हरैं,
सीतल सुगंध मंद मारुत की लहरैं॥८३॥

आई भुजमूल दिए सुघर सहेलिनि पै,
बाग मैं अजान जानि प्रान कछु बहरैं।
कहै रतनाकर पै औरहूँ बिषाद बढ़्यौ,
याद परैं सुखद सँजोग की दुपहरैं।
धीरज जरयौ औ जिय ज्वाल अधिकानी लखि,
नीरज-निकेत स्वेत-नीर-भरी नहरैं।
दंद-मई दुसह दुचंद भईं हीतल कौं,
सीतल सुगंध मंद मारुत की लहरैं॥८४॥

नींद लै हमारी हूँ दुनींदे है सुनींदे सोए,
सुनत पुकार नाहिं परी हौं चहल मैं।
कहै रतनाकर न ऐसी परतीति हुती,
प्रीति-रीति हाय हियँ जानी ही महल मैं॥
देखत हीं आपने दृगनि हितहानी करी,
अब पछितानि परी नाहिं की टहल मैं।
तीर मैं अजान बलबीरहिं निवास दियौ,
नीर-सिंचे खसनी-उसीर के महल मैं॥८५॥

गुंजित मलिंद-पुंज सघन निकुंज जहाँ,
लूक लगै हीतल कौं सीतल सुहाई है।
कहै रतनाकर तहाँ हीं फूल लेत तोहिं,
जोहि रही कान्ह कैं अमान विकलाई है॥
आवत उतै तैं अबै नैंसुक निहारि दसा,
उर मैं हमारे तौ कसक अति आई है।
बैठे आँस ढारत सँभारत न साँस एरी,
तेरी मधुराई लगी लोचन लुनाई है॥८६॥

दृग देखत सोई दसौं दिसि मैं, रहौं वाही तरंग मैं दंग परी।
रतनाकर त्यौं रसना उहिं नाम की, माधुरी कैं रस-रंग परी॥
मुरली धुनि ही कौ सनाकौ सुनैं, यह काननि बानि कुढंग परी।
जब तैं हिय कूप मैं आनि अनूप, सखी हरि-रूप की भंग परी॥८७॥

टारि पट घूँघट कौ जबतैं निहारि घूमि,
घायल किए तैं कान्ह कालिंदी कैं कूल हैं।
कहै रतनाकर कपूर चंद चंदन हूँ,
देत ताप तब तैं अँगारनि के तूल हैं॥
तेरी गली छाँड़ि कै न जात बन-बागनि मैं,
सुखद निकुंज भए भूरि-दुख-मूल हैं।
रंग रूप रुचिर बिलोकि तव आनन कौ,
सूल लगे लागन गुलाबनि के फूल हैं॥८८॥

बैठे बन विकल बिसूरत गुपाल जहाँ,
औचक तहाँई बाल-जोगी इक आइगे।
कह्यौ रतनाकर उपाय हम ठानैं कछु,
जानैं जदि कापै आप एतिक लुभाइगे॥

ताही छन छाइगे छलक इत आँस नैन,
बैन उत आवत गरे लौं बिरुझाइगे।
पाइगे न जानैं कहा मरम दुहूँ के दुहूँ,
हँसि सकुचाइ धाइ हिय लपटाइगे ॥८९॥

तब तो हजार मनुहार कै रिझाई पर,
अब उपचार के विचार सब ख्वै गए।
कहै रतनाकर ललकि उर लैबौ कहा,
पाइ हूँ अनेकनि उपाइ सौं न छ्वै गए॥
देखन तौ वैसेई लगत पर साँची सुनौ,
सरस सनेह के सुगंध-गुन ग्वै गए।
पैठत ही प्यारे मन मुकुर हमारे हाय,
सारे रुख दाहिने तिहारे बाम ह्वै गए ॥९०॥

दीठि हमैं सीख सिखि आई सो कहाँ लौं कहौ,
सीखी सुनी नीति की प्रतीति नहिं पेखैं हम।
कहै रतनाकर रतन रूप औषध कौ,
जानत प्रभाव जो न तासौं कहा रेखैं हम॥
प्रानहू तैं प्यारी तौ प्रमानैं कुलकानि पर,
वह मुसुकानि कानि हूँ तैं प्रिय लेखैं हम।
देखी निज नाहिं तिन्हैं देखत दिखावैं कहा,
देखि कै न देखैं फेरि नैंकु तिन्हैं देखैं हम ॥९१॥

आइ समुझावति तू हाय हमकौं है कहा,
ल्याइ कै मिलाइ किन नंद-दुलरा दै तू।
कहै रतनाकर चहति आँस रोकन तौ,
याही पद-पंकज की रज कजरा दै तू॥

नाइनि तिहारे गुन गायन करौंगी नित,
पाइ परौं अंक बल-भायहिं भरा दै तू।
सोचन लगी है कहा मरति सकोचनि तौ,
हरि के हमारे एक लोचन करा दै तू ॥९२॥

देखत हमारी हूँ दसा न इठिलानि माहिं,
आपनी तौ बानि ना विलोकत अठानि मैं।
कहै रतनाकर उपाइ ना बसाइ कछू,
जासौं लखौ भाइ-भेद उभय दिसानि मैं॥
पावतौ कहूँ जौ कोऊ चतुर चितेरौ तौ,
दिखावतौ सुभाव सोधि कलित कलानि मैं।
रिझवन-आतुरी हमारी अँखियानि माहिं,
खिझवनि चातुरी तिहारी मुसकानि मैं ॥९३॥

हा हा खाइ, हाय कै, दुखी ह्वै, दूरिहीं सौं देखि,
सैनिनि मैं मंजु मूक बैन जे उचारे हैं।
कहै रतनाकर न रंच तिनकी है सुधि,
विकल हिये के भाय सकल बिसारे हैं॥
हाँ तौ रही दृग देखि निपट निरालौ ढंग,
भाव उलटे ही सब अब तुम धारे हैं।
पावत ही धाम मन-मुकुर हमारैं स्याम,
दच्छिन तैं बाम भए तेवर तिहारे हैं ॥९४॥

कीजै कहा हाय तासौं चलत उपाइ नाहिं,
पाई पीरहूँ जो पर-पीर उर आनै ना।
कहै रतनाकर रहै ही मुख मौन गेह,
कहे सुने भाव के प्रभाव भेद मानै ना॥

यौं सुनि सखी के बैन सजल लजीले नैन,
नैसुक उठाए जिन्हैं हेरन बिथा करै।
लाज काज दुहुनि दबायौ दुहूँ ओरनि सौं,
प्रान परे साँकरे न हाँ करै न ना करै॥१०२॥

जानत जान हूँ मैं बिरले कोऊ, कौन अजाननि कौ कहौ लेखौ।
है रतनाकर गूढ़ महा गति, नेह की नीकैं बिचारि कै देखौ॥
भीति मिटैं हूँ न नीति मिटै अरु, नीति मिटैं हूँ न रीति कौ रेखौ।
रीति मिटैं हूँ न प्रीति मिटै अरु, प्रीति मिटैं हूँ मिटै न परेखौ॥१०३॥

न रही वह नैंकुँ हूँ टेक भटू, यह दीन पनौ गहनोई पर्यौ।
रतनाकर मैं परि प्रेम के नेम, औ लाज हूँ कौं बहनोई पर्यौ॥
न सकी सहि पीर बियोग बिथा, तब बिह्वल ह्वै चहनोई पर्यौ।
टिर टारि कै हारि गुपाल सौं हाय, हवाल हमैं कहनोई पर्यौ॥१०४॥

सिख कौन कौं देति कहा सजनी, हमकौं बिष-बेलिही बोइबौ है।
रतनाकर त्यौं कुलकानि-प्रपंचनि, लै कलकान न होइबौ है॥
हर नींदिन कैं सो टराहिं भलैं, जिनकौं सुख नींदनि सोइबौ है।
बरजौ वृथा ढारिबे सौं अँसुवा, हमैं जीवन सौं कर धोइबौ है॥१०५॥

बीस बिसैं मानतीं कहानी काम-जारन की,
आनि बिरहीनि सौं न अब अरुझात्यौ जौ।
कहै रतनाकर जुन्हाई-ज्वाल होती सही,
तासौं और हिय कौ न घाव हरियात्यौ जौ॥
जानतीं भुजंगन कौं साँस मलयानिल कौं,
मुरछि परैं न फेरि चेत सरसात्यौ जौ।
बिष कौं बखानतीं सुधाकर कौ साँचौ बंधु,
माँगें हूँ कहूँ सौं रंच आज मिलि जात्यौ जौ॥१०६॥

लागत न नैकुँ हाय औषध उपाय कोऊ,
झूठी झार फूँक हू फकीरी परी जाति है।
कहै रतनाकर न बैरी हू बिलोकि सकैं,
ऐसी दसा माँहिं सो अहीरी परी जाति है॥
रावरौ हू नाम लिएँ नैननि उघरै नाहिं,
आह औ कराह सबै धीरी परी जाति है।
पीरी परी जाति है वियोग-आगि हू तौ अब,
विकल विहाल बाल सीरी परी जाति है॥१०७॥

मंद भईं साँसैं औ उसासैं बढ़ि बंद भईं,
दुख सुख रीति की प्रतीति दहि गई है।
कहै रतनाकर न आँसू रह्यौ नैननि मैं,
ताही संग आस-बासना हू बहि गई है॥
अब तौ उपाय कछू तुमहीं बनै तौ करौ,
चातुरी हमारी तौ सकल ढहि गई है।
लीन्हैं नाम रावरौ कछूक चौंकि चेतति ही,
सोऊ समुझन की न चेत रहि गई है॥१०८॥

धीर धरनीस के वियोग-दुखहू मैं देखि,
सोभा सुभ वैसियै सुधाकर बदन की।
सेनप बसंत के प्रवीन परिचारक जे,
पिक परिपाटी पढ़े नेह निगदन की॥
... ...
... ...।
... ...
... ...॥१०९॥

हौं तौ हुती मगन लगन-लौ लगाए हाय,
लाए उर सुरति सुजान प्रान-प्यारे की।
कहै रतनाकर पै सबद सुनाइ टेरि,
फेरि सुधि दीनी धाइ बिरह बिसारे की॥
कामिनी कौ नातौ मानि दामिनी दया कै नैंकु,
कसक मिटाइ देती मानस हमारे की।
पारि देती आज वा कलापी के गरे पै गाज,
जारि देती जीहा वा पपीहा बजमारे की॥११०॥

निकस्यौ कहूँ हौं ब्रज-गाम है सुनौ हो स्याम,
धाम धाम देखौं बाम बाम ही प्रनाली पै।
कहै रतनाकर न हौं तौ भेद पायौ कछू,
तुमहू चकैहौ चित कठिन कुचाली पै॥
कीन्हे रहैं दीठि कौं कृसानु-नीठि नादन पै,
दीन्हे रहैं पीठि चारु चंद्र-चंद्रिकाली पै॥
माने रहैं बायस कौं पायस-पियाली देन,
ताने रहैं तुपक दुनाली काकपाली पै॥१११॥

अंतक लौं बिरही जन कौं पुनि बायु बसंत की दागन लागी।
कागनि कै छिन काग की पाली नए पटगागनि रागन लागी॥
कुंजनि गुंज मधुव्रत की बिष के रस की रुचि-पागन लागी।
फूले पलास की आगनि मौं बनबाग दवाग सी लागन लागी॥११२॥

भूरि-सुगंध-भरे दिग-छोरनि कोकिल जागि सुरंग सी दागी।
बैरी बसंत बन्यौ बिन कंत कहा करिहैं अब अंत अभागी॥
हरि हरे भरे कानन मैं अनि आगि पलास की रासि सौं लागी।
और सौ चांदनी मैं सजनी अलि-भीर हलाहल घोरन लागी॥११३॥

हाल बाल परी है बिहाल नँदलाल प्यारे,
ज्वाल सी जगी है अंग देखैं दीठि जारे देति।
प्रेम लोकलाज मिलि बिरह त्रिदोष भयौ,
कहै रतनाकर सु नैन नीर ढारे देति॥
सत्तर धनत्तर से हारि रहे आनि मुख,
चंद्रोदय आखिरी इलाज है पुकारे देति।
झाँवरी भई है दुति बावरी भई है मति,
और की कहा है सुधि रावरी बिसारे देति॥११४॥

दुख कौ अहार रह्यौ वारि रह्यौ आँसनि कौ,
साँसनि कौ सब्द मूरछा की नींद कल तैं।
कहै रतनाकर पिछानै ना पिछानी जाति,
सेज मैं समानी जाति कृसता कहल तैं॥
जौ पै तुम्हैं वहम जियति कैसैं ऐसैं तोव,
कान दै सुनौ जू हौं बतावति सरल तैं।
प्रान कौं सकत अधरान लौं न आवन की,
अबला जियति लाल निर्बलता-बल तैं॥११५॥

कान्ह के प्रेम-व्यथा की कथा तुम ऊधौ जथाविधि भाषि सुनाई।
त्यौं रतनाकर आँसनि की अरु साँसनि की सब बात बताई॥
एतियै और कहौ करुना करि जातैं मिटै चित की दुचिताई।
जोग-सनेस बखानत मैं मुसकानि हूँ आनन पै कछु आई॥११६॥

हौं ही रच्यौ वैसैं हीं सुरुचि-अनुकूल चुनि,
सोई फूल फूलत जो कुंज-कल केली के।
दोस बिन हाहा रोस हम पै न कीजै बलि,
रोकी बन गैल छैल आवत अकेली के॥

नाम सुनि रावरौ विलोकन लगेई हठि,
हुलसि सराहि भूरि भाग वन-बेली के।
लागत हीँ हाथ ब्रजनाथ के नवेली यह,
हार कुम्हिलाने चारु चटक चमेली के ॥११७॥

मान कै न मानति हौ जानि कै न जानति हौ,
तुम बिन प्यारे मनमोहन दुखारे हैँ।
कहै रतनाकर न जानैँ कहा ठाने मन,
बृंदावन बीथिनि बिसूरत सिधारे हैँ॥
बाल दिखराइ कै मसाल के मिसाल दुति,
लीजियै बचाइ ठाढ़े कुंज मैँ बिचारे हैँ।
उमड़ि घुमड़ि मढ़ि आए चहुँघाँ तैँ घेरि,
मेघ मनमथ के मतंग मतवारे हैँ॥११८॥

सुलह न मानति हौ रारि बृथा ठानति हौ,
जानति हौ हाल छल-बल के निधान कौ।
कहै रतनाकर अनंग के तुरंग चढ़्यौ,
संग छबि-कटक बिजै-कर जहान कौ॥
आनि बलबीर धीर तीर बरसैहै जब,
अधर-कमान तानि बिनै-बखान कौ।
छूटि जैहै हुकुम सुभट हठहू कौ सबै,
टूटि जैहै बीर, टूटि जैहै गढ़ मान कौ॥११९॥

देख्यौ वन-गैल आज छैल छरकीलौ एक,
मैँ परयौ धीरज न धारै है।
वनमाल कहूँ,
कहूँ लुठित धुरारै है॥

काकौ कौन नैकुँ निरवारत न नीकैं बोलि,
खोलि कछु वेदन कौ भेद न उघारै है।
आँस भरि आधौ नाम राम कौ उचारै पुनि,
साँस भरि आधँ।चैन धेनु कौं पुकारै है ॥१२०॥

चसकौ परै ना मान-रस कौ कहूँधौं वाहि,
लीजै बात रंचक विचारि हित हानि की।
कहै रतनाकर तिहारे सुबरन पर,
दमक दुलारी देति तमक तवानि की॥
रोष की रुखाई रुख आवत सुसीली होति,
मंद मुसकानि लै रसीली अँखियानि की।
होत मृदु मीठे सीठे बचन तिहारे पाइ,
कंठ कोमलाई मधुराई अधरानि की ॥१२१॥

जानति न जानि कहा मान ठानि बैठी बीर,
बानि यह एरी सब भाँतिनि अनीठी है।
कहै रतनाकर प्रभाकर-उदोत होत,
तौहूँ रस-राँचति न ऐसी भई सीठी है॥
व्यापति तिन्हैं न मान मिरच तिताई नैंकु,
पावति सवाद-सुख ऐसौ कछु दीठी है।
स्याम सहतूत लौं सलूनी रस-रासि भरी,
सूधी तैं सहस्र गुनी टेढ़ी भौंह मीठी है ॥१२२॥

बिलग न मानियै त्रिहारी वर बारी वैस,
कहा भयौ जोपै अनखौंहीं करी दीठी है।
तुम रतनाकर सुजान रस-खानि वह,
निपट अयानि वासौं ठानी क्यौं अनीठी है॥

सरस सु रोचक मैं आकृति विचार कहा,
कैसें हूँ बिगारी नाहिं होनहार सीठी है।
टेढ़ी तें सहस्र गुनी सूधी भौंह मीठी अरु,
सूधी तें सहस्र गुनी टेढ़ी भौंह मीठी है॥१२३॥

एरी ब्रज-जीवन की जीवन अधार वेगि,
सहज सिंगार सौं पधारि सरवर पें।
कहै रतनाकर न बात कहिबे को समै,
ठसक उठाइ ताइ दीजै सिकहर पैं॥
लाग अनुराग की रही है इमि लागि सही,
जाति बिरहागि ना दवागि-पान-कर पें।
प्रबल बियोग-रोग निबल कियौ है इमि,
धीरज धर्यौ न जात लाल गिरिधर पैं॥१२४॥

बिनती बखानि अनगिनती न मानति हौ,
किनती सिखायौ मान करिबौ कुँवर पै।
कहै रतनाकर रिझाऐं नाहिं रीझति हौ,
खीझति हौ उलटी कपोल दिए कर पै॥
पलटि प्रभाव पर्यौ पाँचही घरी में यह,
आवत अचंभौ जाति आँगुरी अधर पै।
एरी अबला तू गुरु मान इत धारै उत,
धीरज धर्यौ न जात लाल गिरिधर पै॥१२५॥

ना हा खात द्वार पै दुखी है द्वारपालनि की,
नाइनि औ मालिनि की बिनती महा करै।
है रतनाकर कहै तौ बोलि ल्याऊ उन्हैं
बहुत भई री अब सुंदरि छमा करै॥

सुनि सखि बानी सतराइ मुसकानी बाल,
ताकि छवि ताकि कौन कवि कविता करै।
अनख अनोखी ललचानि रस-पोषी बीच,
प्रान परे साँकरैं न हाँ करै न ना करै॥ २६॥

प्यार-पगे पिय प्यारे सौं प्यारी कहा इमि कीजति मान-मरोर है।
है रतनाकर पै निसि बासर तौ छवि-पानिप कौं तरस्यौ रहै॥
है मनमोहन मोह्यौ पै तोपर है घनस्याम पै तेरो तौ मोर है।
है जगनायक चेरौ पै तेरो है है ब्रज-चंद पै तेरौ चकोर है॥१२७॥

अति अभिराम रस-धाम घनस्याम आनि,
घूमत चहूँघाँ रहैं नैकुँहू न कल मैं।
कहै रतनाकर प्रतच्छ अच्छ औरै प्रभा,
जिनके प्रभाव सौं पगी है थल थल मैं॥
ऐसैं सुभ और न सुहात मानि मेरी बात,
ताप मिटि जैहै सब एक ही त्रिपल मैं।
चलि कै निकुंज माहिं लहि सुख-पुंज बीर,
बैठी कहा करति उसीर के महल मैं॥१२८॥

ललित त्रिभंग जाके अंग कौ बनाव नीकौ,
रति के धनी कौ रंग फीकौ दरसाए देत।
कहै रतनाकर कछुक बाँसुरी जो फूँकि,
तान बनितानि हेत नावक बनाए देत॥
सोई बैठि बिकल बिसूरत निकुंज माहिं,
तोहिं रूप जोबन अनूप गरबाए देत।
अचल न रैहै यह मचल तिहारी बीर,
चल चख ताके चल अचल चलाए देत॥१२९॥

कुंजनि मैं गुंजत मलिंद मतवारे फिरैं,
विरही विचारे दुखधारे मन-मन मैं।
कहै रतनाकर रसीले घनस्याम अंक,
चाय-भरी चपला चमकैं छन-छन मैं॥
ऐसैं समै प्रीतम-वियोग-भावना हूँ भएँ,
रहत न धीर पीर पूरि तन-तन मैं।
मान कौं न मेली करि अब अलबेली देखि,
हेली लगी फूलन चमेली बन-बन मैं॥ ३६॥

कत अटवी मैं जाइ अटत अठान ठानि,
परत न जानि कौन कौतुक विचारे हैं।
कहै रतनाकर कमलदल हू सौं मंजु,
मृदुल अनूपम चरन रतनारे हैं॥
धारे उर अंतर निरंतर लड़ावैं हम,
गावैं गुन विविध विनोद मोद वारे हैं।
लागत जो कंटक तिहारे पाय प्यारे हाय,
आइ पहिलैं सो हिय वेधत हमारे हैं॥१३७॥

देखि वह होत काम-बंधु कौ उदोत बीर,
इत उत किरन कलाप छिटकावै है।
कहै रतनाकर चलति किन कुंज अवै,
सो तौ सबही कौ हटि हटकि हटावै है॥
सुनि सुभ सीख चढ़ी रथ पै मनोरथ के,
खूँद मन-मचला-तुरंग पै मचावै है।
तानै इत मान की मरोर निज ओर उत,
बेगि चलिबे कौं चंद चावुक चलावै है॥१३८॥

उठि आए कहाँ तेँ कहौ तौ सही अँखियानि मैँ नीँद घलाघल है।
रतनाकर त्यौँ अलकैँ बिथुरीँ औ कपोलनि पीक-झलाझल है॥
मधुरे अधरा लखि अंजन-लीकहिँ प्रान की होति चलाचल है।
उन हाय बिसासिनि कीनी दगा धरि कंद मैँ भेज्यौ हलाहल हैँ॥१३९॥

आए प्रभात प्रभा भरे अंगनि जीति मनौ रस-रंग-अखारौ।
बैन कह्यौ इमि भावती सैन सौँ दाग बतावति कज्जल वारौ॥
कीजत क्यौँ न परैँ पट सौँ बलि है यह भौँर भयानक कारौ।
बैठत तौ अधरा पर रावरे पै हिय बेधत हाय हमारौ॥१४०॥

जानति हौँ जैसे तुम छलके निधान कान्ह,
ताहू पर मोहिँ प्रेम-पूरन-पगे लगौ।
कहै रतनाकर कपोलनि लै पीक-लीक,
मोकौँ तुम मेरे अनुरागहिँ रँगे लगौ॥
जैसैँ दरपन मैँ दिखात उलटौई सब,
सूधौ पर जानि जात जब लखिबे लगौ।
मेरे मन मुकुर अमल स्वच्छ माहिँ त्यौँहीँ,
कपट किएँ हूँ प्यारे निपट भले लगौ॥१४१॥

अंजन अधर औ कपोल पीक-लीक लसै,
रसिक बिहारी बेस बानिक बने लगौ।
कहै रतनाकर धरत डगमग पग,
तातैँ मोहिँ मेरे ही वियोग मैँ जगे लगौ॥
जानत जगत सब तैसौही दिखात ताकौं,
जैसौ चसमौ है जब जाके चप मैँ लगौ।
नेह की निकाई छाई नैननि हमारैँ तातैँ,
कपट किएँ हूँ प्यारे निपट भले लगौ॥१४२॥

कैधौं अति दुसह दवागि की दपेट कैधौं,
बाड़व की बिषम झपेट-झर-झार है।
कहै रतनाकर दहकि दाह दारुन सौं,
उगिलत आगि कैधौं पावक-पहार है॥
रुद्र-दृग तीसरे की कैधौं विकराल ज्वाल,
फेकत फुलिंग कै फनिंद फुफुकार है।
कैधौं ऋतुराज-काज अवनि उसास लेति,
कैधौं यह ग्रीषम की भीषम लुआर है॥१४९॥

जोहि प्रतिबिंब मोहि मोहन न मोहे कहूँ,
यह मनमोहिनी करति चित चेत है।
कौन तुम सुंदरी सकारैं हीं पधारौ भौन,
कहति चितौनि सों जनाइ हिम-हेत है॥
अति सुकुमारी भूरि-भूषन सँवारी तुम,
कित धौं पधारीं इत हरि कौ निकेत है।
बरबस नारिनि कौ सरबस बानिक सो,
हेरि मन-मानिक समेत हरि लेत है॥१५०॥

होरी खेलिबे कौं रंग रुचिर कमोरी घोरी,
गोपी-ग्वाल मडल अखंड उमगान्यौ है।
कहै रतनाकर बजावत मृदंग चंग,
गावत धमार मार अंग सरसान्यौ है॥
छाई छिति धारनि अपार पिचकारिन की,
जोहि नर-नारिनि बिमोहि अनुमान्यौ है।
फाग-सुख-हाँस रोकि राखन की आस आज,
जाल अनुराग कौ बिसाल ब्रज तान्यौ है॥१५१॥

अंबर मैं बादल गुलाल कौ रह्यौ जो छाइ,
सोई ह्वै पितंबर कौ रंग करसत है।
कहै रतनाकर मुकेस बूका धूरि हूँ तैं,
पूरि चहुँ कोद रस-मोद बरसत है॥
अत्र कैं अनंग-रंगकार की कृपा सौं कछू,
परम अनोखौ यह ढंग दरसत है।
परसत जोई लाल रंग इन अंगनि मैं,
सोई स्याम रग ह्वै करेजैं सरसत है॥१५२॥

आए चहुँ ओर तैं घुमंडि घनघोर घेरि,
ठक्करनि लेत ज्यौं मतंग मतवारे हैं।
कहै रतनाकर धराधर अकास धरा,
एकमेक ह्वै कै धूमधार-रंग धारे हैं॥
कत्तड़ान कड़ान घड़ान घेड़ेन्न घेन्नडान,
धधकतान धधकतान धधकतान वारे हैं।
मनसा-महान-विस्व-विजय-विधान आनि,
बाजत ये मदन-महीप के नगारे हैं॥१५३॥

बरसन लागे मेघ मूसर-समान धार,
ब्रज पै पहार की अपार अनया चली।
कहै रतनाकर अखंडल के तोषन कौं,
लै लै ग्वाल मंडली प्रचुर पनया चली॥
हाथ जोरि हारे मानि मन्नत करोर हारे,
तोरि हारे तृन पै न नैंकु प्रनया चली।
भानु-तनया को ठहरान करि ध्यान लिए,
मुरली लुकाई वृषभानु-तनया चली॥१५४॥

रूपक कै कुच कौं कह्यौ है संभु प्राचीननि,
सोई धुनि आधुनिक धुनत हनोज हैं।
कहै रतनाकर पै कैसैं ये महेस भए,
मनसिज-मीत ताकि पावत न खोज हैं॥
नेह-न्याय-नीर मन-मानस मैं जाके,
ताकैं मँजु मुख मंडित ये बचन सरोज हैं।
ज्यौं जुग नकार प्रकृतारथ दृढ़ावत त्यौं,
जुगल उरोज-संभु ज्यावत मनोज हैं॥१५५॥

परम-प्रमोद-प्रभा-पुंज प्रतिबिंबनि तैं,
ब्रज रसधाम दाम दीपति कौ ह्वै गयौ।
कहै रतनाकर त्यौं दुख-तप-ताप-तपे,
जीवन कौ दंद छुट्यौ छेम छगुनौ छयौ॥
गोपी-ग्वाल-गैयनि के गौरव गुमान बढ़े,
सुजस सुगंध कौ सुऔसर ठयौ नयौ।
नंदराय-मंदिर अमंद उदयाचल तैं,
गोप-कुल-कुमुद-निसाकर उदै भयौ॥१५६॥

पाप-पंकजात जातुधान मुरझान लगे,
प्रफुलित गोपी-गोप-गैयनि कौं कै दयौ।
कहै रतनाकर अनन्य ब्रतधारिनि कौ,
सब दुख दंद दूरि देखत हीं ह्वै गयौ॥
दूषन बिहीन सीस-भूषन दिगंबर कौ,
जासौं छिति अंबर कौ आनँद महा छयौ।
नंद - पुन्य - पूरब - अपूरब पयोनिधि सौं,
गोप - कुल - कुमुद - निसाकर उदै भयौ॥१५७॥

जोहत अटारी पुर - द्वारी सब नारी नर,
जानि मनभावन कौ आवन-समै भयौ।
कहै रतनाकर उचाइ पग चाय चढ़े,
चपल चितौत चोप चित अतिसै भयौ॥
ताही बीच मोद की मरीचि आई आनन पै,
चारौँ ओर सोर यह सानँद सलै भयौ।
गोरज - समूह - घन - पटल उघारि वह,
गोप - कुल - कुमुद - निसाकर उदै भयौ ॥१५८॥

धुंधरित धूम-धार-धुरवा निवारि वह,
तपित - त्रिताप - ही हिमाकर उदै भयौ।
कहै रतनाकर त्यौँ जड़ता बिदारि वह,
सुरस - सुसीलता - सुधाकर उदै भयौ॥
बिरह - विषाद - तम तोम निरवारि वह,
चखनि - चकोर - चंद्रिकाकर उदै भयौ।
गोरज समूह - घन - पटल उघारि वह,
गोप - कुल - कुमुद - निसाकर उदै भयौ ॥१५९॥

तीर जमुना कैँ स्याम - सुंदर सुजान कहा,
आनँद निधान वीर बाँसुरी बजावै है।
कहै रतनाकर स्वरूप सुखमा पै नैन,
नाम - रस - रोचक पै रसना रचावै है॥
नासा मृदु बास पै सुतान - माधुरी पै कान,
परस उमंग मृदु अंग पै लुभावै है।
मानौ मन मंदिर - प्रवेस - कामना सौँ काम,
पाँचौ पौरिया कौँ आस-असाव छकावै है ॥१६०॥

साजि फेरि बसन बिभूषन अदूषन कौं,
चारु स्रक चंदन सुगंध सरसैहैं हम ।
हुलसि हिये मैं गुनि कहति गिरा यौं पुनि,
बीना-धुनि-संग राग रंग भर्यौ गैहैं हम ॥
कीन्ही करतूत जो कपूतनि अपूत ताकौ,
प्राच्छित कै धूत ह्वै बहुरि छवि छैहैं हम ।
बैठि कै रसीली रसना पै रतनाकर की,
पैठि कै उमगि गंग-धार मैं नहैहैं हम ॥ ३ ॥

बोधि बुधि बिधि के कमंडल उठावत हीं,
धाक सुरधुनि की धँसी यौं घट-घट मैं ।
कहै रतनाकर सुरासुर ससंक सबै,
बिबस बिलोकत लिखे से चित्र-पट मैं ॥
लोकपाल दौरन दसौं दिसि हहरि लागे,
हरि लागे हेरन सुपात बर बट मैं ।
खसन गिरीस लागे त्रसन नदीस लागे,
ईस लागे कसन फनीस कटि-तट मैं ॥ ४ ॥

बिधि के कमंडल तैं निकसि उमंडि धाइ,
आइ कै खमंडल मैं खल-भल डारै है ।
कहै रतनाकर पुरंदरपुरी मैं पुनि,
अति उदबेग बेग-धमक पसारै है ॥
तमकि त्रिलोक के त्रितापहिं बहाइ वेगि,
बाड़व बनाइ बरुनालय मैं पारै है ।
ताही की उतंग ज्वाल-मालनि सौं गंग फेरि,
पातक अपार के अगार जारि डारै है ॥ ५ ॥

उड़त फुहारन कौ तारन-प्रभाव पेखि,
जम हिय हारे मनौ मारे करकनि के।
चित्र ले चकित चित्रगुप्त चपि चाहि रहे,
बेधे जात मंडल अखंड अरकनि के॥
गंग-छींट छटकि परै न कहूँ आनि इतै,
दूत इमि तानत बितान तरकनि के।
भागे जित तित तैं अभागे भीति-पागे सबै,
लागे दौरि दौरि देन द्वार नरकनि के॥ ६॥

फबति फुही जो फैलि छवति अकास माहिँ,
तिनके बिलास कौ बिकास इमि भावै है।
कहै रतनाकर रतन सब ही कौ संग,
तिनके प्रसंग मैं सुढंग छबि छावै है॥
मानौ हरि राग गंग निखिल नहैयनि के,
रंग रंग रेलि मंजु मिसिल लगावै है।
पुनि सखि जमुना-पिता कौं उपहार-रूप,
करि मनुहार मनि-हार पहिरावै है॥ ७॥

संभु की जटा तैं कढ़ि चंद की छटा सी फैलि,
हिम के पटा पै प्रभा-पुंजनि पसारै है।
कहै रतनाकर सिमिटि चहुँघा तैं पुनि,
छोटे-बड़े सोतनि के गोल ह्वै ढरारै है॥
मिलि मिलि सोतनि तैं नारे बहु बेगि बनै,
धार ह्वै अपार पुनि घोर रोर पारै है।
सगर-कुमारनि के तारन कौं धावा किए,
मानहु भगीरथ कौं पुन्य ललकारै है॥ ८॥

अस्तुति-बिधान गान करत बिमान - चढ़े,
देवनि की दिव्य छटा छहरति आवै है।
कहै रतनाकर त्यौं दूरि दूरि ही तैं दुरी,
जम की जमाति हेरि हहरति आवै है॥
फहरति आवै कंदरप की पताका - रासि,
पारस - पखान - खानि ढहरति आवै है।
आगैं चले आवत भगीरथ भगाए रथ,
गंग की तरंग पाछैं लहरति आवै है॥९॥

बिधि बरदायक की सुकृति - समृद्धि-बृद्धि,
संभु सुर-नायक की सिद्ध की सुनाका है।
कहै रतनाकर त्रिलोक - सोक नासन कौं,
अतुल त्रिविक्रम के बिक्रम की साका है।
जम - भय - भारी - तम-तोम निरवारन कौं,
गंग यह रावरी तरंग तुंग राका है।
सगर - कुमारनि के तारन की स्रेनी सुभ,
भूपति भगीरथ के पुन्य की पताका है॥१०॥

दुरित दरीनि कंदरीनि कौं बिदारि बेगि,
चारौं ओर-छोर सोर अपनौ भराए देति।
कहै रतनाकर त्यौं पाप-खानि-खाड़ी आनि,
द्रोह दुरमति कलि रेलुष ढहाए देति॥
करम करारे दुख - दारिद दिना द्रुम,
देखत दरारे करि काटि भहराए देति॥
पुन्य-सील सलिल सुकृत-बर-बारी सींचि,
सुरसरि-धार फल चारिहूँ फराए देति॥११॥

दोऊ ओर राजी हैं बिसद बनराजी बर,
नंदन की सोभा सुभ जिनमैं बिराजी हैं।
कहै रतनाकर सुपाँति पसु-पच्छिनि की,
भाँति-भाँति रमति सुहाति सुख-साजी हैं॥
गंग-जल पाइ कै अघाइ बिसराइ बैर,
बिहरत महिष मतंग बाघ बाजी हैं।
नाचत मयूर मंजु फनि फुत्कारनि पै,
डारनि पै बाज औ बटेर बदैं बाजी हैं॥१२॥

परसत नीर तीर बंजुल निकुंज कहूँ,
और फल-फूल की न सूल उर ल्यावैं हैं।
कहै रतनाकर पसारे कर गंग ओर,
सुरपुर-पंथ कहूँ तरु बिखरावैं हैं॥
मृग कलहंस बली बरद मयूर सबै,
पाइ जल ग्रीवहि उचाइ मटकावैं हैं।
चंद, चतुरानन, पंचानन, षड़ानन के,
याननि के हेरि हँसि आनन बिरावैं हैं॥१३॥

करम-पहार-हार-मरम विदारति औ,
कूट-कलि कलुषति कंडति चलति है।
कहै रतनाकर उमंडति उछारि आप,
ताप पै बरुन अस्त्र छंडति चलति है॥
दारिद-दुरूह-व्यूह कठिन करारनि औ,
दुख-द्रुम-भारनि बिहंडति चलति है।
खंडति अखंड दोष-दाप-झार खंडनि कौं,
मंजु महि-मंडल कौं मंडति चलति है॥१४॥

तुम तौ अन्हाइ गंग जानत न जैहौ कहाँ,
ऐहौ फिरि फेरि ना बिरंचिहू के फेरे तैं।
कहै रतनाकर यौं पातक हमारे कहैं,
चलत तिहारी बात मात पुन्य प्रेरे तैं ॥
ऐसौ कौन और जो सँभारिहै हमारौ भार,
धारिहै चढ़ाइ सीस आदर घनेरे सौं।
छाड़ते न क्यौं हूँ संग सुखद तिहारौ पर,
चलत न चारौ गंग-गान के गरेरे सौं ॥३३॥

धाए फिरौ पापिनि कौं खोजत जहाँ हीं तहाँ,
दीसत दब्यौ सो है तिहारौ काम तारिबौ।
जोही अब लौं तौ रतनाकर तिहारी बाट,
बार ना लगावौ अब चाहौ जौ उबारिबौ ॥
नातरु निपट उकताइ ताइ तापनि सौं,
ताही दिसि ताहू कौं परैगौ पग पारिबौ।
धारिबौ उधारिबौ हुतौ जौ निज हाथ नाथ,
तौ ना गंग-धार कौं धरा पै हुतौ धारिबौ ॥३४॥

धारत ही पाइ सेससाइ पद पायौ पर,
फनि फुतकारनि मैं सनत बनै नहीं।
पीयत ही बारि रतनाकर उदार भए,
भय मथिवे कौ पर भनत बनै नहीं ॥
भरत कमंडल बिरंचि ह्वै बिराजे पर,
रचना-प्रपंच रंच तनत बनै नहीं।
मूड़ पै चढ़ी हौ जाके ताही के बिराजी रहौ,
गंगा अब न्हाइ नंगा बनत बनै नहीं ॥३५॥

लीने हरि करम सुभासुभ अटब्र सबै,
छाँड़्यौ अंब संबल औ बनिज बितानौ ना।
कहै रतनाकर मनोरथ के नासे रथ,
गथ की कहै को पास पथ-परवानौ ना॥
बात बसिबे की व्यवसायं की बतावै कौन,
आवागौन हू कौ बनि आवत बहानौ ना।
ए हो गंग जाहिं लै कहा धौं अब काहू ओक,
तीनौं लोक माहिं रह्यौ ठहर ठिकानौ ना॥३६॥

फेरै तव सेतता सियाही लेख जातक कैं,
स्नातक कैं अंग राग-रंग ह्वै जगति है।
कहै रतनाकर तिहारी मधुराई कलि-
दाँतनि की पाँतिनि खटाई ह्वै खगति है॥
सीतल सुखारौ जन-हीतल सदाई करै,
रावरे प्रताप की अमाप गूढ़ गति है।
सीत सौं तिहारे ताप-भीत जम-दूत रहैं,
आप सौं अनोखी आगि पाप मैं लगति है॥३७॥

न्हाइ गंगधार पाइ आनँद अपार जब,
करत बिचार महा महिमा बखानी कौं।
कहै रतनाकर उठति अवसेरि यहै,
बेर बेर पैयै क्यौं जनमि इहिं पानी कौं॥
पंच की कहा है करैं पातक प्रपंच सबै,
रंच हूँ डरैं न जम-जातना कहानी कौं।
सुरसरि-पंथ ओर पारत ही तौहूँ पाय,
आवति चलायै हाय मुक्ति अगवानी कौं॥३८॥

पारे दूरि ताप जे अमाप महि-मंडल के,
मारतंड ह्वै सो नभ - पंथ परसत हैं।
कहै रतनाकर गिरीस सीस सन्निधि तौ,
पाई रजनीस सुधाधीस सरसत हैं॥
रावरे प्रभाव कौ प्रकास चहुँ पास गंग,
हेरि हिय सहित हुलास हरसत हैं।
बेधि बेधि ब्योम जो सिधारे तव तारे सोई,
बेध ब्रह्म जोति लै सितारे दरसत हैं॥३९॥

ईसहू बनायौ सीस-भूषन प्रसंसि ताहि,
मानस - बिहारी परम्हंस घिरके रहत।
धारन कौं सादर उदार रतनाकर के,
अंग अंग सहित उमंग थिरके रहत॥
मानि भाग - वैभव सुहाग - माँग पूरन कौं,
सरग - बधूटिनि के जूट भिरके रहत।
सुरधुनि - धार निरधारि मुकता कौ हार,
मुकति अपार के प्रकार घिरके रहत॥४०॥

मंदर कौ भार भरते ना सुकुमार हरि,
बासुकी की बरत बनाइ बरते नहीँ।
कहै रतनाकर सुरासुर प्रसिद्ध सबै,
होन कौँ अमर कै, समर मरते नहीँ॥
इहि जग जटिल अनैसे माँहिँ जीवन कौँ,
पीवन कौँ ताहि नर हौंस भरते नहीँ।
जौ ना निरधारते सुधा तौ-धार सोदर तौ,
सीस पै सुधाधर गिरीस धरते नहीँ॥४१॥

धोइ देतीं खातौ ही हमारो जौ न सारौ आप,
चित्रगुप्त कहा कौ कहा धौं करि देत्यौ तौ ।
कहै रतनाकर न पाप नासतीं जौ इतौ,
भानहू कौ भौन तम-तोम भरि देत्यौ तौ ॥
तारतीं अपार जग-जीव जौ न मात गंग,
रचना प्रपंच कौं बिरंचि धरि देत्यौ तौ ।
मिलतीं त्रिलोक कौ त्रिताप-हरि जौ ना आप,
सिंधु-आप बाड़व कौ ताप दरि देत्यौ तौ ॥४२॥

जोगी जती तापस बिलोकि सुरलोक माँहिं,
हिय सुख-साजन के धरकन लागैं हैं ।
कहै रतनाकर न मान निज जानि कछू,
गौरव गुमान सबै सरकन लागैं हैं ॥
गंग के पठाए लोल लंपट निहारैं फेरि,
उमगि उछाह-छटा छहरन लागैं हैं ।
थरकन लागैं सुर-तरु सुर-धेनु आदि,
सुर-तरुनीनि अंग फरकन लागैं हैं ॥४३॥

पापी तन-तापी मैं न भेद कछु राखति है,
पार भवसागर कैं सबहीं उतारे देति ।
कहै रतनाकर बिरंचि रचना सौं बेगि,
पंच-तत्त्व त्यागि सत्व सकल निकारे देति ॥
त्रिगुन त्रिलोक के गुननि पर पानी फेरि,
एक गुन आपनौ अनूपम बगारे देति ।
रंग जमराज कौ रहै न सुरराज ही कौ,
दोऊ पुर गंग एक संग ही उजारे देति ॥४४॥

मृग कौं मृगांक मृग मंजुल रचावै अरु,
सिंहवाहिनी कौ सिंह सिंहहिँ सजावै है।
ताल कौं उताल रतनाकर बिसाल करै,
देव-करि करि करि-निकर पठावै है॥
नंदीगन निपट अनंदी करै बैलनि कौं,
न्हाइ कढ़े छैलनि कौं बाहन बँटावै है।
मानुष कौ संकर करत असंग कहा,
गंग गिरि-कंकर कौं संकर बनावै है॥४५॥

बासुकी बरेत गिरि मंदर मथानी करि,
ठानी इमि जाती रतनाकर मथाई क्यौं।
होत्यौ राहु बंचक क्यौं रंचक से लाहु काज,
होती आज लौं यौं चंद सूर की गहाई क्यौं॥
सुरसरि-धार पहिलैं हीं जौ पधारती तौ,
पारती सुरासुर मैं लालच लराई क्यौं।
पीते चित-चीते सबै आनँद अघाइ धाइ,
रहती सुधा की बसुधा मैं कृपनाई क्यौं॥४६॥

संतत सुजान बिधि बेद-गान-आनँद मैं,
लगन लगाए यौं मगन रहते नहीं।
कहै रतनाकर सदासिव सदा ही इमि,
भंग की तरंग मैं उमंग गहते नहीं॥
आठौं जाम रहते रमेश काम ही मैं लगे,
सेस पै निमेष बिसराम लहते नहीं।
पतित-उधारन के दोष-दुख-टारन के,
जो पै गंग-धार मैं अधार चहते नहीं॥४७॥

बसि बसि जात जे परोस मैं तिहारे मात,
बात तिनकी तौ कछु बनत उचारैं ना।
कहै रतनाकर कहै को पास आवन की,
ते पुनि पलटि पुहुमी पै पग धारैं ना॥
सकपक ह्वै कै सब चकपक चाहि रहे,
ऐसी दसा देखि कै निमेप सुर पारैं ना॥
फेरि जग आवन कौ करि कै बिचार भयौ,
कोऊ अवतार गंग-धार के किनारैं ना॥४८॥

सुरधुनि-धार के उजागर भए तैं भूमि,
आई भवसागर मैं भूरि भरुवाई है।
गुन गरुवाई और भुवन त्रयोदस की,
आनि याके पानिप मैं सिमिटि समाई है॥
पारद - प्रभाव रतनाकर भयौ सो यह,
जामैं परि बूड़न की बात ही बिलाई है।
नेम ब्रत संजम की कठिन कमाई करि,
अब तौ परै न इहाँ देन उतराई है॥४९॥

सगर - कुमारनि कौ उमगि उधारन कै,
अमर अगारनि कौ बिचल बसावतौ।
मुक्ति-प्रद-पानिप-प्रभाव-प्रभा आगर सौं,
सागर कौं कौन रतनाकर बनावतौ॥
ब्याली गज-खाली औ कपाली भूतनाथ कहौ,
माथ धरि काकौं सिव संकर कहावतौ।
होतौ जौ न नातौ गंग-धार कौ अधार तौ पै,
जड़ जल कैसैं पद जीवन कौ पावतौ॥५०॥

जोरि जोरि पातक-बिधान सब कोरि कोरि,
भेँट कौं तिहारी फैँट भूरि भरि धारे हम।
कहै रतनाकर अपार बटपारे पर,
पाछेँ परे ज्यौं ही तव मग पग पारे हम॥
बिकट पहाड़िनि मैँ खाड़िनि मैँ झाड़िनि मैँ,
साधन अनेक के कछूक जो उबारे हम।
सोऊ बचे पहुँचि किनारे ना तिहारे गंग,
तातैं हाथ झारे आनि तुम सौं जुहारे हम॥५१॥

तारे साठ सहस कुमार जे सगरवारे,
तिन अपराधनि की गनना न भारी है।
कहै रतनाकर उधारे जन जेते और,
तिनमैँ न कोऊ ऐसौ बिदित बिकारी है॥
याही हेत देत हैँ चिताए गंग चेत धरौ,
धसकि न जाइ धरा धाक जो तिहारी है।
लीजै करि सँभारि तयारी मनवारी सबै,
पारी अबकैँ तौ अति बिकट हमारी है॥५२॥

श्रीविष्णु-लहरी

पारैं और भाव ना प्रभाव मन माहिँ नैंकु,
एक तव भावना स्वभाव लौं सगी रहै।
और धारनाहूँ की विधूसरित धारा माहिँ,
रस - रतनाकर - तरंग उमगी रहै॥
आवै बात रंभा-अधरानि और सुधाहू की न,
ऐसी मुख स्याम-नाम-माधुरी पगी रहै॥
प्रेम-रस रसत सदाई रहै कोयनि सौं,
रावरी लुनाई इमि लोयनि लगी रहै॥ १॥

जाउँ जम-गाउँ जौ समेत अपराधनि के,
तौ पै तिहिँ ठाउँ ना समाउँ, उबर्यौ रहौँ।
कहै रतनाकर पठावौ अघ-नासि जु पै,
तौ पै तहाँ जाइबे की जोगता हर्यौ रहौँ॥
सुकृत बिना तौ सुर-पुर मैं प्रवेस नाहिँ,
पर तिन तैं तौ नित दूर ही टर्यौ रहौँ।
तातैं नयौ जौ लौं ना निवास निरमान होइ,
तौ लौं तव द्वार पै अमानत पर्यौ रहौँ॥ २॥

देखत मतंग ज्यौं कुरंग-पति फारै दौरि,
काहू के निहोरनि की बाट ना निहारै है।
कहै रतनाकर प्रभाकर प्रभा ज्यौं व्योम,
बिन बिनती हीँ तम-तोम नासि डारै है॥
पावक स्वभावक हीँ माने बिन द्रोह मोह,
निपट निवारतहूँ दारुदोह जारै है।
त्यौँहीँ कृपा रावरी उतावरी-समेत धाइ,
बिनहीँ गुहारैं बेगि बिपति बिदारै है॥ ३॥

हाहाकार होत्यौ यौँ अपार भवसागर मैँ,
रहती न कान अनाकानि ह्वै हथेरी सी।
कहै रतनाकर बिधाता के बिधानहूँ सौँ,
जाती न निबेरी एती आपद घनेरी सी॥
पदमा प्रबीन कौँ पलोटतहूँ पाइ धाइ,
ऋद्धि सिद्धिहूँ के किएँ जुगति घनेरी सी।
आवती न ऐसी सुख-नीँद सेसहूँ पै नाथ,
होती जौ न चेरी कृपा कुसल कमेरी सी॥ ४॥

टेरन न पावैँ तुम्हैँ टेरिबौ बिचारत ही,
आरत ह्वै धाइ कृपा दुख दरि देति है।
कहै रतनाकर अघाए घाय जीवन पै,
आनँद सजीवन की मूरि धरि देति है॥
एक एक पूरि अभिलाष लाख भाँतिनि सौँ,
ऋद्धि सिद्धि पाँति सौँ भौन भरि देति है।
ताकी चूक कूरु परै कान ना तिहारैं कहूँ,
जानि यह कजेस कौँ निसेस करि देति है॥ ५॥

एक तौ तिहारौ पद-पाथ नाथ प्रानिनि कौं,
देत बिन रोक तिहुं लोक तैं निकारौ है।
कहै रतनाकर बहुरि गुन-गान ध्यान,
भेजे देत जानैं कहाँ जंगम अखारौ है॥
आदि ही सौं रचना बिरंचि बिसतारि हार्यौ,
पार्यौ पै न क्यौंहूँ पूर पारन बिचारौ है।
ऊबि उमगाइ तौ अनंत हू हिये मैं धाइ,
सकति न पाइ कृपा पूरन पसारौ है॥ ६॥

सब कछु कीन्यौ हम निज बस ही सौं मही,
कौन तुमहीं कौं फेरि परबसताई है।
कहै रतनाकर फलाफल रचे जो अरु,
करम सुभासुभ मैं भिन्नता भराई है॥
निज रचना के उपजोग की तुम्हैं जो चाह,
तौ न निरबाह मैं हमैंहूँ कठिनाई है।
मान्यौ मरजाद सबै आपनी रचाई पर,
यह तौ बतावौ कृपा कौन की बनाई है॥ ७॥

निज बल प्रबल-प्रभाव कौ भरोसौ थापि,
और सब भावनि कौं निदरि भजावै है।
कहै रतनाकर तिहारे न्याव हू कौ ध्यान,
ताके अभय-दान-आगैं आवन न पावै है॥
तापै हमहीं कौं तुम दोपिल बतावत हौ,
तातैं बिलखात यह बात कहि आवै है।
राखौ रोकि आपनी कृपा जो कहौ मानै नीठि,
ढीठ हमकौं जो करि अकर करावै है॥ ८॥

ऐसे कछू मायामयी सौतुक तिहारे नैन,
जिनकौ न कौतुक कछूक कहि जात है।
करुना अपार रतनाकर तरंगनि मैं,
तिनके सँजोग कौ सुजोग लहि जात है॥
गुन-तृन तिनसौं सुमेरु-गरुवाई गहै,
दोष-मेरु तृन सौ तुरत हरुवात है।
एक तहियाइ कै हिये मैं ठहि जात वेगि,
एक फहियाक कै बहकि बहि जात है॥२१॥

देखत हमारी दसा दारुन तिहारैं नैन,
बूँद करुना की लौटि फेरि इमि छाई है।
कहै रतनाकर न जातैं गुन दोष मान,
परत प्रमान सौ जथारथ दिखाई है॥
याही अवसेरि फेरि नीकैं जनि हेरौ कहूँ,
अब तौ हमारी सब भाँति बनि आई है।
राई सौ सुगुन गिरिराई है लखात तुम्हैं,
दोष गिरिराई सौ लखात पुनि राई है॥२२॥

सेद-कन सारत सँभारत उसास हू न,
बास हू बदलि पट नील कँधियाए हौ।
कहै रतनाकर पछाए पच्छि-नायक कौ,
बढ़त पुकार हू के पार अगुवाए हौ॥
बाएँ पंचजन्य जान बाजन न पाएँ बिना,
दाएँ चकरात चक्र बेग यौं बढ़ाए हौ।
कौन जन कातर गुहार लागिबे के काज,
आज इमि आतुर गुपाल उठि धाए हौ॥२३॥

कोऊ देव टेरते कहौ धौं मुहँ लाइ कौन,
साधन तौ काहू कौ अराधन न कीन्यौ है।
कहै रतनाकर गुनाकर बनेई रहे,
ऐसौ बल बुद्धि के गुमान मन भीन्यौ है॥
काम के परै पै कौन नाम लै पुकारै अब,
याही कैं मलोल मुखखोलन न दीन्यौ है।
हम तौ गुहारयौ ना अनाथ अपने कौं ठाइ,
धाइ पर नाथ तौ सनाथ करि लीन्यौ है॥२४॥

जानत हूँ तुमकौं अजान बनी टेरयौ हाय,
अब सो अजानता की ग्लानि गरिबौ परयौ।
कहै रतनाकर हराँस के हरैया रंच,
आँस औ उसास हूँ सँभारि भरिबौ परयौ॥
पाई आप पीर जो अधीरता हमारी हेरि,
देखि कै अधीर तुम्हैं धीर धरिबौ पर्‍यौ।
आप तौ हमारे मनुहार कौं पधारे पर,
उलटौ हमैं ही मनुहार करिबौ पर्‍यौ॥२५॥

तारि गीध-गानिका, उधारि पहलाद आदि,
बानि जो बनाई सो न कानि गहि जाइगी।
कहै रतनाकर जो द्रौपदी गजेंद्र हित,
धाइ श्रम साध्यौ सोऊ साख ढहि जाइगी॥
औसर परे पै अब रंचहू कृपाल सुनौ,
चूक जौ परी तौ हियैं हूक रहि जाइगी।
आयौ कहूँ नीर जो अधीर इन नैननि तौ,
एती सब साधना वृथा ही बहि जाइगी॥२६॥

ह्वैहै दसा दारुन हमारी कहा कौन भाँति,
इन परपंचनि सौँ रंच मन गारौ ना।
कहै रतनाकर न आतुर ह्वै धीर तजौ,
नीर-भरे नैननि सौँ कातर निहारौ ना॥
ऐसी प्रेम-परख-प्रभा सौँ हम चाहैँ छमा,
कसक करेजैँ आनि कछुक उचारौ ना।
सारौ ना मधुर मुसकानि मंजु आनन तैँ,
नाथ नैँकु बाँसुरी बजाइबौ बिसारौ ना॥२७॥

कोऊ कहै लच्छ औ अलच्छ पुनि कोऊ कहै,
दोऊ पच्छ-भेद तौ प्रतच्छ दरसाए ना।
कहै रतनाकर दुहूँ के अनुमान-बाद,
बिगत-बिवाद औ प्रमाद ठहराए ना॥
देखिनि अदेखिनि की एकै दसा देखि परै,
लेखि परै लेखा कछु रावरौ लिखाए ना।
देख्यौ जिन नाहिँ ते अलच्छ कहिबोई चहैँ,
देख्यौ जिन तेऊ चौंधि लच्छ करि पाए ना॥२८॥

आपही कौँ आपही न पावत हौ हेरैँ रंच,
आपै आपु आपुही मैँ आपुही हिराने हौ।
बूँद लौँ समाने हौ अपार रतनाकर मैँ,
पुनि रतनाकर लौँ बूँद मैँ समाने हौ॥
ऐसे कछु लच्छ कै समच्छ दसहू दिसि मैँ,
पूरे प्रति कच्छ मैँ प्रतच्छ दरसाने हौ।
ऐसे पै अलच्छ कै जतन-जोग लच्छहू सौँ,
काहू ज्ञान-दच्छ हू सौँ जात ना पिछाने हौ॥२९॥

मंजु मनि कामद मयूष परमानु आनि,
माटी माहिं निपट निराटी है धरत हौ।
कहै रतनाकर समेटि अगरावौ फेरि,
याहि हेर-फेर कैं विनोद विहरत हौ॥
जानौ तुमहीं कै वह जानत जनावौ जाहि,
और कौन जानै कहा कौतुक करत हौ।
वैठे विन काज वनिकनि लौं लगाए साज,
या घट कौ धान धाइ वा घट भरत हौ॥३०॥

मेरी जान सोई महा चतुर सुजान जाकी,
सुमति तिहारैं गुन-गननि ठगी रहै।
कहै रतनाकर सुधाकर सौं उज्ज्वल सो,
जामैं सुभ स्यामता तिहारी उमगी रहै॥
तिहिं मन-मंदिर पतंग दुरभाव नहिं,
जामैं तव ज्यौति की जगाजग जगी रहै।
मगन न होत सो अपार भवसागर मैं,
तव गरुता की जाहि लगन लगी रहै॥३१॥

गहकि गह्यौ ना गुन रावरौ गुनी जो गुनि,
सो पुनि गहीलौ गुन-गौरव गह्यौ कहा।
बूँदहू लही ना तव प्रेम रतनाकर की,
लाहु तौ अलाहु लहि जीवन लह्यौ कहा॥
रंचहू दह्यौ ना तो विछोह-दुख दाहनि जो,
सो करि प्रपंच पंच पावक दह्यौ कहा।
जान्यौ तुम्हैं नाहिं अजान कहा जान्यौ आन,
जान्यौ तुम्हैं ताहि आन जानन रह्यौ कहा॥३२॥

साधिहैँ समाधि औ अराधिहैँ न ज्ञान-ध्यान,
बाँधिहैँ तिहारैँ गुन प्रान मुकलैहैँ ना।
कहै रतनाकर रहैँगे ह्वै तिहारे भृत्य,
दुरभर भार भरतार कौ भरैहैँ ना॥
आपनी ही चिंता सौँ न चैन चित रंच लहैँ,
जगत निकाय कौ प्रपंच सिर लैहैँ ना।
एकै घट नाधि साध सकल पुराइँ अब,
हम तुम ह्वै कै घट-घट मैँ समैहैँ ना॥३३॥

परि परि प्रबल प्रपंच माहिँ पंचनि के,
नाच्यौ हौँ जितेक नाच तेतिक नचैया को।
कहै रतनाकर पै औरै खाँच खाँची अब,
तुम बिन ताके पर साँच कौ सँचैया को॥
जौ हम अनाथ औ न माथ पै हमारे कोऊ,
तौ अब हमारौ कर अकर जँचैया को।
जौ पुनि सनाथ हैँ तौ तुमहीँ बतावौ नाथ,
हमसे सनाथ कौ अनाथ लौँ तँचैया को॥३४॥

दीन जन ही के जौ उधारन की टेक तुम्हैँ,
तौ पै अब अधम अदीननि उधारै कौन।
कहै रतनाकर बिसारै जो सुधारौ ताहि,
परि इहिँ लालच मैँ तुमकौँ बिसारै कौन॥
तुम तौ अनाथनि की सुनत पुकार सदा,
नाथ होत तुमसे अनाथ ह्वै पुकारै कौन।
होते जौ अनाथ तौ उबारते हमैँ हूँ नाथ,
हम तौ सनाथ कहौ हमकौँ उबारै कौन॥३५॥

जौ पै कहौ भावना हमारी ही अनाथनि की,
तौ पै ताहि नाथि कै सनाथ ना बनावौ क्यौं।
कहै रतनाकर जौ करम-विवाद तौ पै,
आदि ही सौं भाए ही न करम करावौ क्यौं॥
जौ पै अवकास नाहिं रंच आन पंचनि सौं,
तौ पै इते पंच के प्रपंचहि बढ़ावौ क्यौं।
हम जौ अनाथनि लौं इत उत टेकैं माथ,
तौ पै तुम नाथ नाथ बिस्व के कहावौ क्यौं॥३६॥

और तौ न रंचहू बिरंचि रचना मैं कछू,
पंचभूत ही कौ तौ प्रपंच सब ठौरे है।
कहै रतनाकर मिलाप तिनही कौ भिन्न,
सब जड़ जंगम मैं भेद-भाव डौरै है॥
होहिं हूँ जौ औरौ तत्त्व तिनहूँ के स्वत्व-काज,
त्यागि तुम्हैं और कोऊ ठाकुर न ठौरै है।
बस सब भूतनि के नाथ तुमहीं जौ नाथ,
नाथ तौ हमारे पंचभूत कौ न औरै है॥३७॥

होत्यौ मन माहिं मन राखिबौ हमारौ जौ न,
तौ पै मनमानौ एतौ करते दुलारौ ना।
कहै रतनाकर बिचार निरधारि यहै,
ढीठ है उचारैं तातैं बिलग बिचारौ ना॥
आपनौ हीं जानि कृपा कोप जो करौ सो करौ,
आन मानि धारौ तौ कृपा हू रंच धारौ ना।
कै तौ गहि हाथ बिस्व बाहर निकारौ नाथ,
कै तौ बिस्वनाथ निज नाथता बिसारौ ना॥३८॥

पुन्य पाप दोऊ तौ बनाए रावरेई नाथ,
फेरि फलाफलहू फराए रावरेई हैं।
कहै रतनाकर चहत पुन्य कौँ तौ सबै,
गाहक पै पाप के लखात बिरलेई हैं॥
दोऊ मैँ न भेद पै लखात हमकौँ है कछू,
दोऊ सुख साधन के बाधन बनेई हैं।
दुसह बियोग-ज्वाल-जरत बियोगिनि कौँ,
अमर-अवास सुर-वास एक सेई हैं॥३९॥

सोई सो किए हैँ जो जो करम कराए आप,
तिनपै भले की औ बुरे की छाप छापौ ना।
कहै रतनाकर नचाइ चित-चाह्यौ नाच,
काच-पूतरी पै गुन दोष आप आपौ ना॥
खोटे खरे भेद औ अभेद धरि राखौ उतै,
बिबस बिचारे पै बृथा ही धाप धापौ ना।
थापौ जहाँ भावै तुम्हैँ थापिवौ हमैँ पै नाथ,
माथ पै हमारे पाप-पुन्य-थाप थापौ ना॥४०॥

कीन्यौ आपही तौ रचि कठिन कुभाव ताकौ,
जाकौ अब प्रबल प्रभाव इमि भावै है।
कहै रतनाकर सुरासुर प्रसिद्ध सिद्ध,
ताके परपंच सौँ न कोऊ पार पावै है॥
तापै सब दोष नाथ आवत हमारै माथ,
साहस कै तातैँ यह गाथ मुख आवै है।
भूल तुमहूँ कौँ बस करि जो भुलावै हमैँ,
कीजै कहा सोई हमैँ तुमकौँ भुलावै है॥४१॥

होत्यौ पंचतत्त्व मैं न स्वत्व तव संचित जौ,
तौ पै बुधि तिनकै प्रपंच पढ़ती कहा।
कहै रतनाकर गुनाकर न होते तुम,
तौ पै भेद-भावना-विभूति वढ़ती कहा॥
पावती न साँचौ जौ तिहारी मनसा कौ मंजु,
तौ पै कृति प्रकृति विचारी गढ़ती कहा।
लहती प्रभाव-पौन जौ न तव पायनि कौ,
तौ पै धूरि धमकि अकास चढ़ती कहा॥४२॥

कामना-विहीन कबौं नाम ना तिहारौ लेत,
ग्राम-धन-धाम ही की चेत चित ठाई है।
कहै रतनाकर विलासनि की आस हियैं,
रहति हुलासनि की हाँस हुमसाई है॥
कामी क्रूर कुटिल कुमारग के गामी इमि,
अजहूँ न नैंकु विषै-वासना सिराई है।
चाहैं वह धाम जहाँ गनिका सिधाई जऊ,
गाँठि मैं न दाम कछू सुकृति कमाई है॥४३॥

केते मनु-अंतर निरंतर व्यतीत ह्वै हैं,
केती चित्रगुप्त-जम औधि उटि जाइगी।
कहै रतनाकर खुल्यौ जो पाप-खाता मम,
तौ गनि विधाताहू की आयु खुटि जाइगी॥
जैहै बाँचि-बूझि अबकी ना लिपि भाषा नैंकु,
औरै पाप-पुन्य-परिभाषा जुटि जाइगी।
लाहु लहि संसय कौ संसय बिना ही बस,
पापिनि की मंडली अदंड छुटि जाइगी॥४४॥

ए हो बीर पातकी अधीर जनि होहु सुनौ,
यह ततबीर भीर रावरी भजावैगी।
भाषैं यहै आगैं हूँ अभागे हमसौं जो जाहि,
याही एक बात घात सकल बनावैगी॥
पहिलैं हमारे सरदार रतनाकर की,
पातक-अपार-परतार पार पावैगी।
जैहैं बस चौकड़ी अनेक जुगवारी बीति,
पारी फेरि जाँच की तिहारी नाहिं आवैगी॥४५॥

दान देत चेत कै सहस्र गुनौ पैबे हेत,
लाए नेत ईसहू के संपति-भँडारे पै।
कहै रतनाकर कहत राम-नाम हू के,
रामा कौ अकार चढ़ै चित चटकारे पै॥
हाथ मैं हजारा, गरैं माला तुलसी की नीकी,
राँची रुचि जी की नित करम नकारे पै।
जोरि जोरि नैन सैन करि कछु आपस मैं,
पाप मुसकात पोले प्राच्छित हमारे पै॥४६॥

एक तुमही सौं सकल नेह नातौ बस,
और की तौ जानत न मानत सगाई हम।
कहै रतनाकर सु वारपार धारहू मैं,
सोई तुम्हैं देखत अपार सुखदाई हम॥
जानते जौ काहू जानकार दूसरे के कहैं,
पार जान ही मैं कछु अधिक भलाई हम।
जप-तप-साधन दुसाध की कमाई करि,
देते मनभाई तुम्हैं नाथ उतराई हम॥४७॥

लेते गहि तूमड़ी अनेक एक की को कहै,
साँसनि के सासन सौं नैकु डरते नहीं।
कहै रतनाकर विधान तारिबे के आन,
जेते ध्यान माहिं तिनहूँ सौं टरते नहीं॥
हाथ पायँ मारते विचारते उपाय सबै,
एतनि मैं हमहीं कहा धौं तरते नहीं।
हातौ चित चाव जौ न रावरे कहावन कौ,
भाँवरे भवांबुधि मैं भूलि भरते नहीं॥४८॥

सूनौ ठाम जौ पै बिसराम करिबे कौं चहौ,
तारन के काम सौं बिरामता सुहाई है।
तौ पै रतनाकर के हिय सौ न सूनौ धाम,
जामैं होति स्याम नाहिं आन की अवाई है॥
बलि तौ नपाई देह वाचा-बद्ध ह्वै कै इहाँ,
हग पग धारिबे की लालसा लगाई है।
खोजत जौ पापिनि के माथ धरिबे कौं हाथ,
तौपै मम माथ नाथ कौन पुन्यताई है॥४९॥

भाव दृढ़ता के कछु भरन न पाए उर,
दुख-सुख-झोरनि हिँडोरनि पले गए।
कहै रतनाकर प्रपंचनि कै पैंच परि,
साहस न संचि सके छकित छले गए॥
घेरि-घेरि ज्यौँ-ज्यौँ मन माहिँ चह्यौ राखन कौँ,
फेरि-फेरि त्यौँ-त्यौँ तुम भाजत भले गए।
जानि हमैँ कादर निरादर करत नाथ,
सूर के हिये सौँ क्यौँ न निमुकि चले गए॥५०॥

सूर तुलसी लौं नाहिं भक्ति अधिकारी हम,
ताके माँगिबे की चित्त चाह गहिबौ कहा।
कहै रतनाकर न पंडिताई केसव की,
तातैं कल कीरति की हौंस बहिबौ कहा॥
मन अभिलाषै धन, धाम बाम नाम सदा,
पूछत तिहारे सकुचात कहिबौ कहा।
तातैं अब तुमहीं बतावौ हू कृपाल ठाहि,
अपर हमैं है तुम्हैं चाहि चाहिबौ कहा॥५१॥

स्वारथ कौ पथ गथ गूढ़ परमारथ कौ,
पारथ हू पायौ ना तौ और कौन पैहै जो।
कहै रतनाकर न रंच यह पावैं जाँचि,
जाँचै कहा साँच ही प्रपंच-खाँच ख्वैहै जो॥
याही उर अंतर निरंतर प्रतीत धरैं,
याही मुख मंतर हू अंत दुख ध्वैहै जो।
नैहै हठि सोई जो तिहारैं मन भैहै नाथ,
भैहै तुम्हैं सोई तौ हमारौ हित ह्वैहै जो॥५२॥

रत्नाष्टक

(१) श्रीशारदाष्टक

सुमिरत सारदा हुलसि हँसि हंस चढ़ी,
बिधि सौं कहति पुनि सोई धुनि ध्याऊँ मैं।
ताल-तुक-हीन अंग-भंग छवि-छीन भई,
कविता विचारी ताहि रुचि-रस प्याऊँ मैं॥
नंददास - देव - घनआनँद - बिहारी - सम,
सुकवि बनावन की तुम्हैं सुधि याऊँ मैं।
सुनि रतनाकर की रचना रसीली रंच,
ढीली परी बीनहिं सुरीली करि ल्याऊँ मैं॥ १॥

कहति गिरा यौं गुनि कमला उमा सौं चलौ,
भारत मही मैं पुनि मंजु छवि छाजैं हम।
राखैं जौ न नैंकु टेक जन-मन-रंजन की,
हरि हर बिधि की वृथा ही बाम बाजैं हम॥
माख मानि बैठ्यौ एँठि लाड़िलौ हमारौ ताकौ,
करि मनुहार सुधा-धार उपराजैं हम।
साजैं सुख संपति के सकल समाज आज,
चलि रतनाकर कौं नैंसुक निवाजैं हम॥ २॥

(२) श्रीगणेशाष्टक

इंद्र रहैं ध्यावत मनावत मुनिंद्र रहैं,
गावत कविंद्र गुन दिन-छनदा रहैं।
कहै रतनाकर त्यौं सिद्धि चौंर ढारति औ,
आरति उतारति समृद्धि - प्रमदा रहैं॥
दै दै मुख मोदक विनोद सौं लड़ावत ही,
मोद मढ़ी कमला उमा औ बरदा रहैं।
चारु चतुरानन, पँचानन, षड़ानन हूँ,
जोहत गजानन कौ आनन सदा रहैं॥ १॥

मञ्जु अवतंसनि पै गुंजरत भौंर - भीर,
मंद-मंद श्रौननि चलाइ बिचलावै है।
कहै रतनाकर निहारि अधचाँपैं चख,
चूमिबे कौं संभु कौ अधर फरकावै है॥
कुंडलि सुंडिका पसारि अनचीते चट,
कुंडल षड़ानन कौ छ्वै पुनि छपावै है।
दाबै मुख मोदक विनोद मैं मगन इमि,
गोद गिरिजा की गहे मोद उपजावै है॥ २॥

ठेले कछु दंत सौं सकेले कछु सुंड माहिं,
मेले कछु आनन गजानन परात हैं।
कहै रतनाकर जगत मैं न रंच कहूँ,
भगत - विघन के प्रपंच दरसात हैं ॥
धाइ धाइ पारत फनी के मुख-मंडल मैं,
लाइ लाइ सोऊ जीभ चट करि जात हैं।
उत तौ उमा के उर उठत अनेस इत,
भेस देखि मुदित महेस मुसकात हैं ॥ ३ ॥

सुंड सौं लुकाइ औ दबाइ दंत दीरघ सौं,
दुरित दुरूह दुख दारिद विदारे देत ।
कहै रतनाकर विपत्ति फटकारै फूँकि,
कुमति कुचार पै उछारि छार डारे देत ॥
करनी विलोकि चतुरानन गजानन की,
अंब सौं त्रिलखि यौं उराहनौ पुकारे देत ।
तुमही बतावौ कहाँ विघन विचारे जाहिं,
तीनौं लोक माहिं ओक उनकौं उजारे देत ॥ ४ ॥

सुमुख कहाइबौ सफल बक्रतुंड ही कौ,
सुमिरत जाहि कौन विपति बही नहीं।
कहै रतनाकर त्यौं उदर उदार माहिं,
सकल समानी कला एकौ उबरी नहीं ॥
बुधि-बल तीनि हीं परग मैं त्रिलोक फिरे,
तातैं गति मूपहू की मंदता लही नहीं।
एकै दंत सकल दुरंतनि कौ अंत करै,
दंत दूसरे की तंत तनक रही नहीं ॥ ५ ॥

एक रद ही सौं रेलि बिघन समूह सबै,
संभु-द्दग तीसरे मैं जौ पै हुनते नहीं।
कहै रतनाकर बुधाकर तुम्हैं तौ फेरि,
अग-हीन हेरि गननाथ गुनते नहीं॥
होत्यौ गजराज-सुंड-पावन विना ही काज,
बिटप-अकाज-साज जौ पै लुनते नहीं।
ऐते बड़े कानन की कानि रहि जाती कहा,
जौ पै हमवार की पुकार सुनते नहीं॥ ६॥

केते दुख दारिद बिलात सुंड-चालन मैं,
कसमस हालन मैं केते पिचले परैं।
कहै रतनाकर दुरित दुरभाग भागि,
मग तैं बिलग बेगि त्रासनि चले परैं॥
देखि गननाथ जू अनाथनि कौं जोरे हाथ,
थपकत माथहूँ न नैंकु निचले परैं।
मोदक लै गोद देन काज जब भक्तनि कौं,
गोद तैं उमा के मचलाइ बिचले परैं॥ ७॥

बिघन बिदारन कौं कुमति निवारन कौं,
टारन कौं जेतो जग बिपति-पसारौ है।
कहै रतनाकर कहति गिरिजा यौं नाथ,
हाथ पर्यौ रावरैं गजानन ही न्यारौ है॥
रैन दिन चैन है न सैन इहिं उद्यम मैं,
दमहू न लेन पावै रंचक बिचारौ है।
जारौ किन कंत नैन तीसरैं दुरंत सबै,
एक दंत ही कौ अबै बालक हमारौ है॥ ८॥

———

(३) श्रीकृष्णाष्टक

जाकी एक बूँद कौं बिरंचि बिबुधेस सेस,
सारदा महेस ह्वै पपीहा तरसत हैं।
कहै रतनाकर रुचिर रुचि जाकी पाइ,
मुनि-मन-मोर मंजु मोद सरसत हैं॥
लहलही होति उर आनँद - लवंगलता,
दुख दंद जासौं ह्वै जवासौ झरसत हैं।
कामिनी सुदामिनी समेत घनस्याम सोई,
सुरस - समूह ब्रज - बीच बरसत हैं॥ १॥

लीन्यौ रोक जमुना-प्रवाह बाँसुरी कैं नाद,
जाकौ जसबाद लोक सकल बखानैंगे।
कहै रतनाकर प्रलै की घनधार रोकि,
लीन्यौ ब्रज राखि सहसाखि साखि मानैंगे॥
उमगत सिंधु रोकि द्वारिका बसाई दिव्य,
जुगजुग जाकी कवि कीरति बखानैंगे।
हम तौ हमारी दसा दारुन विलोकि नैंकु,
रोकि लैहौ करुना प्रवाह तब जानैंगे॥ २॥

कोऊ कहैँ कंज हैँ कलानिधि-सुधाकर के,
कोऊ कहैँ खंज सुचि-रस के निखारे हैँ।
कहै रतनाकर त्यौँ साधा करि कोऊ कहैँ,
राधा-मुख-चंद के चकोर चटकारे हैँ॥
कोऊ अंग-कानन के कहत कुरंग इन्हैँ,
कोऊ कहै मीन ये अनंग-केतु-वारे हैँ।
हम तौ न जानैँ उपमानैँ एक मानैँ यहै,
लोचन तिहारे दुख-मोचन हमारे हैँ॥ ३॥

नेह की निकाई नित छाई अंगअंग रहै,
उठति उमंग रहै अमित अनंद की।
कहै रतनाकर हिये मैँ रस पूरि रहैँ,
आनि ध्यान-मनि मैँ मरीचैँ मुख चंद की॥
राँची रसना मैँ आठौँ जाम मधुराई रहै,
ताके नाम रुचिर रसीले गुलकंद की।
प्रेम-बूँद नैननि निमूँद नित छाई रहै,
लाई रहै ललित लुनाई नँदनंद की॥ ४॥

सुमिरि तुम्हैँ जो हिय द्रवत न नैँकु हाय,
स्रवत न आँसु लै उसास-रसवारौ है।
कहै रतनाकर पै नित धन-धाम-ग्राम,
काम ही के काम कौ पसारत पसारौ है॥
ऐसे हमहूँ से जो नकारनि कृपा कैँ वारि,
साँचौ घन-स्याम तौ तौ विरद-सँभारौ है।
भक्तनि के ताप टारिबे मैँ ना निहारौ नाथ,
तिनके हियैँ तौ निज धाम ही तिहारौ है॥ ५॥

दूरि करि ताप-दाप तिमिर कलाप सबै,
चारौं फल माहिँ मंजु रस सरसाए देति।
दरि दुखदंद की अमंद अति उम्मस कौं,
आनँद सुधा सौं नैन-फलक द्रवाए देति॥
विविध विलासनि सौं पूरि सुभ आसनि कौं,
पाप-पंक-जात दुरवासनि दवाए देति।
उर रतनाकर के व्रज के कलाकर की,
मंद-मुसकानि-जोति जीवन जगाए देति॥ ६॥

दुखहू परे पै ना पुकारत गुपाल तुम्हैं,
कबहूँ उचारत उसास भरि राधा ना।
कहै रतनाकर न प्रेम अवराधैं रंच,
नेम व्रत संजम हू साधैं करि साधा ना॥
याही भावना मैं रहैं भभरि भुलाने कहूँ,
उभरि करेजैं परै करुना अगाधा ना।
अकथ अनंद जो अकारन कृपा कौ नाथ,
हाथ करिबे मैं तुम्हैं ताहि परै बाधा ना॥ ७॥

पावैं कहूँ ओक ना त्रिलोक माहिं धावैं फिरे,
सुरति भुलाए भूरि भूख औ पिपासा की।
कहै रतनाकर न इत उत चाहैं नैंकु,
चपल चलेई जात साधे सीध नासा की॥
राख्यौ ना विरंचि हरि हरहूँ न सक्र रंच,
बक्र गति चाहि चल चक्र के तमासा की।
साप की कहै को मुख बाहिर न स्वासा भई,
दुरित दुरासा भई दूरि दुरवासा की॥ ८॥

करुना प्रभाव कल कोमल सुभाव-वारौ,
जन रखवारौ सदा दिवस त्रिजामा कौ।
कहै रतनाकर कसकि पीर पावै उर,
ध्यान हूँ परे पै दुख दीन नर बामा कौ॥
याही हेत आखत कौ राखत विधान नाहिँ,
पूजा माहिँ प्रीतम प्रबीन सत्यभामा कौ।
पांडवबधू कौ वच्यौ भात सुधि आइ जात,
छाइ जात नैननि पै तंदुल सुदामा कौ॥ ९॥

(४) गजेंद्रमोक्षाष्टक

रमत रमा के संग आनँद-उमंग भरे,
अंग परे थहरि मतंग अवराधे पै।
कहै रतनाकर बदन-दुति औरै भई,
बूँदैं छईं छलकि दृगनि नेह-नाधे पै॥
धाए उठि बार न उबारन मैं लाई रंच,
चंचला हू चकित रही है वेग-साधे पै।
आवत बितुंड की पुकार मग आधैं मिली,
लौटत मिल्यौ तौ पच्छिराज मग आधे पै॥ १॥

संग के पुराने गज दिग्गज डराने सबै,
ताने कान कुंजर सुरेस कौ चिघार्यौ है।
कहै रतनाकर त्यौं करि कमला के काँपि,
चाँपि चख पानिप कहूँ कौ कहूँ पार्यौ है॥
संकजुत दौरि पौरि खेलत गजानन हूँ,
गोद गिरिजा की दूरि मौन मुख धार्यौ है।
एते माहिँ आतुर उमाहि हरि आइ धाइ,
सुंड गहि बूड़त बितुंडहिँ उबार्यौ है॥ २॥

सुंड गहि आतुर उबारि धरनी पै धारि,
विवस बिसारि काज सुर के समाज कौ।
कहै रतनाकर निहारि करुना की कोर,
वचन उचारि जो हरैया दुख-साज कौ॥
अंबु-पूरि दृगनि विलंब आपनोई लेखि,
देखि देखि दीह छत दंतनि दराज कौ।
पीत पट लै लै कै अँगोछत सरीर कर-
कजनि सौं पोंछत भुसुंड गजराज कौ॥ ३॥

परत पुकार कान कानि करुना की आनि,
महित उदेग बेग-विकल बिकाने से।
कहै रतनाकर रमा हूँ कौं विहाइ धाइ,
औचक ह्वाँ आइ भरे भाइ सकुचाने से॥
आतुर उबारि पुचकारि धरनी पै धारि,
अमित अपार स्रम भभरि भुलाने से।
फेरत भुसुंड पै कंपत कर पुंडरीक,
विकल-वितुंड-सुंड हेरत हिराने से॥ ४॥

संगवारे महा मतंगनि के संग सबै,
निज निज प्रान लै पराने पुसकर सौं।
कहै रतनाकर विचारौ बल हारौ तब,
टेरि हरि पारयौ कल कंज गहि सर सौं॥
पहुँच न पायौ पुनि वारि लौं न जौं लौं वह,
तौ लौं लियौ लपकि उबारि हरबर सौं।
एक सौं ललायौ चक्र एक सौं चलायौ गह्यौ,
एक सौं भुसुंड पुंडरीक एक कर सौं॥ ५॥

देखती रमा जौ यह कानि करुना की कहूँ,
भूलि जाती मान के विधान जे अभाए हैं।
कहै रतनाकर पै ताकी हूँ न ताकी फाल,
अतुल उताल ह्वै इकाकी उठि धाए हैं॥
पच्छिराज-बेग कौ गुमान गारिवे कौ गुनि,
औसर अनौसर पियादे पाय आए हैं।
द्वै ही हाथ कीन्हैं काज और अवतारनि मैं,
चारौं हाथ वारन-उवारन मैं लाए हैं॥ ६॥

गुनि गज-भीर गह्यौ चीर कमला कौ तजि,
ह्वै हरि अधीर पीर-उमग अथाह मैं।
कहै रतनाकर चपल चक्र वाहि चले,
चक्र ग्राह-निग्रह के अमित उछाह मैं॥
पच्छीपति पौन चंचला सौं चख चंचल सौं,
चित्त हूँ सौं चौगुने चपल चलि राह मैं।
वारन उबारि दसा दारुन बिलोकि तासु,
हुचकन लागे आप करुना-प्रवाह मैं॥ ७॥

ढारै नैन नीर ना सँभारै साँस संकित सो,
जाहि जोहि कमला उतारयौ करै आरते।
कहै रतनाकर सुसकि गज साहस कै,
भाष्यौ हरैं हेरि भाव आरत अपार ते॥
तन रहिबे कौ सुख सब बहि जैहै हाय,
एक बूँद आँस मैं तिहारे जो बिचारते।
एक की कहा है कोटि करुनानिधान प्रान,
वारते सचैन पै न तुमकौं पुकारते॥ ८॥

(५) श्रीयमुनाष्टक

सूरज-सुता की सुभ सुखमा बखानै कौन,
रौन-रस-राँची साँची पुंज बरकत की।
छबि-मद-छाके नैन चंचल चलाँके मनौ,
लीने सुघराई कंज खंज फरकत की॥
झलकति अंग तैं उमंगि अनुराग-प्रभा,
तातैं सुभ स्याम-अंग रंग-ढरकत की।
मरकत मनि तैं मरीचि कढ़ै मानिक की,
मानिक तैं मानहु मरीचि मरकत की॥ १॥

ऐसी कछु बानक बनावति बिलच्छन कै,
जासौं डरि जम की जमाति टरि देति है।
कहै रतनाकर न माथ हुमसाइ सकै,
ताकैं हाथ हाय गिरिनाथ धरि देति है॥
जुग पतिनी कौ पति नीकौ रहि पावै नाहिं,
सोरह हजारि नारि भौन भरि देति है।
जमुना-जवैया पेखि पातक पुकारि कहैं,
भैया वह न्हात ही कन्हैया करि देति है॥ २॥

जम-दम सौँ तौ भाजि भभरि चले हौ उत,
कम जमुना की नाहिँ जातना-प्रनाली पै।
कहै रतनाकर पुरैहै अभिलाष भूरि,
पहुँचत ताके पूर कठिन कुचाली पै॥
घोँटिबौ परैगौ दाप दुसह दवानल कौ,
ओटिबौ परैगौ गिरि देह सुखपाली पै।
घर घर गोरस कौ जाँचिबौ परैगौ,
अरु नाचिबौ परैगौ काली नाग की फनाली पै॥ ३॥

देत जमराज सौँ दुहाई जमदूत जाइ,
जमुना प्रताप-ज्वाल जग यौँ बगारी है।
कहै रतनाकर न फटकन पावैँ पास,
चटकन लागै चट पाँसुरी-पत्यारी है॥
पापिनी के पातक पहार सब जारे देति,
बसती उजारे देति हमकि हमारी है।
तपन-तनूजा जल-रूपहू भई तौ कहा,
अगिनी अनूप यह भगिनी तिहारी है॥ ४॥

मुक्ति-खानि पानिप निहारि स्वाति-टेक टारि,
पीउ पीउ धुनि कै पपीहा सोर पारै है।
कहै रतनाकर त्यौँ बायस अघाइ नीर,
पाइ बलि-पायस कौ आयस नकारै है॥
मज्जत विहंग हू जो तरल तरंगनि मैँ,
ताकौ है विहंगपति वाहन जुहारै है।
विचरै सिखंडी जमुना के वनखंडनि जो,
ताकौ पच्छ-मंडन कन्हैया सीस धारै है॥ ५॥

जाइ रतनाकर पै जम यौं दुहाई देत,
अज अखिलेस सेसनाग पै सुवैया की।
देखौ जागि जमुना कुभाय के हिलोरे आप,
पाप-नाव बोरै मम पुर के जवैया की॥
विधि हूँ के रोष की न राखै परवाह रंच,
ऐसी भई सोख पाइ संगति कन्हैया की।
राखी मरजाद पाप पुन्य की सु राखी गनै,
साखी गनै बाबा की न भाषी गनै भैया की॥ ६॥

चित्रगुप्त कहत पुकारि जमराज सुनौ,
गाफिल ह्वै नैंकु निज गौरव गँवैयौ ना।
कहै रतनाकर कहत मत नीकौ हम,
पथ भगिनी कौं निज पुर कौ दिखैयौ ना॥
ऐसौ कछु ऊधम मचाइ है पधारत ही,
पापिनि कौं पाइ है पछेरि फेरि दैयौ ना।
जैयौ तुम आपु हीं तिलक-हित ताकैं कूल,
भूलि जमुना कौं जमलोक कौं बुलैयौ ना॥ ७॥

जम जमुना की होड़ निज निज काजनि मैं,
सकल समाजनि मैं बिसमय छावै है।
कहै रतनाकर करत एक जाँच भाल,
एक पै अजाँच बिन जाँच ही बनावै है॥
न्याय ही जरावैं दुहूँ संतति तपाकर की,
एक मातरा कौ भेद काज पै वँटावै है॥
जम तौ जरावै दापि पापिनि समूहनि कौं,
पापनि समूहनि कौं जमुना जरावै है॥ ८॥

---

(६) श्रीसुदामाष्टक

जै जै महाराज जदुराज दुजराज एक,
सुहृद सुदामा राजद्वार आज आए हैं।
कहै रतनाकर प्रगट ही दरिद्र - रूप
फटही लँगोटी बाँधि बाध सौं लगाए हैं॥
छीनता की छाप दीनता की थाप धारे देह,
लाठी के सहारैं काठी नीठि ठहराए हैं।
संकुचित कंध पै अधौटी सी कँधौटी किए,
तापर सछिद्र छोटी लोटी लटकाए हैं॥ १॥

दीन हीन सुहृद सुदामा की अवाई सुनैं,
दीनबंधु दहलि दया सौं मया - पागे हैं।
कहै रतनाकर सपदि अकुलाइ उठे,
भाइ गुरु - गेह के सनेह - जुत जागे हैं॥
आइ पौरि दौरि देखि दृगन अलेख दसा,
धीर त्यागि औरहू त्रिसेष दुख-दागे हैं।
ये तौ करुना सौं छकि छिन अगुवाने नाहिं,
जानि वे पिछाने नाहिं पलटन लागे हैं॥ २॥

(८) तुलसी अष्टक

साधन की सिद्धि रिद्धि सगुन अराधन की,
सुभग समृद्धि - बृद्धि सुकृत - कमाई की ।
कहै रतनाकर सुजस - कल - कामधेनु,
ललित लुनाई राम-रस-रुचिराई की ॥
सव्दनि की वारी चित्रसारी भूरि भायनि की,
सरवस सार सारदा की निपुनाई की ।
दास तुलसी की नीकी कविता उदार चारु,
जीवन अधार औ सिँगार कविताई की ॥ १ ॥

बिसद बिवेकी सुभ संत - हंस - बंसनि कौं,
महिमा महान मंजु मान सरवर की ।
कहै रतनाकर रसिक कवि - भक्त - काज,
राम-सुधा - सींची साख देव-तरुवर की ॥
भव-भय-भूत-भीति निखिल निवारन कौं,
जंत्र-मंत्र पाटी लिखी सिद्ध कर वर की ।
दास तुलसी की कल कविता पुनीत लसै,
जग-हित - हेत नीकी नीति नरवर की ॥ २ ॥

हृदय कमठ दृढ़ धारि-धर्म-ध्रुव-मंजुल-मंदर ।
अति अनंत बिस्वास-बासुकी-पास सबिस्तर ॥
बहु बिधि तर्क-बितर्क-सुरासुर करि सहकारी ।
आगम-निगम-पुरान-सिंधु मथि सुधा निकारी ॥
सुभ छंद-प्रबंधनि बाँधि बँध अजर अमर तासौं भर्यौ ।
इमि तुलसीदास ललाम यह राम-चरित-मानस कर्यौ ॥३॥

भाषा जगत प्रकास पूरि जड़ता-तम नास्यौ ।
उक्ति-जुक्ति-बहुरंग-बनज-बन बिमल बिकास्यौ ॥
रसिक मलिंदनि रंजि रुचिर रस पान करायौ ।
कपटी - क्रूर - उलूक - बृंद करि मूक चकायौ ॥
जिहिँ निर्गुन-सगुन-सुरूप-भ्रम-भाप-झाप-झाईँ झई ।
श्री तुलसिदास की अति अमल कल कविता सविता भई ॥४॥

बिमल बिसद बर रामचरित-मानस अन्हवायौ ।
अलंकार-ध्वनि-भेद सुभूषन बसन धरायौ ॥
भूरि भाव-सुभ-सुमन बासना-बिबिध-रूप धरि ।
सगुन-रूप-रस-रुचिर-रचित मोदक अर्पित करि ॥
बहु दिव्य-उक्ति-मनि-दीप सौँ उमगि उतारी आरती ।
इमि तुलसिदास भाषा-भवन चिर-थिर थापी भारती ॥५॥

हरिहर-चरित अनूप पूप मंजुल मन भाए ।
अपर प्रसंग-बिधान बिबिध पकवान पकाए ॥
साधु - माधुरी - गान पान रोचक सुखदाई ।
खल-दल-तीछन भाइ राय चटनी मिरचाई ॥
श्रीतुलसिदास जस चारु चिर लह्यौ बिसद कविता अजिर ।
स्तुतिधार रसिकनि-हित रुचिर थापि भूरि भंडार थिर ॥६॥

कबिता-सृष्टि उदार-चारु-रचना-बिरंचि बर ।
भक्ति-भाव-प्रतिपाल-बिस्नु मद-मोह-आदि-हर ॥
बोध-बिबुध-बिबुधेस सेस-ध्रुव-धर्म-धराधर ।
सब्द-सिंधु-बर-बरुन अर्थ-धन-धान्य-धनाकर ॥
भ्रम-बिटप-प्रभंजन कुमति-बन-अग्नि तेज-रबि सुजस-ससि ।
मुनि तुलसिदास सब-देव-मय प्रनवत रतनाकर हुलसि ॥७॥

(९) वसंताष्टक

एकाएक आई कहूँ बेहर वसंतवारी,
संतवारी मंडली मसूसि त्रसिवै लगी।
कहै रतनाकर दृगनि व्रज - वासिनि कैं,
रंगनि की विसद वहार वसिवै लगी ॥
मसकन लागे वर वागे अंग - अंगनि पै,
उरज उतंगनि पै चोली चसिवै लगी।
धुनि डफ-तालनि की आनि वसी प्राननि मैं,
ध्याननि मैं धमकि धमार धसिवै लगी ॥ १ ॥

पथिक तुरंत जाइ कंतहिँ जताइ दीजौ,
आइगौ वसंत उर अमित उछाह लै।
कहै रतनाकर न चटक गुलाबनि की,
कोप कै चढ़त तोप मैन वादसाह लै ॥
कोकिल के कूकनि की तुरही रही है वाजि,
विरहिनि भाजि कहौ कौन की पनाह लै।
सीतल समीर पै सवार सरदार गंध,
मंद मंद आवत मलिंद की सिपाह लै ॥ २ ॥

कोकिल की कूक सुनि हूक हिय माहिं उठै,
लूक से पलास लखि अंग भरसान्यौ है।
करिहौं कहा धौं धीर धरिहौं कहाँ लौं बीर,
पीरद समीर त्यौं सरीर सरसान्यौ है॥
पल पल दूजैं पल आवन की आस जियौ,
ताहू पर पत्र आइ त्रिष बरसान्यौ है।
अवधि बदी है कल आवन की कंत अरु,
आज आइ व्रज मैं बसंत दरसान्यौ है॥ ३॥

बारिधि बसंत बढ़्यौ चाव चढ़्यौ आवत है,
बिवस वियोगिनि करेजौ थामि थहरैं।
कहै रतनाकर त्यौं किंसुक - प्रसून जाल,
ज्वाल वड़वानल की हेरि हियैं हहरैं॥
तुम समुभावति कहा हौ समुभौ तौ यह,
धीरज-धरा पै अब कैसैं पग ठहरैं।
भौंर चहुँ ओर भ्रमैं एकौ पल नाहिं थम्हैं,
सीतल सुगंध मंद मारुत की लहरैं॥ ४॥

पौन चहुँ-आसी व्रजवासी चहुँघाँ सौं चले,
बादर गुलाल कौ बिसाल दरसत है।
कहै रतनाकर मुकेस कौ बिलास तामैं,
चंचला कौ चपल प्रकास परसत है॥
डफ - मिरदंग - चंग - बाजन - सुगाजन सौं,
आनँद अथोर मन-मोर सरसत है।
मैन-मघवान मघा-फाग फागही मैं ठानि,
आनि व्रज राग-अनुराग बरसत है॥ ५॥

त्रिन मधुसूदन के मधु की अवाई भई,
कुटिल कला है मधुकैटभ कुचाल की।
कहै रतनाकर जुन्हाई चंद्रहास भई,
त्रिबिध बयारि फुफुकारि फनि-जाल की॥
आनन कौ रंग उड़ै उड़त अबीर संग,
रंग-धार होति अंग झार ज्वाल-माल की।
किरच मुकेस की करद ह्वै करेजैं लगै,
दरद-दरेरे देति गरद गुलाल की॥ ६॥

थोरी थोरी वैस की अहीरनि की छोरी संग,
भोरी भोरी बातनि उचारति गुमान की।
कहै रतनाकर बजावति मृदंग चंग,
अंगनि उमंग भरी जोवन उठान की॥
घाघरे की घूमनि समेटि कै कछोटी किए,
कटि-तट फैंटि कोछी कलित पिधान की।
झोरी भरे रोरी घोरि केसरि कमोरी भरे,
होरी चली खेलन किसोरी बृषभान की॥ ७॥

आयौ जुरि उतै समूह हुरिहारनि कौ,
खेलन कौं होरी बृषभान की किसोरी सौं।
कहै रतनाकर त्यौं इत ब्रजनारी सबै,
सुनि सुनि गारी गुनि ठठकि ठगोरी सौं॥
आँचर की ओट ओटि चोट पिचकारिनि की,
धाइ धँसी धूँधर मचाइ मंजु रोरी सौं।
ग्याल-बाल भागे उत भभरि उताल इत,
आपै लाल गहरि गहाइ गयौ गोरी सौं॥ ८॥

(१०) ग्रीष्माष्टक

छायौ रितु ग्रीषम कौ भीषम प्रचंड दाप,
जाकी छाप सब छिति-मंडल सही लगी।
कहै रतनाकर बयारि वारि सीरे कहूँ,
पैयै नैंकु एक रहै अहक यही लगी॥
करवट लै लै बरवट ही बिताई राति,
पलक लगाए हूँ न पलक रही लगी।
अबहीं सिरान्यौ ना सँताप कलही कौ फेरि,
ताप सौं तपाकर के तपन मही लगी॥ १॥

आवा सौ अकास औनि तावा सी तपति तीखी,
दावा सौं दुगुनि झारझरस झलाका मैं।
कहै रतनाकर गई है रहि रंचक हूँ,
झपट न बाज मैं न झमक बलाका मैं॥
हेरत फिरत वारि बृच्छ कहलाने सबै,
होति अठकौसल कुरंगी औ अलाका मैं।
मंजुल मलाका हू न हिय सियरावै नैंकु,
तपित सलाका भई जेठ की जलाका मैं॥ २॥

ग्रीषम कौ भीषम प्रताप जग जाग्यौ भए,
सीत के प्रभाव भाव भावना भुलानी के।
कहै रतनाकर त्यौँ जीवन भयौ है जल,
जाके विना मानस सुखात सब प्रानी के॥
नारी नर सकल विकल विललात फिरैँ,
भूले नेम प्रेमहूँ की कलित कहानी के॥
ताहू सौँ न काहू कौ हियौ है सरसात रंच,
पंच-सरहूँ के भए सर बिन पानी के॥ ३॥

सीरी सी लगति बिरहागिनि वियोगिनि कौं,
जोगिनि कौँ होत पंच-तापहू सुहायौ है।
कहै रतनाकर तपाकर ससी कौँ जानि,
रैनहूँ चकोरी कैँ न चैन चित आयौ है॥
सोखे लेत बारि सबै भानुहूँ पिपासित ह्वै,
त्रासित ह्वै हिमगिरि-गैल धरि धायौ है।
प्रबल प्रचंड भूरि भीषम अखंड-दाप,
ग्रीषम के ताप कौँ प्रताप जग छायौ है॥ ४॥

नीर-भरी-नहर-लहर जो चहूँघाँ हुती,
ताहि ताइ तुरत सुखाइ कियौ माटी है।
कहै रतनाकर हिमोपल की रेलारेल,
हेलि हठि पैठति निरंकुस निराटी है॥
ग्रीषम की भीषम अनीकनी दपेटे लेति,
फोरि गढ़ गहव उसीरनि की टाटी है।
आबवारे-फव्वत-फुहारे-बान-धारहूँ सौँ,
व्यजन-कुठारहूँ सौँ कटति न काटी है॥ ५॥

फटिक-सिलानि-रचे राजत अनूप हौज,
मौज सौं फुहारे फबैं आठहूँ पहल मैं।
कहै रतनाकर बिछाइ तिन पास सेज,
सुखद अँगेजि कै सुगंध की चहल मैं॥
छात छिति छिरकौं कपूर चोवा चंदन सौं,
सीत छिपी आनि जहाँ ग्रीषम दहल मैं।
अंग अग अमित उमंग की तरंग भरे,
दोऊ सुख लहत उसीर के महल मैं॥ ६॥

टटकी उसीरनि की टाटी चहुँ ओर लगीं,
सराबोर सुखद सुगंध बहतोल मैं।
कहै रतनाकर त्यौं फहरैं गुलाब-बारे,
फबत फुहारे मनि-हौजनि अमोल मैं॥
घसि घनसार चारु चंदन कौ पंक तासौं,
घेरि राखिबे कौं सीत समर-कलोल मैं।
प्यारौ रचै प्यारी के उरोज माहिं मक्र-व्यूह,
चक्र-व्यूह प्यारी रचै प्यारे के कपोल मैं॥ ७॥

ग्वाल बाल गहकि गुपाल के जुरे हैं इत,
उत ब्रज-बाल राधिका की चलि आवैं हैं।
कहै रतनाकर करत जल-केलि सबै,
तन मन जीवन की तपनि सिरावैं हैं॥
कर पिचकोनि हचकीनि सौं हथेरिनि की,
छींटैं चहुँ कोद छाइ मोद उपजावैं हैं।
मंजु मुख मोरि मुलकावतिं दृगंचल कौं,
अंचल कैं ओट चोट चंचल चलावैं हैं॥ ८॥

---

(११) वर्षाष्टक

पावस के प्रथम पयोद की परत बूँदें,
औरै ओप उमड़ि अकास छिति छ्वै रहीं।
रंग भयौ बूढ़नि अनूढ़नि अनंग भयौ,
अंग उठि आनँद तरंग दुख ध्वै रहीं॥
सूहे साजि सुघर दुकूल सुख-फूलि-फूलि,
चौहरी अटा पै चढ़ी चंद-मुखी ज्वै रहीं।
धूम सुखमा की झूम-झूम अलि-पुंजनि की,
अंबनि की डार तैं कदंबनि पै ह्वै रहीं॥ १॥

अमित अकार औ प्रकार के पयोद-पुंज,
छहरैं छबीले छिति छोरनि छए छए।
कहै रतनाकर अनूप रूप-रंगनि के,
बदलत ढंग दृग देखत दए दए॥
बिबिध बिनोद बारि-बूँदनि के ठानैं कहूँ,
पावक-प्रमोद कहूँ चपला चए चए।
निज मन-मोहन के मानौं मन मोहन कौं,
मदन खिलारी खेल खेलत नए नए॥ २॥

(१२) शरदष्टक

बिकसन लागे कल कुमुद-कलाप मंजु,
मधुर अलाप अलि-अवलि उचारै है।
कहै रतनाकर दिगंगना-समाज स्वच्छ,
कास-मिसि हास के बिलासनि पसारै है॥
क्वार-चाँदनी मैं रौन-रेती की बहार हेरि,
याही निरधार ही हुलास भरि धारै है।
जोति दल बादल के परब पुनीत पाइ,
कूल कालिंदी के चंद रजत बगारै है॥ १॥

पौन अति सीतल न तपत सुगंध-सने,
मंद मंद बहत अनंद-देन हारे हैं।
कहै रतनाकर सुकुसुमित कुंजनि मैं,
बैठि उठि भ्रमत मलिंद मतवारे हैं॥
छिटकति सरद-निसा की चाँदनी सौं चारु,
दीपति के पुंज परैं उचटि उझारे हैं।
स्वच्छ सुखमा के परि पूरित प्रभा के मनौ,
सुंदर सुधा के फटि फबत फुहारे हैं॥ २॥

पूरि रह्यौ छिति तैं अकास लौं प्रकास-पुंज,
जामैं लखि रजत-पहार गुमड़ी परै।
पारद अपार रतनाकर तरंग की सी,
सुखमा अभंग चहुँ घेर घुमड़ी परै॥
चमकति रेती चारु जमुना - कछार - धार,
विपिन अगार झलमल झुमड़ी परै।
राखी संचि चंद्रिका मनौ जो बरषा भर की,
सोई चंद तैं है सतचंद उमड़ी परै॥ ३॥

साज लखिबे कैं काज आए ब्रज-राज तहाँ,
सिमट्यौ समाज जहाँ सारदी सुमेला कौ।
कहै रतनाकर बिलोकि राधिका कौ रूप,
राँच्यौ रंग अंगनि अनंग के झमेला कौ॥
ताकी दिव्य दीपति कौ अंतर सँचार भयौ,
वार भयौ तीछन कटाच्छ-सेल-रेला कौ।
चाहि झझिया कौ घट पूजत सचोप ताहि,
घट झझिया कौ बन्यौ घट अलबेला कौ॥ ४॥

रंग रंग साजे चीर अंगना उमंग-भरी,
तीर जमुना कैं रंग रुचिर रचावैं हैं।
कहै रतनाकर सुघट झझिया कौ घट,
पूजि पूजि मोद उर-अंतर खचावैं हैं॥
गावैं गीत सरस बजावैं मिलि ताल सबै,
छैलनि की छाती काम-तापनि तचावैं हैं।
घूमि घूमि चारौं ओर कटि-तट दूमि दूमि,
झुकि झुकि झूमि झूमि झूमर मचावैं हैं॥ ५॥

विसद वहार कार-राका की निहारि कूल,
भूलि गति जमुना-प्रवाह जकि ज्वै रह्यौ।
कहै रतनाकर त्यौँ प्रकृति समाजनि की,
सुखमा अमंद सौँ अनंद-रस च्वै रह्यौ॥
चंद-बदनीनि-संग रास ब्रज-चंद रच्यौ,
छबि के प्रकास सौँ अकास लगि छ्वै रह्यौ।
चेत चलिवे की पट मास लौँ न आई इमि,
एते चंद चाहि चंद चकपक ह्वै रह्यौ॥ ६॥

पद थरकाइ फरकाइ भुजमूल भरी,
मंद मुसुकानि भौँह तानि तमकति हैँ।
लंक लचकाइ चल अंचल उचाइ लोल,
कुंडल कपोलनि झुमाइ झमकति हैँ॥
स्वेद-सनी-बदन मदन-सुख-देनी वर,
वेनी वाँधि किँकिनी सहाँस हमकति हैँ।
करतिँ अलाप स्याम-संग ब्रज-बाम मंजु,
मेघ-मेखला मैँ चंचला सी चमकति हैँ॥ ७॥

नचत लचाइ लंक, लोचन चलाइ बंक,
करत प्रकास रासि ब्रज-जुवतीनि की।
आनँद-अमंद-चंद उमँग बढ़ावै मनौ,
रस - रतनाकर - तरंग - अवलीनि की॥
काकौ मन मोहत न जोहत जुन्हाई माहिँ,
छहर कन्हाई की मुकट-पँखुरीनि की।
छबि की छटक पीत-पट की चटक चारु,
लटक त्रिभंग की मटक भृकुटीनि की॥

---

(१३) हेमंताष्टक

विकसन लागे मुचुकुंद लवली औ लोध,
कछु परसौं तैं सरसौं हूँ दलिनी भई।
कहै रतनाकर मनोज - ओज पोषन कौं,
वन उपवन मैं प्रफुल्ल फलिनी भई ॥
औरै और कलिनि खिलावत समीर हेरि,
माप मन मानि कै मलिन नलिनी भई।
हँवँत मैं काम की अपूरव कला सौं चकि,
कोकिल भुलाने कूक मूक अलिनी भई ॥ १ ॥

पौन पान पानी भए सीतल सुहाए स्वच्छ,
असन - सवाद भयौ सबही मिठाई सौ।
कहै रतनाकर विचित्र चित्र - सारी माहिं,
उठत सुगंध - धूम मौज मन-भाई सौ ॥
विविध विलासनि के हरप - हुलासनि सौं,
सुखद वसंत होत सुकृत - कमाई सौ।
वाम अभिराम सी सुहाई घाम देह लगै,
लागत सनेह नए नेह की निकाई सौ ॥ २ ॥

धारि कै हिमंत के सजीले स्वच्छ अंबर कौं,
आपने प्रभाव कौ अडंबर बढ़ाए लेति ;
कहै रतनाकर दिवाकर - उपासी जानि,
पाला कंज-पुंजनि पै पारि मुरझाए लेति ॥
दिन के प्रताप औ प्रभा की प्रखराई पर,
निज सियराई - सँवराई - छवि छाए लेति ।
तेज-हत-पति-मरजाद-सम ताकौ मान,
चाव-चढ़ी कामिनी लौं जामिनी दबाए लेति ॥ ३ ॥

अंतपुर पैठि भानु आतुर कढ़ै न वेगि,
चिर निसि - अंक मैं निसापति डरे रहैं ।
कहै रतनाकर हिमंत कौ प्रभाव ही सौं,
संत-मनहूँ मैं भाव और ही भरे रहैं ॥
नर पसु पच्छी सुर असुर समाज आज,
काम अरचा मैं निसि-बासर परे रहैं ।
ह्वै कै कुसुमायुध के आयुध उबारू अब,
सब धरिनी ही मैं धरोहर धरे रहैं ॥ ४ ॥

भानुहूँ कौ लागी प्रीति अगिनि दिगंगना सौं,
सीत-भीति जागी इमि सकल समंत कौं ।
कहै रतनाकर रहत न अकेले बनै,
मेले बनै रसिहूँ तिया मौं दोषवंत कौं ॥
हिम की हवा सौं हालि, अचल समाधि त्यागि,
लपटनि - लालसा - लसित लखि कंत कौं ।
पाट की पिछौरी बाहु दाहिनैं पछौरी किए,
गौरी लगी हुलसि अर्मीमन हिमंत कौं ॥ ५ ॥

हेरत हिमंत के अनंत प्रभुता कौ दाप,
भानु के प्रताप की प्रभाहूँ गरिबै लगी।
कहै रतनाकर सुधाकर किरन फेरि,
काम के जिवावन कौ जोग करिबै लगी॥
बदलन बाने सब निज मनमाने लगे,
चारौं ओर और ही बयार भरिबै लगी।
जोगिनि के होस पै भरोस पै बियोगिनि के,
रोस पै सँजोगिनि के ओस परिबै लगी॥ ६॥

बिचलत मान जानि हेँवत अवाई माहिँ,
ढीली परि सकल हठीली सकुचाई हैं।
कहै रतनाकर सुलाज राखिबै कैं काज,
ताके रोकिबे की वृथा बिधि बहु ठाई हैं॥
डारि राखे परदे चहूँघाँ मंजु मंदिर मैं,
अगर सुगंध तैं दसौं दिसि रुँधाई हैं।
चोली कसमीरी कसी कंपित करेजनि पै,
सेजनि पै साजि धरी दुहरी दुलाई हैं॥ ७॥

गावैं गीत अंगना प्रवीन कर बीन लिए,
आनँद-उमंग-भरी रंग के भवन मैं।
कहै रतनाकर जवानी की उमंग होइँ,
तंग होइँ बसन सजीले तने तन मैं॥
सुखद पलँग होइँ दुहरी दुलाई लगी,
आनँद अभंग तब होइ अगहन मैं।
नूपुर कैं संग संग बाजत मृदंग होइँ,
रंग होइ नैननि तरंग होइ मन मैं॥ ८॥

(१४) शिशिराष्टक

फूली अवली हैं लोध लवली लवंगनि की,
धवली भई है स्वच्छ सोभा गिरि-सानु की।
कहै रतनाकर त्यौं मरुवक फूलनि पै,
फूलनि सुहाई लगै हिम-परमानु की॥
साँझ-तरनी औ भोर-तारा सी दिखाई देति,
सिसिर कुही मैं दबी दीपति कृसानु की।
मीत-भीत हिय मैं न भेद यह भान होत,
भानु की प्रभा है कै प्रभा है सीतभानु की॥१॥

धाइ धाइ सिंधुर मदंध फूले लोधनि सौं,
गंध-लुब्ध ह्वै कै कंध रगरत गात हैं।
कहै रतनाकर प्रभात अरुनाई माहिं,
बाघनि के लेरुवा लरत लुरियात हैं॥
उठि उठि धूम बनबासिनि के बासनि तैं,
ग्रामनि तैं सीत के तहाईं मँडरात हैं।
पंछीगन सीम काढ़ि बिटप-बसेरनि तैं,
उमहि फदूक मौन गहि रहि जात हैं॥ २॥

सिसिर खिलारी भयौ मिसिर मदारी महा,
करतब आपनौ अनूपम उघारै है।
कहै रतनाकर अखिल हरियारी पर,
कलित कपूर-धूर बिसद बगारै है॥
पावक पै फूँकि कै प्रभाव निज पानी करै,
पानी कौं परसि पल उपल सुधारै है।
प्रबल-प्रचार सीतकार की करामत सौं,
भानु कौं पलटि सीत-भानु करि डारै है॥३॥

छायौ इमि सिसिर-अतंक महि-मंडल मैं,
अंक माहिँ संकित न बाल ठुनकत है।
कहै रतनाकर न बिकसत बोल नैकुँ,
कोकिल न कूजत न भौंर गुनकत है॥
इमि हिम-गाला बरसत चहुँ ओरनि तैं,
ताकौ कहि आवत कसाला-गुन कत है।
सीत-भीत अतुल तुलाई करिबे कौ मनौ,
धुनक बिधाता तूल-धाप धुनकत है॥४॥

ह्वै कै भय-भीत सीत प्रबल प्रभावनि सौं,
पाला माहिँ मेदिनी सुगात निज ग्वै रही।
कहै रतनाकर तपाकर कौं चंद जानि,
मानि सुख चकई-वियोग-ताप ग्वै रही॥
जोगी भयौ चाहत सँजोगी, भोगी जोगी भयौ,
मति जुवती मैं पंच-पावक मैं प्वै रही।
पैठे जात सिमिट भवानी के पटंबर मैं,
अंबर की चाह यौं दिगंबर कौं ह्वै रही॥५॥

मृगमद - केसर - अगर - धूप - धूम काँपि,
सीत-भीत काँपनि की रीतिहिँ बुझावैं हैं।
कहै रतनाकर त्यौं परदे दरीचिनि के,
हिलि हिलि हिलन अजोगता सुझावैं हैं॥
संग-सुख-संपति न दंपति बिहाइ सकैं,
प्रीति सौं परस्पर यौं भाषि अरुझावैं हैं।
सिसिर-निसा मैं निसरन कौ न बाह कहूँ,
गिलिम गलीचा पाइ गहि समुझावैं हैं॥६॥

मृगमद - केसर - अगर - धूम जालनि कौ,
सुखद दुसालनि कौ जदपि सहारौ है।
कहै रतनाकर पै आनत बिचार आन,
काँपि जात गात सब हहरि हमारौ है॥
तन की कहा है अब आनि मनहूँ पै पर्यौ,
ऐसौ कछु सिसिर-प्रभाव कौ पसारौ है।
प्रानहूँ तैं प्यारौ मान लागत सखी पै आज,
मानहूँ तैं प्यारौ लगै पीतपटवारौ है॥७॥

मंजुल मकंदनि के कोंपल सचोप लखैं,
लागे गान गुनन मलिंद छिन द्वैक तैं।
कहै रतनाकर गुलाबनि मैं बौंड़ी लगीं,
औंड़ी ओप औरही अनूप इन द्वैक तैं॥
केसरि - कुरंगसार - लेप न सुहात अंग,
कन घनसार के मिलावै किन द्वैक तैं।
दाबी रहै हाँसनि कौ हुमस न ही मैं अब,
फाबी फाब सीत पै गुलाबी दिन द्वैक तैं॥८॥

---

(१५) प्रभाताष्टक

ऊषा कौ प्रकास लाग्यौ लौकन अकास माहिँ,
सुमन बिकास कैँ हुलास भरिबे लगे।
कहै रतनाकर त्यौँ बिटप निवासनि मैँ,
द्विजगन चेति कसमस करिबे लगे॥
मुनिजन लागे लेन चुभकी गगन गंग,
गौन पौन-पथिक हिये मैँ धरिबे लगे।
तमचुर-बंदी धरे अरुन-सुवाने सीस,
ताकौ राज-रोर चहुँ ओर भरिबे लगे॥१॥

साजे सीस बानौ तमचुर ज्यौँ प्रभाकर कौ,
प्रगट पुकारि तासु आगम जनायौ है।
कहै रतनाकर गुलाब चटकारी देत,
दिसि बिदिसानि त्यौँ सुगंध सरसायौ है॥
आयौ अगवानी कौँ समीर धीर दक्खिन कौ,
चहकि बिहंग मंगलीक गान गायौ है।
ज्यौँ ज्यौँ व्योम बढ़त प्रकास-पुंज पूरब सौँ,
त्यौँ त्यौँ तम-तोम जात पच्छिम परायौ है॥२॥

द्विज-गन लाग्यौ मंत्र पढ़न सजीवन औ,
सुमन-समूह दै सचोप चुटकी उठ्यौ।
कहै रतनाकर रुचिर रस रंग पाइ,
उपबन जंगल ह्वै मंगलमई उठ्यौ॥
प्रानद प्रभात-परमानँद अमंद पाइ,
मंद मलयानिल यौं बरसि अमी उठ्यौ।
आछे अंगधारिनि कौ चरचा-प्रसंग कहा,
नवल उमंग सौं अनंग पुनि जी उठ्यौ॥३॥

पेखन कौं प्रात-प्रभा उपबन बृंदनि की,
नंदन की सोभा सब सिमिटि इतै रही।
कहै रतनाकर त्यौं प्रकृति निछावर कौं,
ओस मुकतालीं बगराइ अमितै रही॥
मंद मलयानिल कौ परस-प्रमोद पाइ,
ललित बिनोद बल्ली बिटप हितै रही।
बिबस बिसारि चकवा सौं मिलिबे कौ चाव,
चकई चहूँघाँ चित चकित चितै रही॥४॥

प्यारे प्रात आवन की बिसद बधाई देत,
डोलैं मंद मारुत सुगंध सुचि धारे हैं।
कहै रतनाकर सु आहट-प्रमोद पाइ,
गाइ उठे बिपुल बिहंग चहकारे हैं॥
फूलनि पै मंजु महि-हरित-दुकूलनि पै,
ओस-कन मूलैं झलमल-दुतिवारे हैं।
स्वच्छ सुखमा के मनौ छूटत फुहारे ताके,
बिंदु छटकारे चहुँ-ओरनि बगारे हैं॥५॥

जाके अरुनच्छद उमंग कौ प्रसंग पाइ,
सुखद सुगंध पौन मंद मंद थरके।
कहै रतनाकर सुमन-गन फूलि उठे,
दिग बनितानि पै अनूप रूप छरके॥
करत जुहार चारु चहकि उचाइ ग्रीव,
चाय-भरे चपल बिहंग फिरि फरके।
आयौ देत दिवस बधायौ वर हेम-हंस,
मोती मंजु चुनत सु जोती-पुसकर के॥६॥

चंचरीक चाय-भरे चाँचरि मचाई चारु,
पच्छिनि धमार राग रुचिर उचार्यौ है।
कहै रतनाकर सुमन-गन फूलि फूलि,
परिमल-पुंज लै अबीर मंजु पार्यौ है॥
सुखमा बिलोकि वल्ली बिटप बिनोद-भरे,
झूमि झूमि आनँद-हुलास-आँस ढार्यौ है।
मेलत गुलाल-रंग दिग-बनितानि अंग,
राग भर्यौ भानु फाग खेलत पधार्यौ है॥७॥

लागे गान करन बिहंगम-समाज सबै,
रंग भूमि रूरौ सुखमा कौ साज ध्वै गयौ।
कहै रतनाकर सचेत ह्वै सुमंच बैठि,
कौतुक निहारि मंजु मोद मन म्वै गयौ॥
देखत हीं देखत दिगंगना सु अंग पै,
बाजीगर-भानु कौ कला कौ कर छ्वै गयौ।
नीलम तैं मानिक, पदुमराग मानिक तैं,
तातैं मुकता ह्वै पुनि हीरा-हार ह्वै गयौ॥८॥

---

(१६) संध्याष्टक

बालपन बिसद बिताइ उदयाचल पै,
संबलित कलित कलानि ह्वै उमाहै है।
कहै रतनाकर बहुरि तम-तोम जीति,
उच्च-पद आसन लै सासन उछाहै है॥
पुनि पद सोऊ त्यागि तीसरे बिभाग माहिँ,
न्यून-तेज ह्वै कै सून पास मैँ निबाहै है।
जानि पन चौथौ अब भेप कै भगौँ हौँ भानु,
अस्ताचल थान मैँ पयान कियौ चाहै है॥१॥

छाई छबि स्यामल सुहाई रजनी-मुख की,
रंच पियराई रही ऊपर मुरेरे के।
कहै रतनाकर उमगि तरु-छाया चली,
बढ़ि अगवानी हेत आवत अँधेरे के॥
घर घर साजैँ सेज अंगना सिँगारि अंग,
लौटत उमंग भरे बिछुरे सवेरे के।
जोगी जती जंगम जहाँ हीँ तहाँ डेरे देत,
फेरे देत फुदकि बिहंगम बसेरे के॥

सैल तैं पसरि कर-निकर सुधाकर के,
आनि जल-तल पै लखात लहकत हैं।
कहै रतनाकर प्रभाकर प्रभा के दाम,
छोरि छिति कछुक अकास ठहकत हैं॥
राते अरविंद कैं पराग मकरंद जात,
कैरव पै मंजुल मलिंद महकत हैं।
अहकत आह कै त्रराक चक्रवाक दाहि,
चाहि चहुँ ओर सौं चकोर चहकत हैं॥ ३॥

जानि नभनाथ कौ पयान सैन-मंदिर कौं,
मंगलीक गान मैं दुजाली भूरि भूली है।
कहै रतनाकर बिनोद चहुँ कोद बढ़्यौ,
कामिनी तरुनि पै प्रमोद-प्रभा मूली है।
मोती-माल वारतीं दिगंगना उमंग भरीं,
तारा ह्वै अकास-अंगना सो परै रूली है।
प्राची मुख सेत उत खेत चाँदनी है कियौ,
तूली साजि अंबर प्रतीची इत फूली है॥४॥

आजु अति अमल अनूप सुख-रूप रची,
सरद-निसामुख की सुखमा सुहाति है।
कहै रतनाकर निसाकर दिवाकर की,
एकै दुति दोऊ दिसि माहँ दरसाति है॥
कुमुद सरोज अध-मुकुलित देखि परैं,
चाय-बोरी चहकि चकोरी चकराति है।
चलि चलि चकई चपल दुहुँ ओर चाहि,
चकित कराहि औ उमाहि रहि जाति है॥५॥

तुंग कुच-स्रृंग-सैल-सिखर सराहैं अजौं,
मान जुवती तन मैं थान परषत है।
जानि यह उदित निसापति मनोज-बंधु,
धिक निज धाक मन मानि मरषत है॥
लाल ह्वै बिसाल कर प्रखर पसारि वेगि,
जासौं जोम-धारिनि कौ धीर धरषत है।
मुकुलित कुमुद-मियान तैं अतंक-जुत,
बंक भ्रमरावली-कृपान करषत है॥६॥

राग की बगीची जो सँजोगिनि प्रतीची गनै,
स्रोनित-उलीची सो बियोगिनि बतावै है।
कहै रतनाकर चकोरनि अनंद देत,
सोई चंद कोकनि कैं ओक सोक छावै है॥
मनि-गन लागत तुम्हैं तो उड़गन आली,
फनि मनि-माली लौं हमैं सो डरपावै है।
खेलौ हँसौ जाइ जाहि भावत सलोनी साँझ,
ह्याँ तौ जरे माँझ सो लुनाई लोन लावै है॥७॥

लागै रजनी-मुख की सुखमा सुहाई ताहि,
जाहि सुखरासि की न आस टरि गई होइ।
कहै रतनाकर हिमाकर-मुखी कैं हाँस,
दिवस-कसाला-जगी ज्वाला हरि गई होइ॥
पूछौ पर जाइ वा बियोगी के हिये सौं नैंकु,
जाकी थाकी पीडँरी भभरि भरि गई होइ।
उठत न होइ पाय गाँय-सामुहैं लौं आइ,
धाइ मग माँझ हाय साँझ परि गई होइ॥८॥

———

वीराष्टक

(१) श्रीकृष्ण-दूतत्व

बोधन कैं काज जदुराज दुरजोधन कौं,
पाँचौ महाजोधनि के मत सुनि ठानी है।
कहै रतनाकर मिलाप के अलाप हेत,
आप चलिवे की चारु चाह चित आनी है॥
एते माहिं द्रौपदी दुखारी दुरी दीठि परी,
सारी संधि साधन की साध सिथिलानी है।
सानी कछु आँस मैं उसास मैं उड़ानी कछू,
छूटे केस-पास मैं उसेस अरुझानी है॥१॥

बोधन मदंध अंध्र-पूत दुरजोधन कौं,
दीनवंधु आनि रथ-कंध ठहरत हैं।
कहै रतनाकर तरंगित उमंग-रंग,
स्याम-घन अंग छनदा लौं छहरत हैं॥
निस्वन-निनाद औ असंख संख-बाद मिले,
जान आदि घुमड़ी घटा लौं घहरत हैं।
थहरत चक्रपानि सारँग भुजा पै सज्यौ,
अच्छय धुजा पै पच्छिराज फहरत हैं॥२॥

(२) भीष्म-प्रतिज्ञा

भीषम भयानक पुकार्‌यौ रन-भूमि आनि,
छाई छिति छत्रिनि की गीति उठि जाइगी।
कहै रतनाकर रुधिर सौं रुँधैगी धरा,
लोथनि पै लोथनि की भीति उठि जाइगी॥
जीति उठि जाइगी अजीत पंडु-पूतनि की,
भूप दुरजोधन की भीति उठि जाइगी।
कैतौ प्रीति-रीति की सुनीति उठि जाइगी, कै
आज हरि-प्रन की प्रतीति उठि जाइगी॥ १॥

पारथ बिचारौ पुरुषारथ करैगौ कहा,
स्वारथ - समेत परमारथ नसैहौं मैं।
कहै रतनाकर प्रचार्‌यौ रन भीषम यौं,
आज दुरजोधन - दुख दूरि दैहौं मैं।
पंचनि कैं देखत प्रपंच करि दूरि सबै,
पचनि कौ स्वत्व पंचतत्त्व मैं मिलैहौं मैं।
हरि-प्रन-हारी-जस धारि कै धरा है सांत,
सांतनु कौ सुभट सपूत कहवैहौं मैं॥ २॥

मुंड लागे कटन पटन काल-कुंड लागे,
रुंड लागे लोटन निमूल कदलीनि लौं।
कहै रतनाकर वितुंड-रथ-बाजी-झुंड,
लुंड मुंड लोटैं परि उछरिति मीनि लौं॥
हेरत हिराए से परस्पर सचिंत चूर,
पारथ औ सारथी अदूरदरसीनि लौं।
लच्छ लच्छ भीषम भयानक के बान चले,
सबल सपच्छ फुफुकारत फनीनि लौं॥ ३॥

भीषम के बाननि की मार इमि माँची गात,
एकहूँ न घात सव्यसाची करि पावै है।
कहै रतनाकर निहारि सो अधीर दसा,
त्रिभुवन-नाथ-नैन नीर भरि आवै है॥
बहि बहि हाथ चक्र-ओर ठहि जात नीठि,
रहि रहि तापै वक्र दीठि पुनि धावै है।
इत प्रन-पालन की कानि सकुचावै उत,
भक्त-भय-घालन की बानि उमगावै है॥ ४॥

छूट्यौ अवसान मान सकल धनंजय कौ,
धाक रही धनु मैं न साक रही सर मैं।
कहै रतनाकर निहारि करुनाकर कैं,
आई कुटिलाई कछु भौंहनि कगर मैं॥
रोकि झर रंचक अरोक वर बाननि की,
भीषम यौं भाष्यौ मुसकाइ मंद स्वर मैं।
चाहत विजै कौं सारथी जौ कियौ सारथ, तौ
वक्र करौ भृकुटी न, चक्र करौ कर मैं॥ ५॥

बक्र भृकुटी कै चक्र ओर चप फेरत हीं,
सक्र भए अक्र उर थामि थहरत हैं।
कहै रतनाकर कलाकर अखंड मंडि,
चंडकर जानि प्रलय खंड ठहरत हैं।
कोल कच्छ कुंजर कहलि हलि काढ़ैं खीस,
फननि फनीस कैं फुलिंग फहरत हैं।
मुद्रित तृतीय दृग रुद्र मुलकावैं मीड़ि,
उद्रित समुद्र अद्रि भद्र भहरत हैं ॥ ६ ॥

जाकी सत्यता मैं जग-सत्ता कौ समस्त सत्व,
ताके ताकि प्रन कौं अतत्त्व अकुलाए हैं।
कहै रतनाकर दिवाकर दिवस ही मैं,
झंप्यौ कंपि झूमत नछत्र नभ छाए हैं॥
गंगानंद आनन पै आई मुसकानि मंद,
जाहि जोहि बृंदारक-बृंद सकुचाए हैं।
पारथ की कानि ठानि भीषम महारथ की,
मानि जब विरथ रथांग धरि धाए हैं॥ ७ ॥

ज्यौंही भए विरथ रथांग गहि हाथ नाथ,
निज प्रन-भंग की रही न चित चेत है।
कहै रतनाकर त्यौं संग हीं सखाहूँ कूदि,
आनि अर्यौ मौं हूँ हाहा करत सहेत है॥
कलित कृपा और तृपा द्विमग समाहे पग,
पलक उझ्यौई रह्यौ पलक-समेत है।
धरन न देत आगैं अरुझि धनंजय औ,
पाछैं उभय भक्त-भाव परन न देत है॥ ८ ॥

——

(३) वीर अभिमन्यु

धरम-सपूत की रजाइ चित-चाही पाइ,
धायौ धारि हुलसि हथ्यार हरवर मैं।
कहै रतनाकर सुभद्रा कौ लड़ैतौ लाल,
प्यारी उत्तराहू की रुक्यौ न सरवर मैं॥
सारदूल-सावक वितुंड-झुंड मैं ज्यौं त्यौंहीं,
पैठ्यौ चक्रव्यूह की अनूह अरवर मैं॥
लाग्यौ हास करन हुलास पर वैरिनि के,
मुख मंद हास चंदहास करवर मैं॥ १॥

वीरनि के मान औ गुमान रनधीरनि के,
आन के विधान भट-वृंद वमसानी के।
कहै रतनाकर विमोह अंध-भूपति के,
द्रोह के सँदोह सूत-पूत अभिमानी के॥
द्रोन के प्रबोध दुरवोध दुरजोधन के,
आयु-औधि-दिवस जयद्रथ अठानी के।
कौरव के दाप ताप पांडव के जात वहे,
पानी माहिं पारथ-सपूत की कृपानी के॥ २॥

पारथ-सपूत की कृपान की अनोखी काट,
देखि ठाट वैरिनि के ठठकि ठरे रहैं।
कहै रतनाकर सु सक्र असनी लौँ पिल्यौ,
चक्र - व्यूहहू के गुन गौरव गरे रहे॥
मानि निज वीरनि की भीर कौं न गन्य न्यून,
द्रोन आदि वादि भूरि भ्रम सौँ भरे रहे।
खंडे रिपु-झुंडनि के मुंड जे अखंडित ते,
मंडित वरीक रुंड - ऊपर धरे रहे॥३॥

चक्रव्यूह अचल अभेद भेदि विक्रम सौँ,
आपुहीँ बनावै बाट आपनी सुढंगी है।
कहै रतनाकर रुकै न कहूँ रोकैँ रंच,
झौंके झेलि पावत न कोऊ ज्वान जंगी है॥
विमुख समूह जम-जूह के हवालैँ होत,
सनमुख सूरनि बनावै सुरसंगी है।
पानी गंग-धार कौ कृपानी मैँ धर्यौ है मनौ,
जाहि करि अंगी होत अरि अरधंगी है॥ ४॥

वीर अभिमन्यु की लपालप कृपान वक्र,
सक्र-असनी लौँ चक्रव्यूह माहिँ चमकी।
कहै रतनाकर न ढालनि पै खालनि पै,
झिलिम झपालनि पै क्यौँ हूँ कहूँ ठमकी॥
आई कंध पै तौ बाँटि बंध प्रतिबंध सबै,
काटि कटि-संधि लौँ जनेवा ताकि तमकी॥
सीस पै परी तौ कुंड काटि मुंड काटि फेरि,
रुंड के दुखंड कै धरा पै आनि धमकी॥ ५॥

गांडिव-धनी कौ लाल आइ व्यूह-मांडव मैं,
ऐसौ रन-तांडव मचायौ कर-कस तैं।
कहै रतनाकर गुमान अवसान मान,
करिगे पयान अरि - प्रान सरकस तैं॥
काटे देत रोख दंड चंड बरिबंडनि के,
छाँटे भुज-दंड देत बान करकस तैं।
ऐंचन न पावैं धनु नैंकु धाक-धारी धीर,
खैंचन न पावैं बीर तीर तरकस तैं॥ ६॥

केते रहे हेरत तरेरत दृगनि केते,
सुनि धुनि-धूम-धाम धनु के टकोरे की।
कहै रतनाकर यौं घायनि की घाल भई,
झिलिम झपाल भई झिँगुली पटोरे की॥
विरचित व्यूह के बिचलि चल जूह भए,
झेलत बनी न झोंक - झपट झकोरे की।
इंद्र-सुत-नंदन की बान-बरषा सौं बेगि,
बीरनि की बारि ह्वै दिवारि गई सोरे की॥ ७॥

धरि धरि मारि मारि करि करि धाए बीर,
सौंहैं आनि धीर रह्यौ भैया मैं न बाबू मैं।
कहै रतनाकर न बिचल्यौ चलाएँ रंच,
ऐसी अचलाई न लखाई परै आबू मैं॥
आवत हीं पास काटि डारत प्रयास बिना,
मानौ चंद्रहास रास करत अलाबू मैं।
पारथ के लाल पै न काहू की मजाल परी,
काबू मैं न आयौ आयौ जद्यपि चकाबू मैं॥ ८॥

पारथ-सपूत की कृपान की अनोखी काट,
देखि ठाट बैरिनि के ठठकि ठरे रहें।
कहै रतनाकर सु सक्र असनी लौं पिल्यौ,
चक्र - व्यूहहू के गुन गौरव गरे रहे॥
मानि निज वीरनि की भीर कौं न गन्य न्यून,
द्रोन आदि वादि भूरि भ्रम सौं भरे रहे।
खंडे रिपु-भुंडनि के मुंड जे अखंडित ते,
मंडित वरीक रुंड - ऊपर धरे रहे॥३॥

चक्रव्यूह अचल अभेद भेदि विक्रम सौं,
आपुहीं वनावै वाट आपनी सुढंगी है।
कहै रतनाकर रुकै न कहूँ रोकैं रंच,
झोंके झेलि पावत न कोऊ ज्वान जंगी है॥
विमुख समूह जम-जूह के हवालैं होत,
सनमुख सूरनि वनावै सुरसंगी है।
पानी गंग-धार कौ कृपानी मैं धस्यौ है मनौ,
जाहि करि अंगी होत अरि अरधंगी है॥ ४॥

वीर अभिमन्यु की लपालप कृपान वक्र,
सक्र-असनी लौं चक्रव्यूह माहिँ चमकी।
कहै रतनाकर न ढालनि पै खालनि पै,
झिलिम झपालनि पै क्यौं हूँ कहूँ ठमकी॥
आई कंध पे तौ वाँटि वंध प्रतिवंध सवै,
काटि कटि-संधि लौं जनेवा ताकि तमकी॥
सीस पै परी तौ कुंड काटि मुंड काटि फेरि,
रुंड के दुखंड कै धरा पै आनि धमकी॥ ५॥

गांडिव-धनी कौ लाल आइ व्यूह-मांडव मैं,
ऐसौ रन-तांडव मचायौ कर-कस तैं।
कहै रतनाकर गुमान अवसान मान,
करिगे पयान अरि - प्रान सरकस तैं॥
काटे देत रोदा दंड चंड बरिबंडनि के,
छाँटे भुज-दंड देत बान करकस तैं।
ऐँचन न पावैं धनु नैंकु धाक-धारी धीर,
खैंचन न पावैं बीर तीर तरकस तैं॥ ६॥

केते रहे हेरत तरेरत दृगनि केते,
सुनि धुनि-धूम-धाम धनु के टकोरे की।
कहै रतनाकर यौं घायनि की घाल भई,
झिलिम भपाल भई झिंगुली पटोरे की॥
विरचित व्यूह के विचलि चल जूह भए,
झेलत वनी न झोंक - झपट झकोरे की।
इंद्र-सुत-नंदन की बान-बरषा सौं वेगि,
बीरनि की बारि ह्वै दिवारि गई सोरे की॥ ७॥

धरि धरि मारि मारि करि करि धाए वीर,
सौंहैं आनि धीर रह्यौ भैया मैं न बाबू मैं।
कहै रतनाकर न विचल्यौ चलाएँ रंच,
ऐसी अचलाई न लखाई परै आबू मैं॥
आवत हीं पास काटि डारत प्रयास बिना,
मानौ चंद्रहास रास करत अलाबू मैं।
पारथ के लाल पै न काहू की मजाल परी,
काबू मैं न आयौ आयौ जद्यपि चकाबू मैं॥ ८॥

पारथ-सपूत की कृपान की अनोखी काट,
देखि ठाट वैरिनि के ठठकि ठरे रहे।
कहै रतनाकर सु सक्र असनी लौँ पिल्यौ,
चक्र - व्यूहहू के गुन गौरव गरे रहे॥
मानि निज वीरनि की भीर कौँ न गन्य न्यून,
द्रोन आदि वादि भूरि भ्रम सौँ भरे रहे।
खंडे रिपु-कुंडनि के मुंड जे अखंडित ते,
मंडित वरीक रुंड - ऊपर धरे रहे॥३॥

चक्रव्यूह अचल अभेद भेदि विक्रम सौँ,
आपुहीँ वनावै वाट आपनी सुढंगी है।
कहै रतनाकर रुकै न कहूँ रोकैँ रंच,
झौंके झेलि पावत न कोऊ ज्वान जंगी है॥
विमुख समूह जम-जूह के हवालैँ होत,
सनमुख सूरनि वनावै सुरसंगी है।
पानी गंग-धार कौ कृपानी मैँ धर्यौ है मनौ,
जाहि करि अंगी होत अरि अरधंगी है॥ ४॥

वीर अभिमन्यु की लपालप कृपान वक्र,
सक्र-असनी लौँ चक्रव्यूह माहिँ चमकी।
कहै रतनाकर न ढालनि पै खालनि पै,
झिलिम झपालनि पै क्यौँ हूँ कहूँ ठमकी॥
आई कंध पै तौ वाँटि वंध प्रतिवंध सवै,
काटि कटि-संधि लौँ जनेवा ताकि तमकी॥
सीस पै परी तौ कुंड काटि मुंड काटि फेरि,
रुंड के दुखंड कै धरा पै आनि धमकी॥ ५॥

गांडिव-धनी कौ लाल आइ ब्यूह-मांडव मैं,
ऐसौ रन-तांडव मचायौ कर-कस तैं।
कहै रतनाकर गुमान अवसान मान,
करिगे पयान अरि - प्रान सरकस तैं॥
काटै देत रोदा दंड चंड बरिबंडनि के,
छाँटै भुज-दंड देत बान करकस तैं।
ऐंचन न पावैं धनु नैंकु धाक-धारी धीर,
खैंचन न पावैं बीर तीर तरकस तैं॥ ६॥

केते रहे हेरत तरेरत दृगनि केते,
सुनि धुनि-धूम-धाम धनु के टकोरे की।
कहै रतनाकर यौं घायनि की घाल भई,
झिलिम झपाल भई झिँगुली पटोरे की॥
बिरचित ब्यूह के बिचलि चल जूह भए,
झेलत बनी न झौंक - झपट झकोरे की।
इंद्र-सुत-नंदन की बान-बरषा सौं बेगि,
बीरनि की बारि ह्वै दिवारि गई सोरे की॥ ७॥

धरि धरि मारि मारि करि करि धाए बीर,
सौंहैं आनि धीर रह्यौ भैया मैं न बाबू मैं।
कहै रतनाकर न बिचल्यौ चलाएँ रंच,
ऐसी अचलाई न लखाई परै आबू मैं॥
आवत हीं पास काटि डारत प्रयास बिना,
मानौ चंद्रहास रास करत अलाबू मैं।
पारथ के लाल पै न काहू की मजाल परी,
काबू मैं न आयौ आयौ जद्यपि चकाबू मैं॥ ८॥

एक उत्तरा कैं पति राखी पति पांडव की,
दीन्हैं पति केतिनि जे पाइ उमगाति हैं।
कहै रतनाकर निहारि रन-कौतुक सो,
जूटी सुर असुर वधूटी ललचाति हैं॥
वड़े वड़े वमकत्त बीर रनधीरनि की,
कढ़ति मियान तैं कृपान थहराति हैं।
आगैं देखि घाय धाइ वरतिं घृताची आदि,
पाछैं पेपि पकरि पिसाची लिए जाति हैं॥ ९॥

(४) जयद्रथ-वध

पांडव कौ ताप औ प्रताप दुरजोधन कौ,
सूत-सुतहू कौ दाप सोधि सियराऊँ मैं।
कहै रतनाकर प्रतिज्ञा यह पारथ की,
द्रोनहू महारथ की धाक धोइ धाऊँ मैं॥
सिंधुराज जटिल जयद्रथ कौ जीवन लै,
आज अंधराज हिय आँखिनि खुलाऊँ मैं।
कृष्ण-भगिनी के द्रौपदी के उत्तरा के हियँ,
सोक-विकराल-ज्वाल जरति जुड़ाऊँ मैं॥ १॥

वरुन कुबेर सुरराज आदि साखी राखि,
आज गुरु द्रोनहूँ कौ गौरव गँवाऊँ मैं।
कहै रतनाकर यौँ रोस-रस-घूमि-झूमि,
पारथ प्रचारयौ भूमि-मंडल कँपाऊँ मैं॥
जौपै मारतंड के रहत नभ - मंडल मैं,
रुंड सौँ जयद्रथ कौ मुंड ना गिराऊँ मैं।
तौपै जरयौ वीर अभिमन्यु तौ मरे पै पर,
इहिँ तन कायर कौँ जियत जराऊँ मैं॥ २॥

वीर अभिमन्यु मन्यु मत्त मैं न हूज्यौ मानि,
　　जानि अब रन कौ विधान किमि पैहौं मैं।
पायौ पैठि संगहूँ न रंग-भूमि हूँ मैं जब,
　　जैहै तहाँ को तव जहाँ अब सिधैहौं मैं॥
काल्हि चंद्र-व्यूह पैठिबे के पहिलैं हौं तुम्हैं,
　　हाल रन-भूमि कौ उताल पहुँचैहौं मैं।
कै तौ तव विजय जयद्रथ सुनैहै जाय,
　　कै तौ लै पराजय-प्रलाप आप ऐहौं मैं॥ ३॥

आयौ जुद्ध-भूमि मैं सनद्ध वर वीर क्रुद्ध,
　　रुद्ध-बुद्धि ह्वै है रहे विरुद्ध दलवारे हैं।
कहै रतनाकर प्रभाकर-कराकर से,
　　अविरल धाए विसिखाकर करारे हैं॥
धीर भए ध्वस्त हस्त-लाघव विलोकि सबै,
　　भागे जात अस्त-व्यस्त वीरता विसारे हैं।
बान लेत मंडत उमंडत न पेखि परैं,
　　देखि परैं रुंड मुंड खंडित वगारे हैं॥ ४॥

गांडिव के कांड यौं उमंडि रनमंडल मैं,
　　रौंच्यौ रन-तांडव उदंड रिपु-झुंड मैं।
कहै रतनाकर विपच्छि वरिवंड लगे,
　　लुंडमुंड लोटन धरा मैं स्रोन-कुंड मैं॥
खंडित ह्वै उचटि उमंडि चंड बाननि सौं,
　　औरनि के मुंड मिलैं औरनि के रुंड मैं।
कुंडिनि के रुंड मैं वितुंडनि के सुंड लगैं,
　　कुंडिनि के मुंड त्यौं वितुंडनि के तुंड मैं॥५॥

सद्रथ धनंजय के धावत जयद्रथ पै,
आठ - आठ प्रबल महद्रथ निवारैं हैं।
कहै रतनाकर सुभट प्रन-प्रान रोपि,
कोपि कोपि मग पग पग पै जुझारैं हैं॥
मार्‍यौ महा संगर अभंग रंग - भूमि माहिँ,
दंग ह्वै सुरासुर अपांग सौं निहारैं हैं।
आठहूँ महारथ पै पारथ के चंद-बान,
चंद आठवैं लौं लागि मंद किए डारैं हैं॥ ६॥

पारथ कियौ जो प्रन घोर ताहि तोरन कौं,
कोरि प्रान-पन सौं महारथ सकै हैं ना।
मींजि मींजि हाथ कहैं नाथ रतनाकर के,
भानुहूँ पयान माहिँ बिलँब लगै हैं ना॥
सावधान चक्र आज काज अक्रता कौ नाहिँ,
जौपै सक्र - पूत प्रन पालत लखै हैं ना।
आपनी प्रतिज्ञा की अवज्ञा करि लैहैं पर,
भक्त-भीर-भंजन की संज्ञा जानि दैहैं ना॥ ७॥

ऐरे चक्र अक्र ह्वै रह्यौ है कहा बेगि धाइ,
जाइ तितै रंचहूँ बिलंब कहूँ लैयौ ना।
कहै रतनाकर सँदेस ना निदेस यह,
कहियौ अतंक सौं ससंक सकुचैयौ ना॥
जौलौं अरि-रक्त सौं धनंजय न पूरै मंग,
तौलौं नील अंबर दिगंगना सजैयौ ना।
सिंधुराज-जीवन सौं जौलौं ना अघाइ जम,
तौलौं जम-जनक बिराम-ठाम जैयौ ना॥ ८॥

ऐसौ कछु भभरे हिये मैं भय हूलि जात,
भूलि जात गाजिबौ दिली के साह गाजी कौ।
कहै रतनाकर सुध्यात वहै आठौं जाम,
नाम सरजा कौ भयौ कलमा नमाजी कौ॥
धाई धाक धूम यौं भुवाल भौंसिला की भूमि,
कहियै खमार नर नारि के कहा जी कौ।
सरकत सुंडी सुंड दाबत भुसुंडनि मैं,
भरकत बाजी नाम सुनत सिवाजी कौ॥३॥

जंगी सत-द्वादस सवारनि लगाइ घात,
संगी स्वल्प संग अफजल पग धाखौ है।
कहै रतनाकर त्यौं हौंसिला अपारि धारि,
भौंसिला भुवाल आनि तुरत जुहाखौ है॥
भुज भरि भैंटि भींचि जौलौं करि-काय नीच,
पंजर मैं खंजर लै खौंपिबौ बिचाखौ है।
तौलौं नर-केहरि तमकि नरकेहरि लौं,
केहरि-नहा सौं दरि उदर बिदाखौ है॥४॥

कैधौं खल-मंडल उदंड चंड दंडन कौं,
उद्दत अखंडल कौ अस्त्र दमकत है।
कहै रतनाकर कै जमन-प्रलै कैं काज,
त्र्यंबक कौ अंबक त्रितीय रमकत है॥
कैधौं दीह दिल्ली-दल-बन-घन जारन कौं,
दपटि दवानल सो ताप तमकत है।
चमकत कैधौं सूर-सरजा-दुधारा किधौं,
नहर सितारा कौ सितारा चमकत है॥५॥

माचै सुर-पुर मैं उपद्रव कहूँ ना कछू,
याही हम गुनत हिये मैं गरे जात हैं।
कहै रतनाकर-बिहारी सौं सुरेस लखौ,
आनि आनि जमन असेस अरे जात हैं॥
काम सरजा के अरु नाम गिरिजापति के,
ऐसैं मम धाम कौं निकाम करे जात हैं।
सनमुख जुद्ध के जुरैया जुरे जात अरु,
सिव सिव भाषत भजैया भरे जात हैं॥६॥

बाजी-घोर पाँड़े कौं कठोर प्रान-दंड दियौ,
साजी सेन सरजा समत्थ बहुरंगी हैं।
कहै रतनाकर चली न अली आदिल की,
बिदलित कीन्हे दल पैदल तुरंगी हैं॥
फजल मुहम्मद के फजल फजूल भए,
तूल भए आवत सलावत भडंगी हैं।
लै लै तोप तुपक तुफंग जंग-साज भेंट,
गोवा के फिरंगी हू सिवा के भए संगी हैं॥७॥

बीजापुर दिल्ली गोलकुंडा आदि खंडनि मैं,
अमल अखंड कल कीरति बिभाजी है।
कहै रतनाकर नगर गढ़ ग्राम जिते,
तेते अधिकार मैं सुधारि सुभ साजी है॥
मात-भूमि भक्ति सक्ति अविचल साहस की,
सहित प्रमान प्रतिपादि छिति छाजी है।
राना मूल-मंत्र जो स्वतंत्रता प्रकास कियौ,
ताकौ महाभास कियौ सरजा सिवाजी है॥८॥

मान के विरुद्ध सनमान मानि क्रुद्ध भयौ,
आनन पै आनि भाव उद्धत विराजे हैं।
कहै रतनाकर सो चंड सरजा कौ रूप,
देखि म्लेच्छ मंडल उदंड छोभ छाजे हैं॥
निकसत वैन औ न विकसत नैन भए,
अकबक साह साहजादे खान खाजे हैं।
भूले अवसान मान गौरव-विधान सबै,
कौरव-सभा मैं जदुराज जनु गाजे हैं॥९॥

—

(७) श्रीगुरु गोविंदसिंह

पैठि पठनैंटनि के उमगे अँगेठनि मैं,
चूर करि ऐंठ सवै धूरि मैं धुरेटूँ मैं।
कहै रतनाकर प्रचाख्यौ गुरु गोविंद यौं,
मीर मीरजादनि के धीर धरि फेटूँ मैं॥
सेखनि की सेखी करि देखत अलेखी सवै,
दूरि दलि भूरि मुगलदल दपेटूँ मैं।
भेटूँ भव्य भाव देस-भक्त सद्पंथिनि के,
मोहमद-पंथिनि के मोह-मद मेटूँ मैं॥१॥

ढाहैं अरि-आस के अकास तिनि सीसनि पै,
होस कौं हवा कै हवा उनकी उड़ावैं हम।
कहै रतनाकर गरजि गुरु गोविंद यौं,
जमन-निसानी लोह-पानी सौं बहावैं हम॥
जारि जारि प्रखर प्रचंड रोष झारनि मैं,
छार उनहीं की उन-आँखिनि पुरावैं हम।
पंच तत्त्व हूँ मैं निज भाव सत्व संचित कै,
म्लेच्छ-दल वंचक पै पंचक लगावैं हम॥२॥

चावि लोह-चनक अघाइ देस दच्छिन सौं,
पच्छिम वढ्यौ जो तृषा-व्याधि अधिकानी है।
कहै रतनाकर गुविंद गुरु बिंदि यहै,
लोह ही के पानि सौं सिरावनि की ठानी है॥
जीवन की आस नासि सासक दिली कौ भज्यौ,
बिकल बिहाइ सान कानि गोरकानी है।
छाँड़ि असि परसु कुठार कुंत बान कहूँ,
पंचनद हू मैं जुख्यौ रंचक न पानी है॥३॥

चाहि चतुरंगिनी अकालिनि की काल-रूप,
भूप नवरंग रंग एक ना उघारै है।
कहै रतनाकर अमीर मीर पीर कोऊ,
रन रुकिबे कौ धीर रंच हू न धारै है॥
त्यागि त्यागि संगर अभागे फिरैं भागे सबै,
कोऊ ढंग पै ना मीच-फंग सौं उबारै है।
जानि जिय गायनि कौं गोबिंद दुलारै सदा,
बाँदि बाँदि गोबिंद गवासनि सँघारै है॥४॥

देखि देखि विक्रम अभिक्रम अकालिनि के,
कालिनि के नाद साधुवाद बहु दीन्हे हैं।
कहै रतनाकर कुरंग अवरंग भयौ,
भाजे सैन रौंदत मतंग बिनु चीन्हे हैं॥
आज गुरु गोबिंद बिरंचि रचना मैं जस,
पंचगुने भूपति भगीरथ सौं लीन्हे हैं।
सींचि सींचि जमन प्रपंचिनि के स्रोनित सौं,
पंचनद माहिं और पंचनद कीन्हे हैं॥५॥

सूबा-सरहिंद संग गब्बर गिरिंद आनि,
जानि जिय अब्बर अनंदगढ़ घेर्‍यौ है।
कहै रतनाकर गुविंद गुरु विंदि घात,
निज रनधीर वीर बृंदनि कौं टेर्‍यौ है॥
कढ़ि कढ़ि बाहिर उमहि कहि वाह-गुरू,
बढ़ि नेजा असि-न्यात्र निबटेर्‍यौ है।
माते अरि-करिनि करेरनि दरेर्‍यौ दौरि,
मानौ कुल केहरि अहेर निज हेर्‍यौ है॥६॥

थापे भीति माहिँ जो अभीत जुग वाल बृच्छ,
तिनकौं यथेच्छ म्लेच्छ स्रौन सौं सिचाऊँ मैं।
कहै रतनाकर लहौर सरहिंद-सेन,
कुंत-करवार-बान फलनि अघाऊँ मैं॥
हम तुम जीवित रहे जौ कछु काल तौब,
पुरुष अकाल महा महिमा दिखाऊँ मैं।
चाहत हमैं जो निज कलमा पढ़ावन सो,
वाह-गुरू मंत्र तत्र अंत्र मैं मढ़ाऊँ मैं॥७॥

जैसैं मदगलित गयंदनि के बृंद वेधि,
कंदत जकंदत मयंद कढ़ि जात है।
कहै रतनाकर फनिंदनि के फंद फारि,
जैसैं बिनता कौ नंद कढ़ि जात है॥
जैसैं तारकासुर के असुर - समूह सालि,
स्कंद जगवंद निरद्वंद कढ़ि जात है।
सूबा-सरहिंद-सेन गारि यौं गुविंद कढ़्यौ,
ध्वंसि ज्यौं बिधुंतुद कौं चंद चढ़ि जात है॥ ८॥

गढ़ चमकौर सौं चपल चमकाइ तुरी,
आतुरी - समेत रन-खेत बढ़ि आयौ है।
कहै रतनाकर बिपच्छिनि यौं लच्छ कियौ,
उच्चयीस्रवा पै सहसाच्छि चढ़ि आयौ है॥
श्रीगुरु गुबिंदसिंह बैरिनि बिदारत यौं,
मानौ बिकराल काल-मंत्र पढ़ि आयौ है।
ताव देत ताजिहिँ सवारनि कौं दाव देत,
पाव देत पैदल बिदलि कढ़ि आयौ है॥ ९॥

भारत की दीन दसा दारुन निबारन कौं,
श्रीगुरु गुबिंद महाजज्ञ-बिधि चीन्ही है।
कहै रतनाकर कठैटे - पटनैटे - सेख -
सैयद-मुगल-सेन समिधा सु लीन्ही है॥
खड्ग-स्रुवा सौं मेद-मज्जा-स्रौन आहुति दै,
प्रज्वलित जुद्ध-बिकराल-ज्वाल कीन्ही है।
देस-भक्ति-वेदी पै स्वतंत्रता कौ मंत्र साधि,
पूत पंच पूतनि की पंच बलि दीन्ही है॥१०॥

(८) महाराज छत्रसाल

देव-द्विज-द्रोहिन के आँसनि उसाँसनि सौं,
मातभूमि गात कौ सँताप सियराऊँ मैं।
कहै रतनाकर बुँदेला भट मानी महा,
जमन-निसानी असि-पानी सौं वहाऊँ मैं॥
श्रीपति सहाय सौं दिलीपति कौ छत्र सालि,
छत्रसाल नाम निज सारथ बनाऊँ मैं।
चपल चकत्ता की महत्ता अरु सत्ता चाँपि,
चंपत कौ नंदन अमंद कहवाऊँ मैं॥ १॥

कढ़त बुँदेलनि के रेलनि के नारा रन,
बलख बुखारा जिमि पारा थहरत हैं।
कहै रतनाकर सपीर पीरजादनि के,
मीर मीरजादनि के धीर भहरत हैं॥
निपट निसंक बंक बैरिनि के जूथनि के,
सूथन ससंक लंक त्यागि ढहरत हैं।
मुगल पठाननि की सत्ता औ महत्ता मिटै,
कत्ता कढ़ै छत्ता के चकत्ता हहरत हैं॥ २॥

अन्न जल जाकौ पाइ परम प्रसन्न रहे,
ताकौं हाय इमि अवसन्न किमि चैहैं हम।
कहै रतनाकर सपूत राय चंपत कौ,
म्लेच्छनि सपूत के न पद सौं दलैहैं हम॥
उद्धत अधर्मिनि के कुटिल कुकर्मिनि के,
दास ह्वै उदास इहिं नरक न रैहैं हम।
कैतौ भूमि भारत कौं सरग बनैहैं अबै,
कैतौ तेग झारि बेगि सरग सिधैहैं हम॥ ३॥

लगन धराइ कै लिखाइ बेगि चीठी चारु,
बाकी खाँ बसीठी दिली नगर पठाई है।
कहै रतनाकर तुरंत रनदूलह की,
बिसद बरात सेन सज्जित सिधाई है॥
कढ़ि कढ़ि बाँकुरे बुँदेला रन-मांडव मैं,
बढ़ि बढ़ि घोर घमसान यौं मचाई है।
भागे सबै भभरि अभागे रन त्यागे चंपि,
चंपत कैं लाल बिजै-बाल बरि पाई है॥ ४॥

ह्वै कै दलमलित बुँदेलनि के रैलनि सौं,
मुगल पठाननि के मान मद मरके।
कहै रतनाकर ततार असवार लिए,
रूम सामहू के सरदार हारि सरके॥
बाकी खान सूबा के बिलाने मनसूबा सबै,
बिचले हवा ह्वै अवसान हू समर के।
सूरता तहौवर मियाँ की चकचूरि परी,
धूरि परी नूर पै नवाब अनवर के॥ ५॥

समर-समुद्र बैर-अचल सुमेरु अद्रि,
जीत-आस बासुकी-बरेत वर धारी है।
कहै रतनाकर सुरासुर बुँदेल-म्लेच्छ,
करसि यथेच्छ कियौ घरसन भारी है॥
प्रगटे सुभासुभ परिनाम रत्न,
जिनकी सजत्न भई जोग बटवारी है।
फेरि बिजै-लच्छमी प्रतच्छि जस-कंज-माल,
चंपत के लाल कैं बिसाल बच्छ पारी है॥ ६॥

सुतुर-बिहीन सुतुरद्दौं दलि दीन भयौ,
ऐसौ मुगलद्दल बुँदेल बीर लूट्यौ है।
कहै रतनाकर परान्यौ हाथ माथैं दिये,
मानौ टकटोरत कहाँ धौं भाग फूट्यौ है॥
बीर छत्रसाल-करवार-धार-पानिप त्यौं,
दमकि दिलीस-सेन-सीस इमि टूट्यौ है।
अब्दुस्समद की समदता सिरानी सबै,
अबद अपाय ह्वै चुकाइ चौथ छूट्यौ है॥ ७॥

जानी निज संपति सिरानी ततकाल सबै,
हाल चाहि चंपति के लाल रनरत्ता कौ।
कहै रतनाकर बिचारै माथ धारे हाथ,
मानि अपमान महा मुगल-महत्ता कौ॥
खीसत खिझात दाँत पीसत अमीरनि पै,
देखत तुरंत अंत होत म्लेच्छ सत्ता कौ।
सुनि गुनि धीर बीर छत्ता की बिजै पै बिजै,
लत्ता अवसान भयौ चकित चकत्ता कौ॥ ८॥

जोई जात गाजि सोई आवत गँवाइ भाजि,
भारी सेन ऐसहीं हमारी घिसि जाइगी।
बब्बर की धाक औ अकब्बर की साक सबै,
अब्बर की छाक लौं सनैहौं मिसि जाइगी॥
सोच - रतनाकर की तरल तरंगैं पोच,
गनि गनि हाय कै बिहाइ निसि जाइगी।
बढ़ति महत्ता देखि छत्ता की चकत्ता कहै,
सत्ता इसलाम की सबै धौं खिसि जाइगी॥ ९॥

(९) श्री महारानी दुर्गावती

दुर्ग तैं तड़पि तड़िता सी तड़कैं हौं कढ़ी,
कड़कि न पाए कड़खाहूँ अधै मुरगा।
कहै रतनाकर चलावन लगी यौं बान,
मानौ कर फैले फुफुकारी मारि उरगा॥
आसा छाँड़ि प्रान की अमान की दुरासा माँड़ि,
भागे जात गब्बर अकब्बर के गुरगा।
देवी दुरगावती मलेच्छ - दल गेरे देति,
मानौ दैत्य - दलनि दरेरे देति दुरगा॥ १॥

देवी दुरगावती के धावत मलेच्छ - सेन,
फाटि चली फेन लौं रुकी ना हरकहु मैं।
कहै रतनाकर निहारे वहु संगर पै,
ऐसे रन - रंग ना विचारे तरकहु मैं॥
चरबन चाहि जाहि आयौ चढ़ि आसफ खाँ,
ताकी कठिनाई ना लखाई करकहु मैं।
एतौ रन-बिमुख मलेच्छनि - झमेला भयौ,
मेला भर्यौ माची ठेलठेला नरकहु मैं॥ २॥

(१२) श्री नीलदेवी

मृतक पती की कटि-तट की कटारी खोलि,
तोलि कर ताहि बोलि तोहिँ अपनाऊँ मैं ।
कहै रतनाकर प्रतिज्ञा नीलदेवी करी,
आर्य-महिला की महा महिमा दिखाऊँ मैं ॥
पति के बियोग हूँ सौं तेरौ तृषा-सोग भारी,
तातैं सती पाछैं ह्वै सुपति-पद पाऊँ मैं ।
अब दुस्सरीफ-हिय स्रोनित कौं आज तोहिँ,
पान पहिलैं हीं निज पानि सौं कराऊँ मैं ॥ १ ॥

अब्दुस्सरीफ सौं हरीफ ह्वै सुजुद्ध जुरैं,
कीरति तिहारी तौ अबाध रहि जाइगी ।
भापै नीलदेवी सुत सील-रतनाकर सौं,
भाजि बच्यौ सो तौ दीह दाध रहि जाइगी ॥
प्यास रहि जाइगी असाध इहिं खंजर की,
भारत की त्रास हूँ अगाध रहि जाइगी ।
आधि रहि जाइगी मरे हूँ पै हमारे हियैं,
हाय मनहीँ मैं मन-साध रहि जाइगी ॥ २ ॥

भारत की भव्य भामिनीनि की कहानी कल,
मंडित करौं मैं म्लेच्छ-मुखनि वजीफा सी।
कहै रतनाकर पुकारि नीलदेवी आज,
करनी करौं जो जगै जग मैं लतीफा सी॥
देस-प्रेम-प्रबल-प्रभाव दिव्य देखैं सबै,
करति कहा है एक अबला जईफा सी।
टारि डारौं देखत हीं देखत बिथारि डारौं,
अबदुस्सरीफ की सराफत सरीफा सी॥ ३॥

ऐसौ नाच नाची नीलदेवी म्लेच्छ-मंडल मैं,
मंडि नीच-मुंडनि पै मीच कौं नचायौ है।
कहै रतनाकर अमोल गुनरूप तोलि,
अबदुस्सरीफ लोल ललकि लुभायौ है॥
निकट बुलाइ कै बिठाइ हुलसाइ हियैं,
मद-मतवारौ मद-पान हठ ठायौ है।
ज्यौं ही चह्यौ चसक चखायौ ताहि कंजर सो,
पंजर मैं त्यौं ही पेसि खंजर खपायौ है॥ ४॥

पेसि कै कटारी धरमारी के करेजैं बीच,
तारी दई तरकि तराक नीलदेवी ज्यौं।
कहै रतनाकर त्यौं संग कैं हथ्यार धारि,
कीन्हीं चहुँवार वार दारु की जलेबी ज्यौं॥
पैठि पर्यौ बीरनि समेत सोमदेव धीर,
चेते कछु चकित अचेत सुरासेबी ज्यौं।
एकाएक आनि कै महान् अजगैबी परी,
दीसति फरेबी सभा रक्त-रकेबी ज्यौं॥ ५॥

फूँकि कै स्वतंत्रता कौ मंत्र सेन-अंत्र माहिँ,
छत्री-धर्म-कर्म की समर्म सुधि धाई है।
कहै रतनाकर सपूत राजपूतनि कौँ,
पूत-देस-भक्ति-महा-सक्ति जिय ज्याई है॥
दुवन फरेबी कौँ फरेब-फल दैवे काज,
चाय की रचाय नीलदेवी सुरा प्याई है।
जमन जरार फौजदार फारि खंजर सौँ,
पंजर सौँ पति की निकासि लास ल्याई है॥ ६॥

मारि निसि-छाप सूरदेव कौँ गह्यौ जो कूर,
फल न पायौ सौ फतूर वा फरेबी कौ।
कहै रतनाकर सु आर्य-महिला कैँ कर,
छाकैँ बन्यौ ताकैँ निज परस्यौ रकेबी कौ॥
जाकौ चारु चरित समच्छ सब कच्छनि कैँ,
लच्छ ह्वै प्रतच्छ लसै दच्छ देस-सेबो कौ।
जमन कुडीलनि के मंद मुख नील करै,
सुजस समुज्जल सुसील नीलदेबी कौ॥ ७॥

चढ़त चिता पै नीलदेवी के उमंगि जुरीँ,
देवनि कैँ संग देव-अंगना जुहारती।
कहै रतनाकर करनि कुसुमाकर लै,
पुलकित ह्वै ह्वै धन्य-धुनि कै उच्चारती॥
द्वै द्वै दिव्य आसन सिँघासन पै रीते राखि,
आँखिनि निहारती सुभापनि उचारती।
जौलौँ कवि भारत के भारती सँवार्यौ करैँ,
तौलौँ तव आरती उतार्यौ करैं भारती॥ ८॥

---

(१३) महारानी लक्ष्मीबाई

दीह दल साजि गाजि नत्थे खाँ समत्थ चढ्यौ,
झाँसी के निवासी भरे भूरि भय भारे हैं।
कहै रतनाकर प्रतच्छ लच्छमी सो लच्छि,
दच्छ निज पच्छिनि समच्छ ललकारे हैं॥
धधकत गोलनि के ताँते अरि-मुंडनि पै,
तुंग गढ़-स्रृंग तैं भुसुंडिनि प्रहारे हैं।
खूटे-आयु-औधि-द्यौस फूटे-भाग वैरिनि के,
टूटे मनौ नभ तैं कतारे बाँधि तारे हैं॥ १॥

पीठि बाँधि बालक बिराजि बर बाजि ईठि,
जाकी दौर देखि दीठि छकित छली गई।
कहै रतनाकर बिपच्छिनि के कच्छिनि सौं,
लच्छमी प्रतच्छ अच्छि आगे निकली गई॥
अचल उदंड बरिबंडनि के मंडल मैं,
डंड लौं अखंडल के खंडत हली गई।
झारति कृपान सौं गुमान ज्वान जंगिनि के,
फारत फिरंगिनि के फर कौं चली गई॥ २॥

सेन लै तुरंगी संग सेनप फिरंगी बीर,
जंगी नारि धीर धाइ धारिबौ बिचार्यौ है।
कहै रतनाकर भँडेर ग्राम नेरैं घेरि,
राहु कौ रिसाला हाला चंद पर पार्यौ है॥
रानी लच्छमी त्यौं रन-दच्छता प्रतच्छ करि,
कावा काटि धावा कै समच्छ ललकार्यौ है।
ठोकर दै अस्व कौं उड़ाइ वेगि वोकर पै,
तीखी तरवारि सौं बिदारि महि डार्यौ है॥ ३॥

पेस पेसवा की औ नवाव की न ताव लच्छि,
भेस करि लच्छमी प्रतच्छ मरदाने कौ।
कहै रतनाकर सवार ह्वै तुरंगम पै,
संग लै रिसाल विकराल लाल बाने कौ॥
दोऊ कर झारति झपटि करवार - वार
फारति फुरत फौज-फर फिरगाने कौ।
मंद करि दीन्हौ धावा धवल अरिंदनि कौ,
वंद करि दीन्हौ दीह दंद तोपखाने कौ॥ ४॥

ओलनि लौं गोलनि की बाढ़ सेँधिया की परैं,
ताव गई तरकि नवाव पेसवाजी की।
कहै रतनाकर त्यौं लच्छमी उमंगि बढ़ी,
संग लिए वाहिनी विकट वर वाजी की॥
तोपचिनि मारि लोपि वार तोपखाननि कौ,
भानन लगी ज्यौं अरि-पाँति भाँति भाजी की।
भाजी सिलेदारी घाटवारी सेन-राजी सचै,
साजी रन-वाजी गई बिचलि जयाजी की॥ ५॥

कोटा की सराय सौं धधाइ कै फिरंगी-फौज,
ग्वालियर - कोट पै लगाइ चोट चमकी।
कहै रतनाकर समच्छ लच्छमी त्यौं कढ़ि,
सबल सवार - सेन - संग धाइ धमकी ॥
काटि-काटि डारन लगी यौं महि रुंड मुंड,
पैठि अरि-झुंड मैं जमात मनौ जम की।
धमकी जहाँ हीं जहाँ संगर-घटारी घोर,
बिज्जु की छटारी ह्वै तहाँ हीं तहाँ तमकी ॥ ६

ग्वालियर-कोट सौं सचोट सिंहनी सी कढ़ि,
लच्छमी समच्छहीं बिपच्छि-सेन भारी के।
कहै रतनाकर उमंगि जुरी ज़ंग धाइ,
संग लै सवार गने करनी करारी के ॥
झारति कृपान फौज फारति फिरंगिनि की,
दारति दरेरि दल जंगिनि हुजारी के।
धधकति गोलनि कैं द्वंदर धँसी यौं जाति,
धँसत समंदर ज्यौं अंदर दवारी के ॥ ७

अच्छिनि-समच्छ गई छिति सौं अलच्छित ह्वै,
लच्छ बनि लच्छमी बिपच्छिनि रिसाला कौ।
कहै रतनाकर सुधाकर कौ बिंब बेधि,
प्रान कियौ तुरत पयान सुर-साला कौ ॥
अधरहिं धाय्यौ धर धाइ जगधाइ जानि,
पावै धरा पीर ना सरीर बीर बाला कौ।
इत तैं उमंडि संडिया पै मुंडमाली आनि,
मुंड मध्य-मंडन बनायौ मुंड-माला कौ ॥ ८

(१४) श्री ताराबाई

राजपूत वीर जो निसेस देस-पीर करै,
ताकौं सुख मानि पानि आपनौ गहाऊँ मैं।
कहै रतनाकर तिवारा भरि तारा वाच,
ना तरु कुमारी रहि आप चढ़ि धाऊँ मैं॥
मंडि रन-मंडल उमंडि चंड चंडी सम,
प्रखर प्रचंड खंड-धार धमकाऊँ मैं।
तात की विपत्ति-विथा विषम वहाऊँ अरु,
मात की अपूती-दाह दारुन सिराऊँ मैं॥ १

साजे वीर वाहिनी बरातहिँ उछाहि नीकैँ,
बैरिनि की खाल खैंचि दुंदुभी मढ़ावै जो।
कहै रतनाकर पछाड़ि देस-द्रोहिनि कौँ,
फाड़ि कै करैजौ हाड़-भूषन गढ़ावै जो॥
मातभूमि-बेदी पै हिए की दाह साखी राखि,
सविधि स्वतंत्रता के मंत्रहिँ पढ़ावै जो।
वाही वर वीर कौँ वरौँ मैं अनुराग पागि,
अरि उर-गाँग माँग सैंदुर चढ़ावै जो॥ २

झेलति तुफंग-तीर-वार सुकुमार अंग,
आइ पति संग पैठि संगर मैं तमकी।
कहै रतनाकर नवाब मालवा की तात्र,
रंचक रही न भई हीन सब हम की॥
बलगद बाजी पै विराजि सेन-राजी साजि,
घेरि मल्ल सूरज निसा मैं लोह-तमकी।
धावत घुमाइ चमकावति दुधारा खग्ग,
तारा मेदपाट कौ सितारा बनि चमको॥ ३॥

प्रकीर्ण पद्यावली

(१) श्रीराधा-विनय

जानत न पीर-हीन पीर पीर-वारनि की
तातैं तिन्हैं पीर-पाक रोचक चिखाइ दै।
कहै रतनाकर प्रिया के नख-रेखनि सौं
जन्म-कुंडली मैं प्रेम-परख लिखाइ दै॥
सलिता दया की लली ललिता सुनी मैं कान
प्रगट प्रमान ताकौ नैननि दिखाइ दै।
सरल-सुभाइ स्वामिनी कौं समुझाइ टेक
पैयाँ परौं नैंकु मान करिबौ सिखाइ दै॥ १॥

जोगी जोग साधैं भोगी भोग-ब्यौंत बाँधैं सबै
ब्रह्म अवराधैं ज्ञानी गूढ़-सुख-साधा कै।
कहै रतनाकर बिरागी राग त्यागैं ऐंठि
रागैं पटराग रागी बिरति अबाधा कै॥
ऐसौ कछु बानक बनाइ दै बिधाता जदि
तौ पै गुनैं ताकी ताकि करुना अगाधा कै।
धाइ ब्रज-बीथिनि अघाइ जमुना कैं वारि
एकौ बार उमगि पुकारैं हम राधा कै॥ २॥

काढ़ति न ही की हौंस कुटिल कटाच्छ वेधि
उतरी-कमान-प्रभा भौंहनि मैं भाई है।
कहै रतनाकर प्रभावहीन बैननि औ
भावहीन नैननि दिखाति दुचिताई है॥
हा हा किन कारन उचारन करति कहा
वारन - उवारन की सुधि विसराई है।
कीन्यौ मनुहार नां तिहारे कौन सेवक कौ
जाकैं ताप मानस की भाप दृग छाई है॥ ३॥

(२) श्रीव्रज-महिमा

दूरि करिवे कौं तन मन कौ मलान सबै
आयौ इहिं ओक आप तीन लोक-त्राता हूँ।
कहै रतनाकर रुचिर रुचिकारी जाहि
जानैं संभु-सहित गजानन की माता हूँ॥
आइ इहिं घाट पै धुवाइ पट मानस कौ
होत सुचि स्वच्छ सँतहू मैं सूम दाता हूँ।
ऐसौ देखि पातक पखारन कौ यामैं ग्वार
व्रजरज संचि बन्यौ रजक विधाता हूँ॥ १॥

सिद्धनि की सिद्धि औ समृद्धि तप-वृद्धनि की
परम प्रसिद्ध रिद्धि प्रेम-निधि वर की।
कहै रतनाकर सुरस-रतनाकर की
सुचि रतनाकर - निधान धूरि छर की॥

भक्ति की प्रसूति भुक्ति मुक्तिनि की सूति मंजु
परम प्रभूत है विभूति बिस्व-भर की ।
वृंदारक - बृंद जामैं लहत अनंद - कंद
ऐसी रज बंद्य बृंदाबन के डगर की ॥ २ ॥

भेजे देत जीव जंतु संतत न जानैं कहाँ
मानैं यहै तंत पै पतौ न लहि जाइगौ ।
कहै रतनाकर विधाता कहै त्राता टेरि
कब लौं कहौ जो खीस-खाता सहि जाइगौ ॥
हेर-फेरहू तौ मेरु होत या जरा मैं नाथ
अब ना नए सिर सौं ठाठ ठहि जाइगौ ।
भाव रहि जाइगौ यहै जौ ब्रजमंडल कौ
प्रानिनि के भाव कौ अभाव रहि जाइगौ ॥ ३ ॥

संपति विलोकि नंदराय वृषभानु जू की
संपति सुरेसहू की भासति भिखारी सी ।
कहै रतनाकर सुबृंदावन कुंजनि पै
वारियत कोटि कोटि नंदन की वारी सी ॥
रज की न जाति बात बरनी हमारैं जान
आठौं सिद्धि नवौं निधि मग मैं बगारी सी ।
निरखि निकाई ब्रज-नागरि नवेलिनि की
रंभा उरवसी रमा लागतिं गँवारी सी ॥ ४ ॥

जल जमुना कौ जसुदा कौ कियौ कज्जल लै
गोपिका-मटूकी मसि-भाजन भराऊँ मैं ।
कहै रतनाकर कलम पुटिया लै करूँ
कान्ह की लुकटिया कहूँ जो परी पाऊँ मैं ॥

बंसीघट पातनि के बिसद बनाइ पत्र
बिजन करीर-कुंज आसन लगाऊँ मैं।
ब्रज-महिमा कौ एक रजहूँ सुलेखौ तऊ
आवत परेखौ कहा लेखि लिखि पाऊँ मैं ॥ ५ ॥

जद्यपि न दूरि मधुपुरि कछु श्रीवन तैं
अरग न तौ हूँ एक परग सिधै हैं हम।
कहै रतनाकर वियोग - ज्वाल - जालनि मैं
जरि वरु बृंदावन-रज मैं बिलैहैं हम ॥
तन की कहै को मन प्रान आतमा हूँ सबै
याही के कनूका पै तिनूका लौं लुटैहैं हम।
जौ हूँ ब्रजवासी प्रेम पद्धति उपासी तऊ
अन्य धाम स्याम हूँ सौं मिलन न जैहैं हम ॥ ६ ॥

(३) श्रीराम-विनय

पाइ वर गोपी ग्वाल ह्वै कै संग खेलन कौ
आनँद सकेलन कौ मौज मन भाई मैं।
कहै रतनाकर मुनीस बन दंडक के
मगन उमंग की तरंग सुखदाई मैं॥
भूलि भूलि देस-काल-ज्ञान गुन-मान सबै
पूछत परसपर सरस अतुराई मैं।
ब्रज की जवाई मैं कितेक वेर लागै कहौ
कैक दिन और अहो द्वापर अवाई मैं॥

(७) श्रीहनुमद्महिमा

संतत हिमायत-हमेव मैं छक्यौ सो रहै
ताकी छाक छनक उछाकि को सकत है।
कहै रतनाकर जमी जो जग ताकी धाक
ताहि फलफंदनि फलाकि को सकत है॥
ताके सामना को करि कामना कुटिल कूर
मूढ़ मदचूर ह्वै न थाकि को सकत है।
बाँह दै बसावै जाहि बाँकौ हनुमान ताहि
तनक तरेरि तीखैं ताकि को सकत है॥१॥

दलिमलि जात दर्प दुष्ट-दल-दानव कौ
पूरै आयु पिसुन-पिसाचनि पत्यारी की।
कहै रतनाकर बिलाति सुख-स्वप्न-साध
बाधक बिपच्छि-पच्छ-राच्छस कुचारी की॥
बिमुख-बितंडी-प्रेत-मंडी खंड खंड होति
अंडबंड बात चाई-भूत-भीर सारी की।
बैरिनि के फेफरे फलकि फटि फाँक होत
हाँक होत बाँके बजरंग धाक-धारी की॥२॥

आपि अवलंब जगदंब अवधेस्वरी कौं
अरि की असोक-बाटिका धरि उजारैगौ।
कहै रतनाकर त्यौं अच्छय-घमंड खंडि
चंडकर-पूत-दीठि चंडनि पै पारैगौ॥
देहै अमी-मूलिका सुमित्रानंद रच्छन कौं
बेगि हीं बिपच्छिनि के पच्छनि कौं छारैगौ।
भारी-भीर-भंजन प्रभंजन कौ पूत बीर
गंजन गनीम कौ गुमान करि डारैगौ॥३॥

कैधौं बलसागर की उद्धत तरंग तुंग
बोरन कौं सेना रजनीचर अकूत की।
कहै रतनाकर कै संत-मान-रच्छन कौं
महिमा वसिष्ठ-दंड परम प्रभूत की॥
जानकी के सोक जलजान की मथूल किधौं
कैधौं बर व्रज की विभूति पुरहूत की।
कठिन कराल काल-दंड की रुजा है राम
जीत की धुजा है कै भुजा है पौनपूत की॥४॥

याही तैं हँकारत हुते ना हनुमान होति
हलबल भारी तुम्हैं जन-रखवारी मैं।
कहै रतनाकर पै आनन उदास चाहि
लीनी थाहि बात जो न सकुचि उचारी मैं॥
कर भुजडंडनि न फेरौ औ न हेरौ गदा
इतनौ बखेरौ ना हिमायत हमारी मैं।
दलिमलि जाइहैं विपच्छिनि के पच्छ सबै
तनक सरीखी तीखी ताकनि तिहारी मैं॥५॥

एहो हनुमान मान एतौ जौ बढ़ायौ जग
राखियै तो ध्यान आन-बान के निभाए कौ।
कहै रतनाकर विसारियै न कानि बर
विरद सँभारियै कृपाल के कहाए कौ॥
और की न पौरि पै पठैयै मन ठैयै यहै
आपही बनैयै सब काज अपनाए कौ।
फेरियै निगाह ना गुनाह हूँ किये पै लाख
राखियै उछाह निज बाँह दै बसाए कौ॥६॥

(८) श्रीज्वालामुखी-विनय

ज्वाला-मुखी माइ दिव्य दरस तिहारौ पाइ
भव्य भावना मैं इमि मति अनुरागी है।
कहै रतनाकर दिवाकर दिया के यह
लेसन कौं मानहू असेस लव लागी है॥
कैधौं मनि कामद-मयूप की छटा है किधौं
सुर-मुनि-तेज-लय अमल अदागी है।
कैधौं वेद-कवि की प्रतच्छ प्रतिभा है कैधौं
प्रगट-प्रभा है आदि जोत जग जागी है॥१॥

सकल मनोरथ की सिद्धि बल-बुद्धि-वृद्धि
संपति-समृद्धि दै दुलारतै रहति है।
कहै रतनाकर निहारि करुना की कोर
करवर-निकर निवारतै रहति है॥
दारिद के व्यूह औ समूह दुरभागनि के
पातक के जूह जोहि जारतै रहति है॥
ज्यालामुखी मातु निज भक्तनि सुखी कै सदा
भुक्ति-मुक्ति-वृंदनि बगारतै रहति है॥२॥

सकल सँचारन का सिद्धि सुभ तोमैं ताकि
विधि-बुधि जोग औ अजोग की विसारी है।
कहै रतनाकर तिहारौ प्रतिपाल हेरि
परिहरि चिंता सुख-नींद हरि धारी है॥
दुष्ट-दल घालन की घात मैं विलोकि तोहिं
अचल समाधि साधि राखी त्रिपुरारी है।
भारत की आरत पुकार सुनिबै कौं एक
ज्वालामुखी मात जोति जागति तिहारी है॥३॥

(९) श्रीसती-महिमा

बैठि कै हुतासन कैं आसन अकास जाइ
लीन्ही हठि संगति उमंगति पती की है।
कहै रतनाकर निहारि सब दंग भए
ऐसी रही रंगत न जंगम जती की है॥
जाकौ गुन सुनि मुनि-पतनी सिहातिँ सदा
कहत रसाति रीझि रसना रती की है।
वेदनि सौं उमड़ि पुराननि कैं पूरि बढ़ी
तीनौं महि माहिँ महा महिमा सती की है॥

(१०) दीपक

जब विधि-विरचित दिव्य दीप अस्ताचल जावै।
दुख-दायक तम-तोम व्योम-छिति-छोरनि छावै॥
तब गुन-रासि कपास नेह भरि हृदय हुलासै।
निज काया करि नास और कौ बास प्रकासै॥१॥

तब सानंद सुबंदनीय दीपक-पद पावै।
ज्योति-रूप कौ रूप जानि तिहिँ जग सिर नावै॥
देव-मंदिरनि माहिँ पाइ सुभ ठाम विराजै।
राजनि के सुभ सदन माहिँ मंजुल छबि छाजै॥२॥

कवि पंडित कैं धाम होत आदर अधिकारी।
सुजन-सभा मैं करति प्रभा ताकी उजियारी॥
पै यह लहि सनमान नैंकु निज बानि न त्यागत।
सबही कैं उपकार हेत एकहि सौ जागत॥३॥

नीच दरिद्री मूढ़ कूढ़ मूरख पापी कौँ।
देत प्रकास समान रूप रुचि सौँ सबही कौँ॥
स्वर्न रजत के पात्र माहिँ नहिँ अधिक प्रकासै।
नहिँ माटी के घटित दिया मैँ कछु घटि भासै॥
जब रोम रोम इमि नेह भरि गुनमय सबकौ हित करै।
तब लहि पदवी कुल दीप की दीप दीप दीपति भरै॥४॥

(११) भारत

भारत पै दुरभाग्य-प्रबल-बज्री कोप्यौ है।
इहिँ हिय जानि अनाथ नाथ चाहत लोप्यौ है॥
महा घोर अज्ञान-तिमिर-घन चहुँ दिसि छावत।
मूसलधार अपार बिपति-जल खल बरसावत॥
अब धाइ कृपाचल धारि भुव बेगहिँ आइ उबारियै।
नतु गिरिवर-असरन-सरन बाँको बिरद बिसारियै॥१॥

अहो आर्य संतान मान उन्नत अति धारी।
सब मिलि अब इहिँ भाँति मनाओ दिव्य दिवारी॥
ज्ञान-दीप की मंजु माल उर-अंतर मेलौ।
उन्नति-चौसर चारु प्रान-पन सौं खुलि खेलौ॥
सुभ मनसा बाचा कर्म के अच्छ दच्छताजुत धरौ।
जुग बाँधि साधि निज चाल चलि मार काढ़ि बाहिर करौ॥२॥

आरत होहु न भारतवासी संभारत दुःख सबै टिलि जात है।
ज्यौं रतनाकर हाथ औ माथ हिलाएँ हिमाचल हूँ हिलि जात है॥
काह न होत उछाहनि सौँ मृदु कीट हू पाहन मैँ पिलि जात है।
आरस त्यागि कै डारस कीन्हैं सुधारस पारस हूँ मिलि जात है॥३॥

क्या अब कृपा का भी न यह अधिकारी रहा
या कुछ कृपा ही ने निठुरपन धारा है।
कहे रत्नाकर उसी की तो दशा है यह
जिसको अनेक वार तुमने दुलारा है॥
हारा बल पौरुप न इष्ट रहा कोई कहीँ
एक आपही की दया-दृष्टि का सहारा है।
हाथ पावँ मारा भी न जाता इससे है अब
गारत हुआ योँ हाय भारत हमारा है॥४॥

(१२) हरिश्चंद्र

मूरति सिँगार कौ अगार भक्ति-भायनि कौ
पारावार सील औ सनेह सुघराई कौ।
कहै रतनाकर सपूत पूत भारती कौ
भारत कौ भाग औ सुहाग कवितार्इ कौ॥
धरम धुरीन हरिचंद हरिचंद दूजौ
मरम जनैया मंजु परम मिताई कौ।
जानि महिमंडल मैँ कीरति समाति नाहिँ
लीन्यौ मग उमगि अखंडल अथाई कौ॥

(१३) शुद्धि

क्रुद्ध है मलेच्छनि की सुद्धि के विरुद्ध-बने
जाल जे कुबुद्धि तनैँ उद्धत अड़ंगा कौ।
कहै रतनाकर न संकुचित होत रंच
परम प्रपंच रचैँ दंभ अरु दंगा कौ॥

लाइ कैं लबार हरताल निगमागम पै
छाइ कै विकार निज कुमति कुढंगा कौ।
झाँप हरिनाम के प्रताप पर पारत हैं
गारत हैं गौरव गँवार गुनि गंगा कौ ॥१॥
मानत हुते कैं यह मंजुल महान मंत्र
सब सुख-साधन की सिद्धि उपजावैगो।
कहै रतनाकर पै धरम-धुरीननि सौं
जानि पर्यो सो तौ कछु काम काम नहिं आवैगो ॥
म्लेच्छनि के रंचक प्रपंच-पँच सौं जो ऐंचि
हिंदुनि की पाँति मैं सुभाँति ना बिठावैगो।
सोई हरि नाम जम-पास तैं निकासि कहा
सुखद सुपास सुर-वास मैं बसावैगो ॥२॥
वेद कौं न मानैं ना पुरान भेद जानैं कछू
ठानैं ठान आपने लबेद अड़बंगा की।
कहै रतनाकर नसावैं सुद्ध स्वारथ हूँ
आड़ मैं अनोखे परमारथ-भड़ंगा की ॥
जैन अरु बुद्ध स्वामि-संकर किये जो सुद्ध
ताहू के विरुद्ध जुक्ति जोरत लफंगा की।
भक्ति तौ बखानैं पर रंचक प्रमानैं सक्ति
गुरु की न गोबिंद की गाय की न गंगा की ॥३॥

(१४) अन्योक्ति

आयसु दै टेरि बलि-पायस खवैऐं खिन
निज गुन रूप की हमायस बढ़ावै ना।
कहै रतनाकर त्यौं बावरी वियोगिनि कैं
कंचन मढ़ाऐं चंचु चाव चित ल्यावै ना ॥

निज तन धारे इंद्र-नंद मतिमंद जानि
मानि दृग-हानि हियैं हौंस हुमसावै ना।
हंस कौ दिखावै ना नृसंस गति-गर्व छाक
ए रे काक कोकिल कौं काकली सुनावै ना॥

(१५) शांत रस

देखै देखि देखन की दीठि दई जाहि दई
इहिँ जग जंगम न कोऊ थिर थावै है।
कहै रतनाकर नरेस रंक सूधौ बंक
कोऊ कल नैंकु एक पलक न पावै है॥
ऐसी कछु चपल चलाचल चली है इहाँ
जीवन तुरी पै अति आतुरी मचावै है।
किरन-छटा सौं दिन तरनि ततावै रैनि
वेगि चलिवे कौं चंद चाबुक लगावै है॥

(१६) गंगा-गौरव

गंग-कछार कैं मंजुल वंजुल, काक कोऊ महामोद उफानै।
देखत प्राकृत सुंदरता पद, प्राकृत ही के हियैं ठिक ठानै॥
पाइ सुधा-सम वारि अघाइ न, आपनी जोट कोऊ जग जानै।
हंस कौं हाँस मजूर मयूर कौं, कोइला कोकिला कौं मन मानै॥१॥

पापिनि की मंडली लुकाए देति जानैं कहाँ,
धाए तिहुँ लोक पै न पावति पतीजियै।
कहै रतनाकर विधाता सौं पुकारै जम,
खाता खीस होत सबै याही दुख छीजियै॥

पूछँ उठै गाजि तापै हँसत समाज सबै,
लाजनि कहाँ लगि लहू की घूँट पीजियै।
कैतौ कैद कीजियै कमंडल मैँ गंग फेरि,
कैतौ यह साहबी हमारी फेरि लीजियै ॥२॥

(१७) स्फुट काव्य

जाके सुर प्रबल प्रबाह कौ झकोर तोर
सुर-नर-मुनि-बृंद-धीर-बिटप बहावै है।
कहै रतनाकर पतिब्रत परायन की
लाज कुलकान कौ करार बिनसावै है॥
कर गहि चिबुक कपोल चल चूमि चाहि
मृदु मुसुकाइ जो मयंकहिँ लजावै है।
ग्वालिनि गुपाल सौँ कहति इठलाय कान्ह
ऐसी भला कोऊ कहूँ बाँसुरी बजावै है॥१॥

जब तैँ रची है रूप रावरे रसिकलाल
तब तैँ बनी है बाल बात बरकत की।
कहै रतनाकर रही है रुचि नैननि मैँ
मीन मृग मंजुल मुकुन ढरकत की॥
आठौ जाम बाम मग जोहत मृगी सी जब
चौँकै पाय आहट तिनूका खरकत की।
अनुराग रंजित अवाज सौँ कढ़त स्याम
मानिक तैँ मानहु मरीचि मरकत की॥२॥

ज्यौँ भरि कै जल तीर धरी निरख्यौ त्यौँ अधीर ह्वै न्हात कन्हाई।
जानै नहीँ तिहिँ ताकनि मैँ रतनाकर कीनी कहा टुनहाई॥
छाई कछू हरुवाई सरीर कै नीर मैँ आई कछू भरुवाई।
नागरी की नित की जो सधी सोई गागरी आजु उठै न उठाई॥३॥

लै लियौ चुंबन खेलत मैं कहूँ तापै कहा इतनौ सतरानी।
हौंठनि हीं मैं कछू करि सौं हैं वृथा भरि भौंह कमान हैं तानी॥
लीजियै फेरि सबेर अबै अबहीं तौ मिठासहुँ नाहिं सिरानी।
यौं कहि सौं हैं कियौ अधरा इन, वे तिरछौं हैं चितै मुसकानी॥४॥

स्वासनि की मृदु मंजुल बास सु एला बरास-बिलास बसावति।
सील सकोच की रोचकता रतनाकर त्यौं रसता अधिकावति॥
दाँतनि की दुति बातनि मैं बिथुरे त्वग छीरक की छबि छावति।
पाटल की पंखुरी अधरानि कौं मंद हँसी गुलकंद बनावति॥५॥

तंग अँगिया सौं तन्यौ चोटी सौं चमोटी पाइ
हिय हुमसावत सुढंग चल्यौ जात है॥
कहै रतनाकर त्यौं जोबन उमंग भर्यौ
ग्रीवा तानि उन्नत उतंग चल्यौ जात है।
पायौ मरुभूमि मैं कहाँ तैं इतौ पानिप जो
पूरत तरंग अंग अंग चल्यौ जात है।
घूँघट बनाए ठमकत पैंड़ पैंड़ लखौ
ऐंड़त अनंग कौ तुरंग चल्यौ जात है॥ ६॥

देति ही काल्हि ही सीख हमैं पर आपु ही आज मलोलन लागी।
सामुहैं आयौ सुबोल बड़ौ अब तौ लघुता लिए बोलन लागी॥
रूप-सुरा रतनाकर की चखतैं अँखियाँ इमि लोलन लागी।
बावरी लौं बलि कुंजनि कुंजनि भाँवरी देत सी डोलन लागी॥७॥

मोहन की मनमोहनी मूरति देखैं बिना कल पावत नाहीं।
देखैं अदेखिनि की अबलो कहूँ तालु सौं जीभ लगावत नाहीं॥
कीजियै कैसी दई की दया मरिबेहूँ कौ ब्यौंत बनावत नाहीं।
मीच की कौन कहै रतनाकर नींद हूँ नीच तौ आवत नाहीं॥८॥

ठाढ़ी अबै चलि होहु कहूँ न तु बीर न भीर मैं पावैं थिरैंगे।
हाट औ बाट अटारिनि के वर-द्वारिनि के सब ठाम घिरैंगे॥
देखन कौं रतनाकर के बस नैंकु मैं एक पै एक गिरैंगे।
धेनु चराइ बजावत बेनु सुन्यौ इहिं गैल गुपाल फिरैंगे॥ ९॥

जोग को भोग न भैहै हमैं सो सँजोग की भावना टारी न जैहै।
रूप-सुधा-रतनाकर छाँड़ि तृपा मृग-नीर निवारी न जैहै॥
हौड़ न आइबे आइबे की परी ऊधव सो अब हारी न जैहै।
धारी न जैहै तिहारो कही वह मूरति मंजु बिसारी न जैहै॥१०॥

हटकन संभु कौ न मानि हठ ठानि चली
आई पितु गेह बात जानि सु उछाह की।
कहै रतनाकर तहाँ न सनमान पाइ
मन पछितान मैं बिलानी गति चाह की॥
पति अपमान मानि जदपि जराई देह
तदपि समस्या भई कठिन निबाह की।
भावी बस और की कहै को यौं सती हुती कै
ती हती पतिव्रता कही न मानी नाह की॥११॥

दंत मुकतालो मैं निराली लसै लाली वलि
अधर चुनी तैं प्रभा नीलम की फूटी है।
कहै रतनाकर कपोल पद्मरागनि पै
कल कुरुविंद की छबीली छटा छूटी है॥
कैसी मनवारी माल धारी है अनोखी यह
जाकी बिन गुन ही पत्यारी रहै जूटी है।
जूटी है कहाँ तैं यह संपति प्रबीन आज
कौन से नवीन जौहरी की हाट लूटी है॥१२॥

जमुना-कछारनि पै बन-द्रुम-डारनि पै
औरै कछू मंजु मधुराई फिरि जाति है।
कहै रतनाकर त्यौं नगर अगारनि पै
द्वारनि पै बनक-निकाई फिरि जाति है॥
नर-पसु पच्छिनि की चरचा चलावै कौन
पौन गौनहू मैं सरसाई फिरि जाति है।
जहाँ जहाँ बाँसुरी बजावत कन्हाई वीर
तहाँ तहाँ मदन-दुहाई फिरि जाति है॥१३॥

मन होत्यौ न जौ पहिलैं हीं तौ ता बिन होती न ऐसी दसा तन की।
रतनाकर जानै सु मानै बिथा निधि पाइ कै हाय गँवावन की॥
नहिं आनन की कछु आनन पै चतुराई चितै चतुरानन की।
हाथ ही पारिबौ हो मन जौ तौ रच्यौ किन मोहिं बिना मन की॥१४॥

फूल मंडली कौ बर बानक बन्यौ है बन
चारौं आस सुख सुखमा की रासि छ्वै रहीं।
कहै रतनाकर रसिकमनि स्यामास्याम
झूलत हिंडोरैं सखि चहुँघाँ उनै रहीं॥
केती रस घूमि रहीं केती झुकि झूमि रहीं
चूमि चूमि आँगुरी बलैया किती लै रहीं।
केती झनकारि नचैं नूपुर नगीना अरु
बीना लिए केतिक प्रबीना गान कै रहीं॥१५॥

लै लियौ चुंबन तौऽब कहा अधरा तौ रह्यौ तुम पास तुम्हारौ।
एते ही पै इतनौ करि रोस कियौ इमि तेवर तानि करारौ॥
पै अपनौ तौ कियौ नहिं देखतिं लेखतिं ताहि तौ खेल पसारौ।
देखौ हियैं धरि हाथ अहो तन मैं न रह्यौ मन हाय हमारौ॥१६॥

भाव नए चित चाव नए अनुभाव नए उपराजति ही रहै।
आँसु सौं नैन उसास सौं आनन गाँस सौं प्राननि छाजत ही रहै॥
कीजै कहा रतनाकर हाय अकाज के साजनि साजति ही रहै।
कानन मैं बिन बाजैं हूँ बैरिनि काननि मैं नित बाजति ही रहै॥१७॥

लालसा लगीयै रहै भरि दृग देखन कौं
सुंदर सलोने वहै साँवरे पुरुप के।
जोहि जोहि मोहौं जाहि सो छवि न जोहौं फेरि
घेरि रहौं याही हेर फेर मैं बपुप के॥
पारावार सुखमा अपार के हलोरनि सौं
औरै और चोप चढ़ै होत सनमुख के।
पल पल माहिँ होति प्लावित पयोनिधि मैं
बिपुल बियोग औ सँजोग दुख सुख के॥१८॥

मोहे नैन जोहि कै सुरूप सुखमा कौ ऐन
स्रौन सुनि बैन जो सु-चैन-रस बोह्यौ है।
कहै रतनाकर रसीली रसना रुचि कौं
बतरस-लालच छकाइ छरि छोह्यौ है॥
सुखद सुबास पै लुभानी बास-बासना है
अंग-अंग परस उमंग-रस पोह्यौ है॥
सोह्यौ है कहा पै तोहिँ परत न जानि मोहिँ
एरे मन जानि तैं अजान कहा मोह्यौ है॥१९॥

खेलन कौं ख्याल औ गुलाल रंग मेलन कौं
साल पाछिले लौं संग सखिनि सिधारी मैं।
कहै रतनाकर पै अब कैं अनोखी कछू
अति बिपरीति रीति नवल निहारी मैं॥

हाँ तौ लख्यौ साबर-बसीकर-प्रभाव मंत्र
निपट स्वतंत्र गीति अटपटवारी मैं।
तंत्र-मूठि चलति गुलाल की निहारी अरु
मोहन कौ मंत्र जग्यौ जंत्र पिचकारी मैं ॥२०॥

सारी सखी मंडली मनाइ समुझाइ थकीं
निज-निज गुन के गुमान सब गारैं हैं।
कहै रतनाकर रसिक मनि मोहन हूँ
मोहन कौं करि मनुहार मन हारैं हैं॥
एते माहिं धाइ लगी लाल के हिये सौं बाल
चातक कलापी दापी सुनि ललकारैं हैं।
ढारैं स्वच्छ सुरस सदाई घनस्याम तातैं
लच्छ करि पच्छ मोर-पच्छ सिर धारैं हैं॥२१॥

तौ कत अक्रूर क्रूर आए इहिं गाम लैन
एक ही सौं सो जौ ठाम ठाम ठहरायौ है।
कहै रतनाकर हतायौ किन तासौं कंस
घट-घट जाकौ निरगुन गुन छायौ है॥
बिन सिर पाय की उचारन चले जो बात
ताकौ यहै कारन हमारैं मन आयौ है।
रूप तौ इहाँहीं रह्यौ हिय मैं हमारैं तुम्हैं
ताही तैं अरूप-रूप भूप दरसायौ है॥२२॥

थाती राखि रूप की हमारी हाय छाती माहिं
बाल कौ सँघाती घाती बनि बिलगायौ है।
कहै रतनाकर सो सूधौ न्याव ही तौ ऊधौ
मधुपुरि माहिं जो अरूप सो लखायौ है॥

कुटिल कुचारी के निगीरन मुखारी पर
वक्र चाहि चक्र चरखे की फाल वाँधी है।
ग्रसित गुरंड-ग्राह आरत अथाह परे
भारत-गयंद कौ गुविंद भयौ गाँधी है ॥३०॥
१—१—३१

बौरे बैद बींदत कहा धौं इहिं रोग माहिं
सारे जोग जतन अजोग-जोगवारे हैं।
कहै रतनाकर गुनत गारुड़ी तू कहा
यामैं जंत्र मंत्र तंत्र निपट नकारे हैं॥
हाय हितचिंतक चितावत कहा तू चिंति
चाव चित इनकैं अचिंत-गति-वारे हैं।
एरे गुनी गनक गुनत तू कहा धौं बैठि
प्रेमिनि के नभ मैं न ग्रह हैं न तारे हैं॥३१॥
८—१—३१

बिषम वियोग-रोग-पीर सौं अधीर ह्वै कै
वेदन कौ भेद मन बैद कौं सुनायौ है।
कहै रतनाकर सु नारी-उदवेग जानि
निपट निदान कै बिधान ठहरायौ है॥
नेह कौ पचैऔ तप्यौ जीवन अँचैबौ घूँटि
नींद भूख प्यास कौ वचैबौ समुझायौ है।
नैननि कैं पाथ काथ कुमुद-हिये कौ कह्यौ
दलित करेजौ पथ्य पावन बतायौ है॥३२॥
३१—१—३१

चल चित चाहि इन्हैं चंचल बतावत पै
ये तौ आनि अचल हिये मैं करैं डेरे हैं।
कहै रतनाकर निकाम कामवान गनैं
ये तौ कामना के घाय पूरत घनेरे हैं॥
कहत सरोज जे न पावत प्रमान-खोज
ये तौ रूप-पानिप-अनूप-मौज हेरे हैं।
कहत कुरंग जे न जानैं कछु रंग ढंग
परम सुरंग ये तिरंग नैन तेरे हैं॥३३॥

६—२—३१

परम प्रचंड मारतंड की मरीचिनि सौं
ग्रीषम कौ भीषम प्रताप इमि छायौ है।
कहै रतनाकर मयंक मनि-कांत भयौ
सांत राति हू मैं पारि किरन जरायौ है॥
वहति लुवार मनौ दहति दवारि देह
कैधौं फनिपति फुफकार-झार लायौ है।
कोऊ किधौं विकल वियोगिनि बिनै कै फेरि
तीसरौ त्रिलोचन कौ लोचनि खुलायौ है॥३४॥

७—२—३१

कूजन लगे हैं पिक पंचम रसीले राग
गूँजन लगे हैं भौंर-संघ सुघराई मैं।
कहै रतनाकर रसाल बौरि झूलि उठे
फूलि उठे सुमन अनंद अधिकाई मैं॥

साजन लगे हैं साज सुखद सँजोगी गन
बाजन लगे हैं बाज विसद बधाई मैं।
दंत लागे चाँपन बियोगी कहि 'हाय हंत !'
संत लागे काँपन वसंत की अवाई मैं ॥३५॥
८—२—३१

नाचत स्याम सदा इनपै तऊ ये तौ रहैं दिखसाध मैं सानी।
चाहतिं रूप कौ लाहु लहैं पै सहैं सुख संपति की नित हानी ॥
है बिपरीत महा रतनाकर रीति परै इनकी नहिं जानी।
पानिप ही की तृषारत हैं तऊ ढारति हैं अँखियाँ नित पानी ॥३६॥
११—२—३१

करति बिचारि नाहिं घाम छाहिं हूँ कौ कछू
चाहन-उमाह सौं अथाहनि भरी रहै।
कहै रतनाकर सु रोकत रुकै न रंच
टोकत सखीनि हूँ कैं विलखि लरी रहै॥
लटकि मुरेरे सौं करेरे कुच टेकि नैंकु
कान दिये आहट पै थानहिं थरी रहै।
जब तैं निहारी लाल रावरी छटा री बाल
तब तैं अटारी आनि अटकि अरी रहै ॥३७॥
१०—२—३१

लाल पै गुलाल की चलाई राधिका जो मूठि
मूठि ह्वै परी सो कर-कंपन ते खोटी है।
कहै रतनाकर सम्हारि पिचकारी उन
प्यारी कुच-कोर कौं निहारि उत जोटी है॥

नैंकु नैन सौहैं तैं टरै न इनके सोभाइ
मुरि मुसुकाइ जो पिछौंहैं चोट ओटी है।
चोटी लहरी जो लुरि पीठि पै सुहागिनि की
नागिनि ह्वै कान्ह के करेजैं वह लोटी है ॥३८॥

तरुवर-झुंड कहूँ झुकि झहरात कहूँ
सघन लतानि के बितान झपि झूमि रहे।
कहै रतनाकर कहूँ हैं सर ऊसर औ
कहूँ कुस कास के बिलास भरि भूमि रहे ॥
फुदकि बिहंग कहूँ कौंपल कँपावैं कहूँ
कुदकि प्लवंग कहूँ साखनि कौं दूँमि रहे।
जुरत जलासनि चरासनि कुरंग संग
बाघ कहूँ तिन पैं लगाए घात घूमि रहे ॥३९॥

१४—२—३१

तरनि तनूजा तीर बीर अवलोक्यौ आज
वर ब्रजराज साज सुषमा अभापी कौ।
रस रतनाकर की तरल तरंगनि सौं
होत चल विचल सुचित्त अभिलाषी कौ ॥
चाह भरि चाहिबौ सराहिबौ उमाहि ताहि
थाहिबौ है अमित अफास लघु माखी कौ।
पूरतो कछुक रूप-रासि लखिबे की आस
आँखिनि मैं होत्यौ जौ निवास सहसाखी कौ ॥४०॥

१५—२—३१

छूटै जटा जूट सौं अटूट गंगधार धौल
मौलि सुधागार कौ अधार दरसत है।
कहै रतनाकर रुचिर रतनारे नैन
कलित कृपा कौ चारु चाव सरसत है॥
चारौं कर चारौं फल वितरत चारौं ओर
और लेनहारे ना निहारैं अरसत है।
दै दै बरदान ना अघात पंच आनन सौं
देखि सहसानन सिहात तरसत है॥४१॥
१५—२—३१

आए बुझावन कौं ब्रज मैं पर
ब्रह्म हुतासन की लव लावत।
है रतनाकर - मीत अहो नहिँ
रंचक धीरज - नीर सिँचावत॥
लाज की आहुती पारि चले इत
ताही सौं ऊधव हाय कहावत।
लाइ गए हरि आगि बियोग की
औ तुम जोग की बात चलावत॥४२॥
१७—२—३१

खेलन मैं मिस कै गुलाल मूठि मेलन कौ
नैननि अनूठी मूठि चेटक की दै गयौ।
कहै रतनाकर सुरंग रंग पारि अंग
स्याम निज रंग हियैं रुचिर रचै गयौ॥

करि कै वहानौ मनमानौ फाग भेंटन कौ
बीज अनुराग कौ सु रोमनि मैं वै गयौ।
जानी पहिलैं तौ हाय होली की ठठोली, पर
चोली की टटोली मैं मरोरि मन लै गयौ ॥४३॥

१८—२—३१

कीजियै हाय उपाय कहा
अपने सियराइवे कौं हमैं दाहतिं।
रूप – सुधा रतनाकर की सु-
चखावन काज निरंतर नाहतिं॥
और रहीं कितहूँ की नहीं
अँखियाँ दुखियाँ उतहीं कौं उमाहतिं।
ऐसी भई दिखसाध असाध कै
देख्यौ अवै पुनि देखिबौ चाहतिं ॥४४॥

१८—२—३१

देखिवे कौं अकुलानी रहैं नित
पीर सौं रंचक धीर न धारतिं।
त्यौं रतनाकर रैन-दिना कलपैं
पल पै पल नैंकु न पारतिं॥
ये अँखियाँ पँखियाँ बिनु हाय
सहाय कौं और न व्यौंत बिचारतिं।
धाइवे कौं उत ध्याइ मनाइ कै
पाइनि पै जल-अंजलि ढारतिं ॥४५॥

राधिका कौ इक चित्र लिए कोऊ
आई सकाति सँभारति चीरैँ ।
पाइ चितेरिनि त्यौर मैँ सो
रतनाकर औरही आतुरी-भीरैँ ॥
ठाढ़ी छकी सी रही पल रोकि
बिलोकि चकी सी रहीँ सब बीरैँ ।
दोय तैँ एक भए मन दोऊ के
एक तैँ ह्वै गईँ द्वै तसबीरैँ ॥४६॥

१९—२—३१

एक ही साँचौ स्वरूप अनूप है
खाँचौ यहै मन एक लकीरैँ ।
त्यौँ रतनाकर सेस कौ भेस
असेस लसैँ भ्रम की भरी भीरैँ ॥
ता बिनु और जो देखि परै
थिति ताकी सुनौ औ गुनौ धरि धीरैँ ।
लोचन द्वैतता दोष लगैँ
यह एक तैँ ह्वै गईँ द्वै तसबीरैँ ॥४७॥

१९—२—३१

सासु के नैँकु न त्रास गुनै
न सुनै कछु सीख जो देति जिठानी ।
त्यौँ रतनाकर आन धरै न तौ
कान करै सखियानि की बानी ॥

देखन ही की सु. घात मैं डोलति
बोलति बात सबै त्रिततानी।
रोवत रोवत ही अब तौ गिरि
बाकी गयौ अँखियानि कौ पानी ॥४८॥
२०—२—३१

नीरव दिगंगना उमंग रंग-प्रांगण में
जिसके प्रसंग का अभंग गीत गाती हैं।
अतुल अपार अंधकार विश्व-व्यापक में
जिसकी सुज्योति की छटाएँ छहराती हैं॥
जिसके अमंद मुखचंद के विलोके बिना
पारावार - तरल - तरंगें उफनाती हैं।
पाने को उसी की बाँकी झाँकी मन-मंदिर में
मंद मुसकाती गिरा गुप्त चली आती हैं ॥४९॥

औधि तौ ज्यौं त्यौं व्यतीत भई अब
जात न धीरज बोधि धर्यौ है।
त्यौं रतनाकर बातनि सौं न तु
पातिनि सौं तन-ताप सर्यौ है॥
आपुहिं धारियै पाइ उतै हम पै
तौ उपाय न जाय कर्यौ है।
प्रान उसास ह्वै जात उड़्यौ अरु
आँस ह्वै जीवन जात ढुर्यौ है ॥
४-३-

चोरमिहीचिनि - हार - गिलानि न
मानि इतौ मन मैं अवसेरौ।
प्यारी दिवारी की रैनि अहो
रतनाकर सौं इमि नैन न फेरौ॥
चुंबन की बदि बाजी अबै तुम
सारि लै आपनैं हीं कर गेरौ।
हार औ जीत हू कौ सुख सौं रहै
रावरे ही मुख सौं निबटेरौ॥५१॥
१२—३—३१

तू तौ कहै अलकावली भौंर सी
मो मत ये अलि आहिं जँजीरैं।
तोहिं तौ कंज से नैन लगैं पर
मैन के बान लौं मोहिं बिदीरैं॥
है कछु नैननि ही कौ विवेक कै
एक सौं ह्वै गईं द्वै तसबीरैं।
तोहिं तौ मूक है चित्र पै मोहिं
बतावत भाव विचित्र की भीरैं॥५२॥
२५—३—३१

निकसत चारु चुभकी लै मुख मंडल पै
केसनि कौ कलित कलाप मढ़ि आयौ है।
मानौ निज वैरि के कढ़त रतनाकर तैं
व्योम तैं पसरि तम-तोम बढ़ि आयौ है॥

ताहि सरुझाइ उझकाइ सीस टार्यौ बाल
भाव यह चित पै सचाव चढ़ि आयौ है।
मानौ मंद राहु के निवारि तम फंद बंद
अमल अमंद चारु चंद कढ़ि आयौ है ॥५३॥
१५—४—३१

आवत हीं सुधि रावरी रंचक
ही मैं हजार हुलास भरैं हैं।
औ रतनाकर नाम लिऐं सु
उसास है आनन आनि अरैं हैं ॥
जानि यहै मन मैं रतनाकर
रावरे पंथ की धूरि धरैं हैं।
राखत आँखिनि मैं न रहैं
अँसुवा बनि पाइनि आनि परैं हैं ॥५४॥
१५—४—३१

कोऊ उठै काँपि कोऊ रहति करेजौ चाँपि
कोऊ झाँपि ठौरही ठगी सी मढ़ि जाति है।
कहै रतनाकर त्रिभंगी कौ सुधंग चाहि
गोपिनि कैं और ही उमंग बढ़ि जाति है ॥
रीझै काहि जोहि काहि चाहत रिझैबौ सोहिं
सो तौ बात त्यौरि सौं न न्यौरि पढ़ि जाति है।
जितै जितै चारु चितै भ्रकुटी विलासै कान्ह
तितै तितै काम की कमान चढ़ि जाति है ॥५
२४—४—

लै अधरानि की माधुरी मंजुल
ऊष महूप हूँ लाजति ही रहै।
भावनि के रतनाकर मैं
अलखो लहरैं उपराजति ही रहै॥
प्राननि मैं हिय मैं अँग अंग मैं
यौं धुनि पै धुनि छाजति ही रहै।
कानन मैं तो बजै न बजै
पर काननि बाँसुरी बाजति ही रहै॥५६॥
२९—४—३१

आली दिन द्वैक तैं न जानैं कहा कौतुक सौ
तन मन माहिं देखि दरसन लाग्यौ री।
बैठत उठत बतरात जल जात गात
कछु न जनात कहा अरसन लाग्यौ री॥
लखि रतनाकर की बंक भ्रकुटी कौ लोच
अकथ सकोच सोच परसन लाग्यौ री।
तरसन लाग्यौ जिय जानति न जानि कहा
औरै रंग ढंग अंग सरसन लाग्यौ री॥५७॥
२३—५—३१

गोकुल गाँव मैं फाग मच्यौ
हुरिहारनि के उर आनँद फूले।
मूठ चलावत स्याम चितै
रतनाकर नैन निमेष हूँ भूले॥

लाल गुलाल की धूँधरि मैं
ब्रज-बालनि के इमि आनन तूले ।
काम-कलाकर की मनौ मूठ सौं
पावकपुंज मैं पंकज फूले ॥५८॥

२४—५—३१

सेस दिनेस लै श्री अवधेस कौ
लाइ चिता चित सूल सौं हूले ।
जानकी जाइ निसंक चढ़ी
रतनाकर मानि दई अनुकूले ॥
आनन नैन प्रसन्न महा लखि
देव अदेव सबै सुधि भूले ।
गौरि गिरा मन माहिँ कह्यौ
मनौ पावक पुंज मैं पंकज फूले ॥५९॥

२४—५—३१

'फूले फूले फिरत कहौ तौ तुम कापै अहो
याकी तौ महत्ता सत्ता सब कछु जानी है ।
कहै रतनाकर विडंबना विचित्र जेती
जीवन के चित्र सौं न अधिक प्रमानी है ॥
हाँ सौं नहीं होति औ नहीं सौं होति हाँ है सदा
तातैं हाँ चहैयनि नहीं सौं रुचि मानी है ।
इहिँ भवसागर मैं स्वास आसही पै बस
पानी के बबूले सी थिरानी जिंदगानी है ॥६०॥

२४—५—३१

भारत निवासिनि कौ सहन-सुभाव देखि
बिस्व चकरान्यौ परि बिस्मय-भ्रमर मैं।
कहै रतनाकर बिलोकी बीरता तौ बहु
ऐसी पर धीरता न नर मैं अमर मैं॥
एक ओर कुंतल कृपान घमसान तोप
एक ओर टूटी हू कटारी ना कमर मैं।
भूले से भ्रमे से भकुवाने से बिलोकि रहे
हारि रहे हिंसक अहिंसा के समर मैं ॥६१॥
२४—५—३१

लागैं नैंकु नैननि अचैन चित-ऐन भरैं
अंग करैं सकल अनंग मतवारे हैं।
कहै रतनाकर बढ़त तन ताप होत
दरस-तृषा सौं प्रान परम दुखारे हैं॥
औषध उपाय ना बिहाइ बिष सोई और
तलफत हाय परे नंद के दुलारे हैं।
धारे सुरमे की सान-ओप अनियारे अति
लोचन तिहारे वलि विसिप बिसारे हैं॥६२॥
२५—५—३१

आए हैं कहाँ तैं कहाँ जाइबौ कहाँ है फेरि
काकी खोज माहिं फिरैं जित तित मारे हैं।
कहै रतनाकर कहा है काज तासौं पुनि
काज औ अकाज के बिभेद कत न्यारे हैं॥

भेद भावना कौ कहा कारन औ काज कछू,
कारन औ काज के कहाँ लगि पसारे हैं।
ये सब प्रपंच गुनैं ज्ञान-मत-वारे वैठि
हम तो तिहारे प्रेम-पान-मतवारे हैं ॥६३॥

२०—६—३१

वा सुखमा रतनाकर कौ चित
तैं नहिं कौतुक नैंकु भुरात है।
यौं लहरैं छवि की छहरैं
छुटि छींटनि औनि अकास पुरात है॥
ऐसौ भस्रौ कछु पानिप नैननि
जो तन तापनि हूँ न झुरात है।
गोवत गोवत हूँ न दुरात औ
रोवत रोवत हूँ न उरात है ॥६४॥

२०—७—३१

छोटे बड़े वृच्छनि की पाँति बहु भाँति कहूँ
सघन समूह कहूँ सुखद सुहाए हैं।
कहै रतनाकर वितान वन-वेलिनि के
जहाँ तहाँ विविध विधान छवि छाए हैं॥
वैठत उड़त मँडरात कल बोलत औ
डारनि पै डोलत विहंग बहु भाए हैं।
विचरत वाघ वृक पूरत अतंक कहूँ
कहूँ मृग ससक ससंक फिरैं धाए हैं॥६५॥

२८—७—३१

सिंह-पौर सज्जित सौं लज्जित करत काम
नैन अभिराम स्याम जमकत आवै है ।
कहै रतनाकर कृपा की मुसक्यानि मढ़्यौ
आनन अनूप चारु चमकत आवै है ॥
माते मद-गलित गयंद लौं सु मंद-मंद
चलि चलि ठाम ठाम ठमकत आवै है ।
दमकत दिव्य दीप दिपत अनूप-रूप
झाँझरौ मुकुट झूमि झमकत आवै है ॥६६॥
१—८—३१

देखत तुम्हैं ना तौ कहा हैं नैन देखत ये
सुनत तुम्हैं ना तौऽब स्रवन सुनैं कहा ।
कहै रतनाकर न पावै जौ तिहारी बास
नासा तौ प्रसूननि सौं ललकि लुनै कहा ॥
तेरे बिनु काकौ रस रसना लहति यह
परसन माहिं त्वक अपर चुनैं कहा ।
कोऊ धुनै ज्ञान की कहानी मनमानी बैठि
अलख लखैयनि कौं हम पै गुनैं कहा ॥६७॥
१—९—३१

देखैं नभ-मंडल तैं सहित अखंडल के
मंडल अखंड सब सुरनि अनी के हैं ।
कहै रतनाकर न पावैं पर कोऊ लखि
कौतुक अनोखे आज होत जो अलीके हैं ॥
पाइ निज तारौ नैन स्रवन चवाइनि के
खुलि गए द्वार कारागार के दरी के हैं ।
नींद सौंपि आपनी प्रगाढ़ पाहरू गन कौं
जागि उठे भाग वसुदेव देवकी के हैं ॥६८॥
५—९—३१

आवन लगी है दिन द्वैक तैं हमारैं धाम
रहै बिनु काम जाम जाम अरुझाई है।
कहै रतनाकर खिलौननि सम्हारि राखि
बार-बार जननी चितावत कन्हाई है॥
देखीं सुनी ग्वारिनि कितेक ब्रज वारिनि पै
राधा सी न और अभिहारिनि लखाई है।
हेरत हीं हेरत हर्यौ तौ है हमारौ कछू
काह धौं हिरानौ पै न परत जनाई है॥६९॥
१९—१०—३१

राका रजनी की सज नीकी गंग की यौं लसै
मानौ मुकता के भरे थार थलकत हैं।
कहै रतनाकर यौं कल धुनि आवै होति
मानौ कलहंसनि के गोत ललकत हैं॥
हिलि मिलि मंद लहरी के माल-जालनि पै
झिलिमिल चंद के अनंद झलकत हैं।
मानौ चारु चादरै बिसाल बादल के बने
पवन प्रसंग सौं सुढंग हलकत हैं॥७०॥
१५—१२—३१

गमकत मंजु कहूँ प्रफुलित कंज-गंज
गुंजरत जापै अलि-पुंज झमकत हैं।
कहै रतनाकर सिवारनि के झारनि मैं
करत झमेला कहूँ चेल्हा चमकत हैं॥

लोल लहरी की सुखमा पै हेम-मंडित कै
अरुन प्रकास के बिलास दमकत हैँ।
तट तटिनी के चख चंचल जहाँ ही जात
चंचलता त्यागि कै तहाँ हीँ ठमकत हैँ ॥७१॥
१५—१२—३१

सरद निसा की सरिता की सुखदाई छबि
हेरत हीँ हेरत हिये मैँ सरसाति है।
कहै रतनाकर अमंद चंद्रिका के परैँ
सारी जरतारी की छटारी छहराति है॥
मीन दृग चंद्र-बिंब आनन सिवार केस
कल कल नूपुर की सु धुनि सुहाति है।
सज्जित सिँगार अभिसारिका रसीली मनौ
जीवन-अधार कैँ अगार चली जाति है॥७२॥
१५—१२—३१

लाए घात बाघ कौँ बिलोकि हूँ टरै ना मृग
आऐँ पास मृग हूँ पै बाघ ना झरापै है।
कहै रतनाकर लगाए थन आनन मैँ
बछरा न चाँपै औ न गाय पय आपै है॥
पाय परयौ पन्नग हूँ रहत रिसैबौ रोकि
जब नँदनंद नैँकु बाँसुरी अलापै है।
भोगिनि की पाँसुरी सु साध छाप छापै नई
जोगिनि की साँखु री समाधि थिर थापै है॥७३॥
१७—१२—३१

पावस अमावस की रैनि मैं विलोकी जाइ
सुर-सरिता पै छबि छलकति छाजी है।
कहै रतनाकर चहूँघाँ अंधकार-रासि
अवनि अकास एकमेक रुचि साजी है॥
हिलिमिलि तामैं धौल धार की अनोखी छटा
कवि-मुख चोखी चारु उक्ति उपराजी है।
तम-गुन-तोम गिरि कज्जल के बीच मनौ
उज्जल सतोगुन रजत रेख राजी है॥७४॥
१७—१२—३१

एहो लंदनेस नंदनेस लौं विराजे रहौ
छाजे रहौ छाया सुभ नीति सुरवेली की।
ह्वैहै सांति फेर वाही भाँति भव्य भारत मैं
पाँति पछितैहै क्रांतिकारिनि झमेली की॥

....

....
पैहै एक बाल एकबाल कम होन नाहिँ
ढाल कम ना है एक मालकम हेली की॥७५॥

ललकतिँ लोनी लटैं ललित कपोलनि कौं
अधर अमोलनि बुलाक थलकति है।
कहै रतनाकर रुचिर ग्रीव-सीव पाइ
दुलरी दमकि दुलराइ दलकति है॥
अंग अंग आनँद तरंग की उमंग उठैं
आनन पै मंजु मुसुकानि छलकति है।
फलकति काँधैं चढ़ी चटक पिछौरी पीत
हुलसि हिये पै बनमाल हलकति है॥७६॥
२८—१—३२

तेरौ रोस रुचिर सदोस हू ह्वै हेरन कौं
लागी मन लालसा न नैंकु डगि जाति है।
कहै रतनाकर रुखाई माहिँ मान हूँ की
सहज सुभाव सरसाई खगि जाति है॥
फीकि चितवनि हूँ न नीकि भाँति जानी जाति
तामैं लोल लोचन लुनाई लगि जाति है।
कहति कछू जो कटु बानि हूँ अठान ठानि
आनि अधरा सो मधुराई पगि जाति है॥७७॥

५—२—३२

गंग-कछार कैं मंजुल बंजुल काक कोऊ महा मोद उफानै।
देखत प्राकृत सुंदरता पद प्राकृत ही के हियैं ठिक ठानै॥
पाई सुधा-सम वारि अघाइ न आपनी जोट कोऊ जग जानै।
हंस कौं हाँस मजूर मयूर कौं कोइला कोकिला कौं मन नानै॥७८॥

५—२—३२

राँच्यौ रति जाग नींद सौंपि कै हमारै भाग
सो तौ सोध आप ही झपकि ठहि देत हैं।
बाढ़ै उहिं प्यारी-मुख मंजुल सुधाकर सौं
रस-रतनाकर की थाह थहि देत हैं॥
पानिप के अमल अगार सुख सार तऊ
लाइ उर दुसह दवारि दहि देत हैं।
नैन बिन-बानी कहि कविनि बखानी बात
ये तौ पर सकल कहानी कहि देत हैं॥७९॥

२९—४—३२

दुख सुख रावरे हमारे ह्वै रहे हैं एक
सारे भेद-भाव के पसारैं दरे देत हैं।
कहै रतनाकर तिहारे कजरारे ओठ
कालकूट नैननि हमारैं धरे देत हैं॥
जावक के दाग रहे जागि रावरैं जो भाल
सो तो मम अंतर अँगारैं भरे देत हैं।
कठिन करारे कुच उर जो तिहारे अरे
हिय मैं हमारे सो दरारैं करे देत हैं॥८०॥
१—५—३२

फाटि जात बसन हिये मैं लागि काँट जात
कैसैं डाँट आपने बिराने की बरैहैं हम।
कहै रतनाकर त्यौं सखिनि सहेलिनि के
कूट-कालकूट-घूँट घातक अँचैहैं हम॥
अब लौं भई सो भई कब लौं दई कै गई
ननद जिठानी-सास-त्रास सिर सैहैं हम।
लैहैं बर बेली चारु चटक चमेली चुनि
सुमन गुलाब के न चुनन सिधैहैं हम॥८१॥
५—५—३२

कलित कलापी पन्नगेस मोती-मात मंजु
खंजरीट कीर के सरीर जात जाने हैं।
कहै रतनाकर बलाक कल कोकिल औ
पारावत चारु चक्रवाक रुचि साने हैं॥

कोमल पुरैनि-पात सुढर मलिंद-पाँति
केहरि करिंद हंस कबिनि बखाने हैं।
ढंग पसु पच्छिन के तेरैं अंग अंगनि ज्यौं
रंग मानहूँ मैं त्यौं अमानवी समाने हैं ॥८२॥
११—५—३२

सघन सुदेस केस-कलित कलाप हेरि
ललित अलाप कै कलापि बहकत हैं।
कहै रतनाकर तिहारी भ्रकुटी की सान
देखि देखि कुसुम-कमान अहकत हैं॥
अधर बिलोकि कीर लोलुप अधीर होत
बानी ढंग कान कै कुरंग गहकत हैं।
ठहकत भौंर भोर जात कुंज-कानन कौं
रैनि चाहि आनन चकोर चहकत हैं ॥८२॥
१३—५—३२

देखि तव आनन अपार सुखमा कौ भार
चित्त चतुरानन कैं अजगुत जाग्यौ है।
कहै रतनाकर सुधा के मंजु आकर सौं
तोलन कौं ताहि लोल अति अनुराग्यौ है॥
समता न पाइ पै उपाय करिबे कौं कछू
हमता लगाइ ममता सौं मोह पाग्यौ है।
तारनि की रासि सौं बढ़ायौ तासु गौरव पै
तौ हूँ पला चंद को अकास जाइ लाग्यौ है ॥८४॥
१४—५—३२

देखि तव आनन अनूप सुख रूप महा
जाकी सुखमा कौ जग होत गुन-गुंज है।
कहै रतनाकर सुधाकर बनावै विधि
ताकी समता कौं हमता कैं परि तुंज है॥
तेरौ दिव्य दुति सो न दीपति विलोकि ताकी
सकुचि सिहाइ होति मति गति लुंज है।
तोरि तोरि डारत विथोरि रिस भारनि सौं
होत दिसि चारनि सो तारनि को पुंज है॥८५॥
१६—५—३२

जारे देत किंसुक उजारे देत गंधवाह
दाप कै विचारे विरहीनि के निकर पै।
कहै रतनाकर प्रचारि बाट पारे देत
पिक मतवारे व्यथा-मारे की डगर पै॥
एहो ऋतुराज कैसौ राज है तिहारौ हाय
जामैं बली गाजि गाज गेरत निबर पै।
काम हूँ जनावै बल आनि अबलानि ही पै
करत न वार पै नकार गिरिधर पै॥८६॥
१७—५—३२

होत चल अचल अचल चल होत अहो
होत जल पाहन पखान जल-खाता है।
कहै रतनाकर अनंग अंग धारि नयौ
स्वर-सर साधन न जाकौं जग-त्राता है॥

रहतिँ न रूँधी व्रजवास चलैँ सूधीँ धाइ
त्याग्यौ पति पतिनी स्वपूत त्याग्यौ माता है।
संचि संचि मूर्छना प्रपंच खटराग पागि
कान्ह मुख लागि भई बाँसुरी बिधाता है ॥८७॥

१८—५—३२

फेरि मुख नैननि निवेरि कहा बैठी बीर
रावरौ कटाच्छ महा तीर बृथा छीजै ना।
कहै रतनाकर निहारि ये तिहारे ढंग
कान्हर कैँ और हूँ उमंग अंग भीजै ना ॥
प्रीति-रंग-भूमि-नीति-निपुन नवेलिनि कौ
सखिनि सहेलिनि कौ हास सिर लीजै ना।
आंकर करि कीजै निचवार नीठि हूँ ना दीठि
रार करि बैरी कौँ अनैरी पीठि दीजै ना ॥८८॥

२०—५—३२

लखि व्रजराज कौ लड़ैतौ उहिँ ग्वैँड़ अरी
पैँड़ पैँड़ एँड़ि पग धारत चलत है।
कहै रतनाकर बिछाई मग आँखिनि के
लाख अभिलाषनि उभारत चलत है ॥
सुमन सुवास लाइ रुचिर बनाइ रच्यौ
कंदुक अनंद सौँ उछारत चलत है।
करि करि मानौ हाथ मन दिखवैयनि के
परखत पारत सँभारत चलत है ॥८९॥

२१—५—३२

सँग मैं तरैयनि के राका रजनीस चारु
चौहरे अटा पै छटा वलित विराज्यौ है।
कहै रतनाकर निहारि सो नवेली निज
आनन सौं करन-मिलान-ब्यौंत साज्यौ है॥
संग लै सयानि सखियानि नियरान चली
पग-पग नूपुर निनाद मग वाज्यौ है।
ज्यौं-ज्यौं मंद-मंद चढ़ी आवति गरूर वढ़ी
त्यौं-त्यौं मद-चूर चंद दूरि जात भाज्यौ है॥९०॥

३—६—३२

सकत न नैकुँहूँ सँताप सहि मित्रनि के
होत आप द्रवित गिरीस सुखकारी हैं।
कहै रतनाकर सु थँभत न थाँभौ फेरि
चलत धधाइ भए औढर ढरारी हैं॥
कृपा-छमा-दान-बरदान-सनमान रूप
थाह-हीन प्रचुर प्रवाह होत भारी हैं।
एक गंग-धारी तुम्हैं कहत सबै हैं पर
आप तौ पुरारी किये पंच गंग जारी हैं॥९१॥

६—६—३२

देखि मुगलदल मैं विवस प्रताप पर्‌यौ
आड़े कैलवाड़े कौ सु झाला झूमि आयौ है।
कहै रतनाकर स्वदेस अनुरक्ति आनि
स्वामि-भक्ति ठानि प्रान पानि धरि धायौ है॥

चीरि भीर काढ़्यौ ताहि तुरत अलच्छित कै
लच्छ परपच्छिनि कौ आप कौं बनायौ है।
दीन्ही भुजा साथ मेदपाट की धुजा लै हाथ
हेम-छत्र लै कै छेम-छत्र सिर छायौ है ॥९२॥
९—६—३२

रानी पृथिराज की निहारति सिँगार-हाट
पारति सु दीठि गथ विविध बिसाती पै।
कहै रतनाकर फिरी त्यौँ फँसी फंद बीच
लपक्यौ नगीच नीच धरम अराती पै॥
परसत पानि अनवान राजपूती आनि
औचक अचूक घात कीन्ही घूमि घाती पै।
झटकि झटाक कर पटकि धरा पै धरी
काती-नोक गब्बर अकब्बर की छाती पै ॥९३॥
१६—६—३२

(१८) दोहावली

भौं चितवनि डोरे बरुनि असि कटार फँद तीर।
कटत फटत बाँधत बिँधत जिय हिय मन तन बीर ॥ १ ॥
कापै तेरे दृगनि की कही बड़ाई जाइ।
त्रिभुवन जाके मुख बसै सो जिहिँ रह्यौ समाइ ॥ २ ॥
किये लाल जब तैँ ललकि बाल-नैन निज ऐन।
बरुनी ओट उसीर की तब तैँ सींचत मैन ॥ ३ ॥

छाके नेह निरास की तब लौं प्यास न जाइ।
जब लौं हियौ अघाइ नहिँ दृग-सर-पानिप पाइ ॥ ४ ॥

चित चितवनि कौं दीन्यौ बिन तकरार।
सहत्यौ कौन तगादौ बारंबार ॥ ५ ॥

ऋनी धनी सौं है परत यौं परिहरत उदोत।
देखत दिनकर दरस ज्यौं चंद मंद-मुख होत ॥ ६ ॥

चंद-मुखिनि के बृंद-बिच निरतत श्री ब्रजचंद।
एते चंद बिलोकि भो चंद चकित-चित मंद ॥ ७ ॥

नभ जल थल नैना करत निसि दिन रहैं अहेर।
खंज मीन मृग कहन के बाज ग्राह अरु सेर ॥ ८ ॥

सौति-फंद ब्रजचंद लखि चंद-गहन मन मानि।
देन चहति जिय-दान तिय तुरत न्हाइ अँसुवानि ॥ ९ ॥

आस-पास मैं परि रह्यौ प्रान-पखेरू पाइ।
हाय करत पंजर गरत परत न तऊ उड़ाइ ॥१०॥

नव नीरद-दामिनि-दुति जुगल-किसोर।
पेखि मुदित मन नाचन जीवन मोर ॥११॥

ब्रज-जीवन-जीवन सो जीवन मोर।
ब्रज जीवन जीवन सो जीवन मोर ॥१२॥

पिय पयान की बतियाँ सुनि सखि भोर।
आँस नहीं दृग आवत जीवन मोर ॥१३॥

जतन परोसी-चैन कौं करिबौ अति सुख देत।
सुनत कहानी कान ज्यौं नैन-नींद के हेत ॥१४॥

ऊँचौ नीचौ ह्वै रहत अगनित लहत उदोत।
जात सिंधुतल सुक्ति परि मुक्ति स्वाति-जल होत ॥१५॥

संतत पिय प्यारे बसत मो हिय दर्पन माहिँ।
धँसत जात त्यौँ त्यौँ सखी ज्यौँ ह्यौँ ज्यौँ बिलगाहिँ ॥१६॥

होत सीस नीचौ निपट नीच-कुसंगति पाइ।
परत वारि-बिच जाइ ज्यौँ काम छाइ दरसाइ ॥१७॥

सुबरन-कनक प्रभाव तेँ सुमन-कनक कौ बीस।
वह महीस कैँ सीस यह चढ़त ईस कैँ सीस ॥१८॥

दारिद-बाय प्रभाय सौँ पीड़ित जाकी देह।
ताके क्लेस निसेस कौँ चहत धनेस-सनेह ॥१९॥

दारिद-दुख सौँ जासु हिय होय दीन छत छीन।
साधक ताकी व्याधि कौ कहत मृगांक प्रवीन ॥२०॥

मो-से तारौ तौ बदौँ तारैँ कहा पषान।
बानर हूँ के परस सौँ होति सिला जलजान ॥२१॥

बरुनी के नीके बने द्वै पिँजरे कलदार।
फाँसत खंजन-नैन औ फँसत नैन रिझवार ॥२२॥

समाप्त